Class: B.A. 2 year

Subject: Music (Vocal/Instrumental)

Course Code: MUSA205PR & MUSA206PR

Course Type: Skill Enhancement Course-I and II

Course Name: Presentation and Documentation-I and II

MUSIC

(Presentation and Documentation-I and II)

Lesson : 1 - 12

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई - 1	सितार वाद्य का इतिहास तथा परिचय	1
5	इकाई - 2	सितार वाद्य की वादन विधि तथा बैठक	14
6	इकाई - 3	सितार वाद्य में हस्त संचालन व स्वरोत्पत्ति	25
7	इकाई - 4	तानपुरा का परिचय तथा वादन तकनीक	40
8	इकाई - 5	तालें: तीन ताल तथा दादरा ताल	56
9	इकाई - 6	हिमाचल प्रदेश के मेले: कुल्लू दशहरा, लवी मेला, मिंजर मेला	69
10	इकाई - 7	हिमाचल प्रदेश के मेले मंडी की शिवरात्रि, रेणुका मेला	83
11	इकाई - 8	लोक गीत तथा लोक धुन 'शिव कैलाशों के वासी'	97
12	इकाई - 9	लोक गीत-लोक धुन 'शिवा मेरे महादेवा' व 'काहे रा बो'	108
13	इकाई - 10	लोक गीत-लोक धुन 'धुडु नचया' व 'आ सामियाँ'	123
14	इकाई - 11	लोक गीत-लोक धुन 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ'	137
15	इकाई - 12	लोक गीत-लोक धुन 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए'	154
16		महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार	174

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA205PR तथा MUSA206PR में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में सितार वाद्य का इतिहास तथा परिचय का वर्णन किया गया है।
इकाई 2 में सितार वाद्य की वादन विधि तथा बैठक का वर्णन किया गया है।
इकाई 3 में सितार वाद्य में हस्त संचालन व स्वरोत्पत्ति का वर्णन किया गया है।
इकाई 4 में तानपुरा का परिचय तथा वादन तकनीक का वर्णन किया गया है।
इकाई 5 में तबला वाद्य में तीन ताल तथा दादरा ताल का वर्णन किया गया है ।
इकाई 6 में हिमाचल प्रदेश के मेले: कुल्लू दशहरा, लवी मेला, मिंजर मेला का वर्णन किया गया है ।
इकाई 7 में हिमाचल प्रदेश के मेले मंडी की शिवरात्रि, रेणुका मेला का वर्णन किया गया है।
इकाई 8 में लोक गीत-लोक धुन के संदर्भ में 'शिव कैलाशों के वासी'का वर्णन किया गया है।
इकाई 9 में लोक गीत-लोक धुन के संदर्भ में 'शिवा मेरे महादेवा' व 'काहे रा बो'का वर्णन किया गया है।
इकाई 10 में लोक गीत-लोक धुन के संदर्भ में 'धुडु नचया' व 'आ सामियाँ'का वर्णन किया गया है।
इकाई 11 में लोक गीत-लोक धुन के संदर्भ में 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' का वर्णन किया गया है।
इकाई 12 में लोक गीत-लोक धुन के संदर्भ में 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए' का वर्णन किया गया है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

COURSE CODE MUSA205PR
SEC-I
B.A.2nd Year, SKILL ENHANCEMENT COURSE-I
HINDUSTANI MUSIC(VOCAL/INSTRUMENTAL)

Title-Presentation and Documentation-I

Credits-4

1. Understanding various parts of Tanpura/Sitar and the technique of tuning it.'

2.Field visit to Doordarshan/All India Radio/National Archives/SangeetNatak Academy/State & District fairs or other such institution relevant to the study and documentation of Music material and thereafter submission of report based on this visit.

3.Presentation of Vocal and Instrumental Music in group such as folk or tribal Music, Light Music, Classical ragas based on film songs.

COURSE CODE MUSA206PR
SEC-II
B.A.2nd Year, SKILL ENHANCEMENT COURSE-II
HINDUSTANI MUSIC(VOCAL/INSTRUMENTAL)

Title-Presentation and Documentation-II

Credits-4

1. Ability to play thekas of following Talas on Tabla -Teental, Kaherwa.

2. Knowledge of operating sound system.

3. Attending classical concerts/Music festivals and making the report/Review of the same.

इकाई-1
सितार वाद्य का इतिहास तथा परिचय

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य तथा परिणाम
1.3	सितार का परिचय, इतिहास तथा अंग
1.3.1	सितार का इतिहास
1.3.2	सितार के अंग
1.3.3	सितार के तार
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	सारांश
1.5	शब्दावली
1.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7	संदर्भ
1.8	अनुशंसित पठन
1.9	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत वादन में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में भारतीय शास्त्रीय संगीत के सबसे प्रमुख और लोकप्रिय वाद्य सितार के विषय में जानकारी प्रदान की गई है। इसमें सितार वाद्य का इतिहास, उसका विकास तथा उसके विभिन्न अंगों का वर्णन किया गया है। आधुनिक युग का सर्वाधिक प्रसिद्ध तत् वाद्य, सितार, मध्य युग से विकसित होता हुआ अपने वर्तमान स्वरूप तक पहुँचा है। सितार की उत्पत्ति के संबंध में अब तक अनेक भ्रांन्तियां संगीतज्ञों तथा संगीत प्रेमियों में विद्यमान हैं। सितार के वर्तमान स्वरूप का विकास 13 वीं या 14वीं शताब्दी से ही आरम्भ होता है।13 वीं शताब्दी तक भारत में एकतंत्री तथा किन्नरी वीणा का सर्वाधिक प्रचार था। किन्नरी वीणा का रूद्र वीणा के रूप में विकास 13वीं शताब्दी में हो गया था। सितार वाद्य भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रमुख वाद्य है जिस पर शास्त्रीय संगीत के रागों के अतिरिक्त उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, फिल्म संगीत इत्यादि पर आधारित बंदिशों, गीतों धुनों दोनों आदि को बजाया जाता है तथा विभिन्न गायन शैलियों के साथ इसका वादन भी किया जाता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी सितार वाद्य के विषय में जान सकेगें।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को सितार वाद्य की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को सितार वाद्य के इतिहास की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में सितार वाद्य के विभिन्न अंगों की क्रियात्मक जानकारी प्रदान करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी को सितार वाद्य के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी को सितार वाद्य के इतिहास के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी में सितार वाद्य के विभिन्न अंगों के क्रियात्मक प्रयोग के विषय में जान पाएगा।

1.3 सितार का परिचय, इतिहास तथा अंग

1.3.1 सितार का इतिहास

आधुनिक युग का सर्वाधिक प्रसिद्ध तत् वाद्य, सितार, मध्य युग से विकसित होता हुआ अपने वर्तमान स्वरूप तक पहुँचा है। सितार की उत्पत्ति के संबंध में अब तक अनेक भ्रांन्तियां संगीतज्ञों तथा संगीत प्रेमियों में विद्यमान हैं। अधिकतर विद्वानों के विचार से सितार ईरानी या पर्शियन वाद्य है जो मुसलमानों के आगमन के साथ भारत में आया था। कुछ विद्वान अमीर खुसरों को सितार का आविष्कर्ता मानते हैं। यह एक आश्चर्य का विषय है कि अमीर खुसरों ने आधुनिक युग के सर्वाधिक प्रचलित तत् वाद्य (सितार), अवनद्ध वाद्य (तबला) तथा गायन शैली (ख़्याल), इन तीनों का आविष्कार किया, परन्तु अब तक हुई खोजों में यह पता नहीं चलता है कि अमीर खुसरों ने इन तीनों का आविष्कार किया हो।

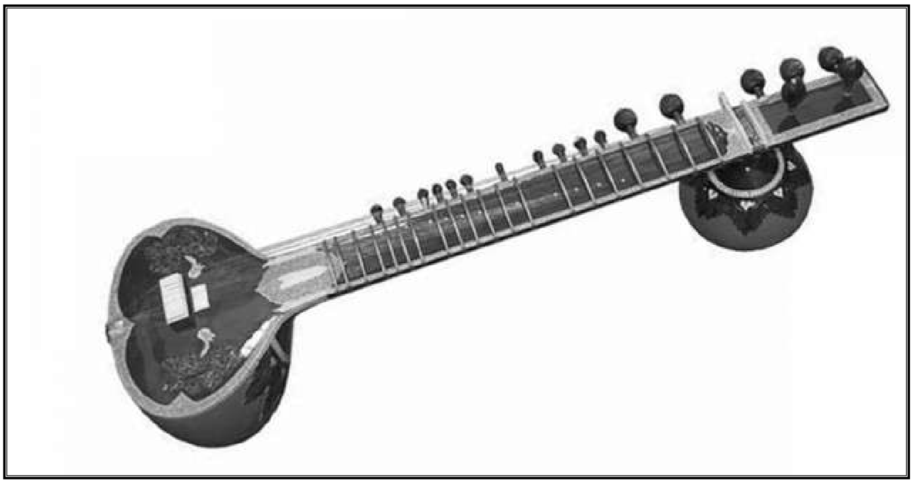

अकबर के दरबार के विद्वान अबुलफ़जल ने 'आयने-अकबरी' नामक पुस्तक में अमीर खुसरों को 'कोल' तथा 'कलवाना' का आविष्कर्ता तो माना है पर कहीं पर भी सितार, तबला या ख़्याल के संबंध में कुछ नहीं कहा है। उस काल के अन्य ग्रन्थों में भी ऐसा कहीं नहीं लिखा है कि अमीर खुसरो सितार के आविष्कर्ता थे। अमीर खुसरों का नाम सितार से जोड़ने का एक कारण यह हो सकता है कि फारसी में 'सेह' का अर्थ है तीन तथा 'सेह-तार' का अर्थ हुआ

तीन तार वाला। अमीर खुसरो ने वीणा के चार तारों में से एक तार निकाल दिया तथा इसी आधार पर इसे 'सेह-तार' कहा, जो आगे चलकर सितार कहा जाने लगा। इसके बाद अन्य विद्वानों ने इसमें परिवर्तन किया।

सितार को ईरानी वाद्य नहीं कहा जा सकता है, इसका मुख्य कारण यह है कि भारतीय वाद्यों की अपनी कई विशेषताएं हैं जो अन्य कहीं देखी नहीं जाती हैं, इनमें से मुख्य तीन विशेषताएं निम्न हैं -

- पहली विशेषता है घुड़च का चपटा होना। चपटे घुड़च का प्रयोग भारत में प्राचीन समय से ही रहा है। यही घुड़च वीणा में प्रयुक्त होती थी।
- दूसरी विशेषता परदों की है। भारतीय वीणाओं में परदे लगाने की जिस प्रकार व्यवस्था होती है, वैसी अन्य देशों में नहीं पाई जाती है।
- तीसरी विशेषता है चिकारी के तारों की जो वादन के समय केवल छेड़े जाते हैं तथा जिनसे षड्ज की ध्वनि सदैव ध्वनित होती रहती है, चिकारी का प्रयोग किन्नरी वीणा के समय में ही होने लगा था (12-13 शताब्दी)

यदि सितार का निर्माण अमीर खुसरो ने नहीं किया और न ही यह ईरान से आया तो इसका आधुनिक स्वरूप कैसे बना? पं. ओंकार नाथ ठाकुर के अनुसार वीणा को ही सप्ततार, सत्तार, सतार तथा फिर धीरे-धीरे सितार कहा जाने लगा। कुछ विद्वान सितार की उत्पत्ति त्रितंत्री वीणा से मानते हैं। श्री उमेश जोशी के अनुसार सितार की उत्पत्ति समुद्रगुप्त के काल में हो गई थी। अन्य विद्वानों ने भी अलग-अलग विचार दिये हैं।

संगीत शास्त्रों के अध्ययन से यह पता चलता है कि भारत में सर्वप्रथम किन्नरी वीणा में परदों का प्रयोग हुआ था। भरत के समय में वीणा में परदे नहीं होते थे। किन्नरी वीणा के रचयिता मंतग थे जिनका समय छटी से आठवीं शताब्दी माना जाता है। अतः सितार जो कि परदों वाला वाद्य है उसे छटी शताब्दी से पूर्व का मानना ठीक नहीं है।

सितार के वर्तमान स्वरूप का विकास 13 वीं या 14वीं शताब्दी से ही आरम्भ होता है।13 वीं शताब्दी तक भारत में एकतंत्री तथा किन्नरी वीणा का सर्वाधिक प्रचार था। किन्नरी वीणा का रूद्र वीणा के रूप में विकास 13वीं शताब्दी में

हो गया था। इसे बाद में 'तन्त्र' भी कहा जाने लगा। इसमें 5 तंत्रियां तथा 16 परदे थे। त्रितंत्री का विकास दो रूपों में हुआ था - एक रूप तम्बूरा तथा दूसरा रूप सितार।

कृष्ण भक्त कवियों की रचनाओं आइने अकबरी संगीत पारिजात' आदि ग्रंथों में त्रितंत्री वीणा का जो वर्णन है उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सितार तथा तम्बूरा त्रितंत्री वीणा के ही दो विकसित रूप हैं।

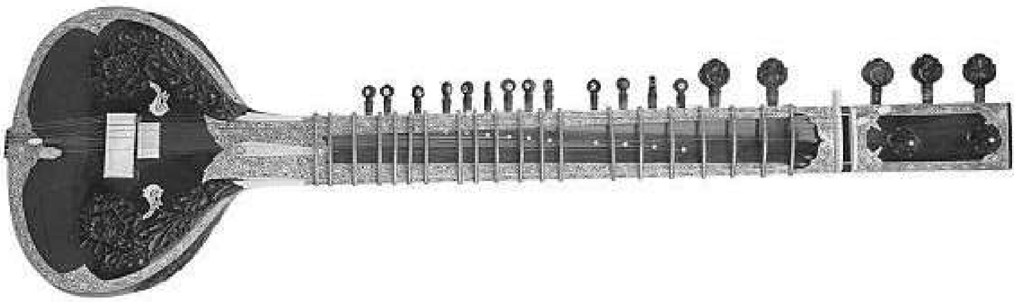

सितार के आकार तथा वादन के विकास में उस्ताद इमदाद खां ने योगदान दिया। उन्होंने ही सर्वप्रथम सितार में तरबें लगाई। इसके साथ-साथ मींड, घसीट, झाला का समावेश करके इसे अधिक सुंदर बनाया। इसमें गायकी अंग का समावेश, भी उ. इमदाद खां ने ही किया।

वर्तमान समय में पं. रविशंकर जी ने सितार में अतिमंद्र सप्तक का एक तार ओर लगा दिया तथा कृंतन-अंग भी समाविष्ट किया। इस प्रकार कई संगीतज्ञों ने धीरे-धीरे सितार में कई परिवर्तन किये तथा आधुनिक सितार हमारे सामने आया।

1.3.2 सितार के अंग

तुम्बा

यह सितार का गोलाकार भाग है। इसे कददू से बनाया जाता है। इसकी सहायता से ही सितार में आवाज की वृद्धि तथा गूंज उत्पन्न होती है।

घुड़च

यह लकड़ी या हड्डी की एक चैकी होती है। इसके ऊपर से मुख्य सातों तार गुजरते हैं। इसे ब्रिज भी कहा जाता है।

तबली

तुम्बे के ऊपर लकड़ी का एक पतला टक्कन रखा जाता है जिसकी सहायता से तुम्बे का खाली भाग ढका जाता है। इसे तबली कहते हैं। तबली के ऊपर घुड़च रखी जाती है।

कील

तुम्बे के एक ओर पीतल या हड्डी की एक तिकोनी पट्टी लगी रहती है। इस पर तार फँसाने के लिए जगह बनी रहती है, इसे लंगोट भी कहा जाता है।

डाँड

यह लकड़ी का एक खोखला तथा लम्बा भाग होता है। इसे तुम्बे के साथ जोड़ा जाता है। डाँड के ऊपर ही परदे बंधे रहते हैं तथा खूंटियों के लिए जगह बनी रहती है।

गुल

सितार के जिस भाग में डाँड तुम्बे से जोड़ी जाती है उस भाग को गुल कहा जाता है। यह लकड़ी का एक घुमावदार टुकड़ा होता है। इसी टुकड़े के एक तरफ डाँड जुड़ती है तथा दूसरी तरफ तुम्बा जोड़ा जाता है।

परदा

यह पीतल के बने हुए गोल सलाई के आकार के टुकड़े होते हैं। इन्हें दंड के ऊपरी भाग में बांधा जाता है। इन्हीं के ऊपर से तारें गुजरती हैं। तार को परदों के पास दबाने से स्वरों की प्राप्ति की जाती है।

खूंटिया

यह लकड़ी की बनी हुई होती है। इसमें सितार के तारों को फंसाया जाता है इन्हीं को कसने या ढीला करने से तार कसती तथा ढीली होती है।

दाढ़

चिकारी के तारों को अन्य तारों की ऊँचाई तक लाने के लिए छोटी सी कील डांड पर लगी रहती है इसे दाड़ कहा जाता है।

अटी तथा तार गहन

सितार के ऊपरी भाग में खूंटियों के पास हड्डी की दो पट्टियाँ लगी रहती हैं। पहली पट्टी के ऊपर तार रखे जाते हैं इसे अटी कहते हैं। दूसरी पट्टी में छिद्र होते हैं जिसमें से तार गुजरते हैं। इस पट्टी को तार गहन कहा जाता है।

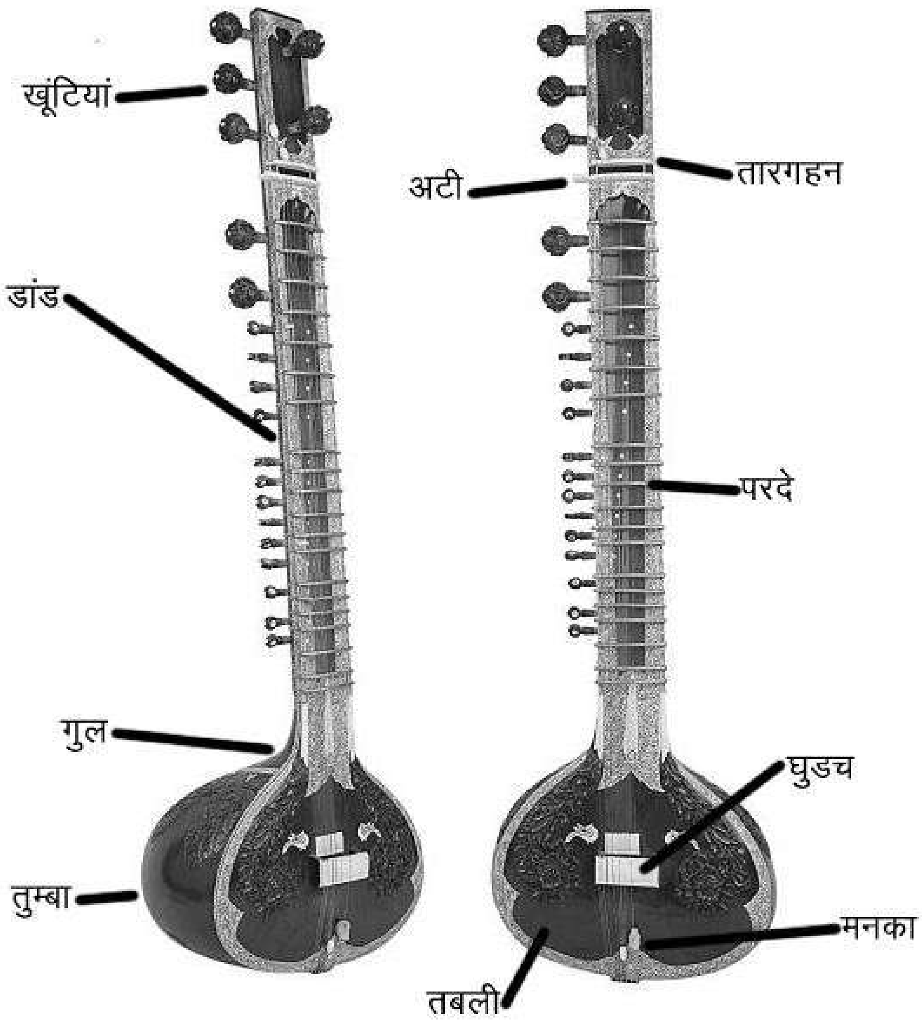

मनका

तार को खूंटियों की सहायता से कसा या ढीला किया जाता है परन्तु सूक्ष्म अंतर को तारों में लगाए गए मोती या मनका की सहायता से ठीक करते हैं।

तरब

मुख्य सात तारों के अतिरिक्त सितार में 11 से लेकर 13 तक तारें होती है। यह तारें पर्दे तथा दंड के मध्य रहती हैं। इनके लिए अलग से छोटी-छोटी खूंटियाँ दंड से जोड़ी जाती है। तरब की तारों को राग में लगने वाले स्वरों पर मिलाते हैं। परदे पर बजने वाले स्वरों के साथ यह अपने आप बजती हैं।

मिजराब

यह लोहे या स्टील की तार का बना हुआ एक तिकोना होता है। इसे दाएं हाथ की तर्जनी में पहना जाता है। इसी की सहायता से तारों पर प्रहार करते हैं।

1.3.3 सितार के तार

सितार में सात मुख्य तार रहते हैं।

1. पहला तार स्टील का बना होता है। यह 2 या 3 नम्बर का रहता है। इसे मंद्र सप्तक के मध्यम में ही मिलाया जाता है। पहले तार को 'बाज' का तार कहते हैं।

2. यह पीतल या ताँबे का 28 नम्बर का तार होता है। इसे मंद्र सप्तक के षड्ज में मिलाया जाता है। इसे जोड़ी का तार कहते हैं।

3. तीसरा तार दो तरह का होता है। कुछ सितारों में यह जोड़ी के तार जैसा ही रहता है तथा कुछ सितारों में यह पीतल का 26 नम्बर का मोटा तार रहता है। पीतल का तार होने पर इसे अतिमंद्र सप्तक के पंचम या मध्यम पर मिलाते हैं।

4. जिन सितारों में तीसरा तार जोड़ी का ही होता है उन सितारों में यह तार अतिमंद्र सप्तक के पंचम के मिलाया जाता है। परन्तु जिन सितारों में तीसरा तार, अतिमंद्र पंचम का होता है, उनमें यह तार पीतल का बना हुआ 22 नम्बर का होता है जिसे अतिमंद्र सप्तक के षड्ज में मिलाते हैं।

5. यह तार 2 या 3 नम्बर का लोहे का बना होता है। इस तार को मंद्र सप्तक के पंचम में मिलाते हैं।

6. छटा तार स्टील का एक नम्बर का होता है इसे मध्य सप्तक के षड्ज में मिलाते हैं।

7. इस तार को चिकारी का तार भी कहा जाता है। यह स्टील का जीरो ‘0’ या डबल जीरो ‘00’ नम्बर का होता है। इसे तार सप्तक के षड्ज में मिलाया जाता है।

8. तरबों के तार ‘0’ या ‘00’ नम्बरों के होते हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

1.1 सितार में अतिमंद्र सप्तक का तार किसने लगाया।

क) उ. अमजद अली खां

ख) उ. विलायल खां

ग) पं. निखिल बैनर्जी

घ) पं. रविशंकर

1.2 सितार में कृंतन-अंग किसने समाविष्ट किया।

क) उ. विलायल खां

ख) उ. अमजद अली खां

ग) पं. रविशंकर

घ) पं. निखिल बैनर्जी

1.3 सर्वप्रथम सितार में तरबें किसने लगाई थीं।

क) उ. इनायत खां

ख) उ. इमदाद खां

ग) पं. रविशंकर

घ) पं. निखिल बैनर्जी

1.4 सितार में तुम्बा किसका बना होता है।

क) कदद्

ख) पीतल

ग) लोहा

घ) लकड़ी

1.5 सितार में तुम्बे के ऊपर लकड़ी का एक पतला टक्कन रखा जाता है उसे क्या कहते हैं।

क) ड़ांड

ख) कील

ग) तुम्बा

घ) तबली

1.6 सितार के जिस भाग में डाँड, तुम्बे से जोड़ी जाती है उस भाग को क्या कहा जाता है।

क) ड़ांड

ख) कील

ग) गुल

घ) तबली

1.7 सितार में परदे किस धातु के बने होते हैं।

क) तांबा

ख) पीतल

ग) लोहा

घ) लकड़ी

1.8 सितार में चिकारी के तारों को अन्य तारों की ऊँचाई तक लाने के लिए छोटी सी कील डांड पर लगी रहती है इसे क्या कहते हैं।

क) दाढ़

ख) कील

ग) तरब

घ) तबली

1.9 सितार में तरब की तारें कितनी होती हैं।

क) 9

ख) 6-7

ग) 18-25

घ) 11-13

1.10 सितार में बाज का तार कितने नं. का होता है।

क) 28

ख) 6

ग) 3

घ) 0 या 00

1.4 सारांश

सितार वाद्य भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रमुख वाद्य है। इस वाद्य को कई लोग अमीर खुसरो द्वारा बनाया जाने वाला वाद्य मानते हैं जबकि यह सही नहीं है। इस का विकास भारतीय वाद्यों में धीरे-धीरे परिवर्तन के साथ हुआ है। इसमें मुख्य सात तारे होती हैं तथा 11 से 13 तरब की तारें होती हैं। इस वाद्य को मिजराब की सहायता से बजाया जाता है। इस वाद्य को बनाने वाले कलाकार बहुत ही कुशल कारीगर होते हैं जो कद्दू के बाहरी आवरण तथा लकड़ी इत्यादि के माध्यम से इस वाद्य को बनाते हैं।

1.5 शब्दावली

- तुम्बा: यह सितार का गोलाकार भाग है। इसे कदद् से बनाया जाता है। इसकी सहायता से ही सितार में आवाज की वृद्धि तथा गूंज उत्पन्न होती है।
- मनका: तार को खूंटियों की सहायता से कसा या ढीला किया जाता है परन्तु सूक्ष्म अंतर को तारों में लगाए गए मोती या मनका की सहायता से ठीक करते हैं।
- दाढ़: चिकारी के तारों को अन्य तारों की ऊँचाई तक लाने के लिए छोटी सी कील डांड पर लगी रहती है इसे दाड़ कहा जाता है।
- मिजराब: यह लोहे या स्टील की तार का बना हुआ एक तिकोना होता है। इसे दाएं हाथ की तर्जनी में पहना जाता है। इसी की सहायता से तारों पर प्रहार करते हैं।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 उत्तर: घ)

1.2 उत्तर: ग)

1.3 उत्तर: ख)

1.4 उत्तर: क)

1.5 उत्तर: घ)

1.6 उत्तर: ग)

1.7 उत्तर: ख)

1.8 उत्तर: क)

1.9 उत्तर: घ)

1.10 उत्तर: ग)

1.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

https://blog.podiumpro.in/music/sitar-instrument/

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

1.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. सितार वाद्य के अंगों का वर्णन करें

प्रश्न 2. सितार वाद्य में प्रयोग होने वाली तारों के विषय में बताएं।

प्रश्न 3. सितार वाद्य का इतिहास बताएं।

इकाई-2
सितार वाद्य की वादन विधि तथा बैठक

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य तथा परिणाम
2.3	सितार वाद्य की वादन विधि की तकनीक
2.3.1	सितार की बैठक
2.3.2	सितार धारण के लिए ध्यान योग्य बातें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	सारांश
2.5	शब्दावली
2.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7	संदर्भ
2.8	अनुशंसित पठन
2.9	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत वादन में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में भारतीय शास्त्रीय संगीत के सबसे प्रमुख और लोकप्रिय वाद्य सितार के विषय में जानकारी प्रदान की गई है। सितार वाद्य को बजाते समय कलाकार एक विशेष मुद्रा में बैठता है, जो सितार की बैठक या धारण विधि कहलाती है। इसमें सितार वाद्य को किस प्रकार धारण करना चाहिए तथा किस प्रकार धारण किया जाता है के विषय में जानकारी दी गई है। इसमें पुरुषों तथा महिलाओं के द्वारा प्राचीन तथा आधुनिक समय समय में किस प्रकार बैठा जाता है, इस विषय में बताया गया है। साथ पैर पर सितार को किस प्रकार रखना है, हाथों को किस प्रकार से सितार पर रखना है, इन सभी विषयों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है। मानव शरीर के अंगों का विकास, मानव प्रकृति, कार्यशैली व दिनचर्या के आधार पर निर्भर करता है। बाजू, हाथ, उंगलियों का लचीलापन सितार वादन में अपना विशेष महत्व रखता है अतः हाथ के लचीलेपन में बाधक कार्य प्रणाली की यथा सम्भव उपेक्षा हितकर हो सकती है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी सितर वाद्य को सही ढंग से पकड़ने के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को सितार वाद्य की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को सितार वाद्य की उचित बैठक की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में सितार वाद्य के धारण हेतु ध्यानयोग्य तथ्यों की क्रियात्मक जानकारी प्रदान करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी को सितार वाद्य के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी को सितार वाद्य की उचित बैठक के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी में सितार वाद्य के धारण हेतु ध्यानयोग्य तथ्यों के विषय में जान पाएगा।

2.3 सितार वाद्य की वादन विधि की तकनीक

2.3.1 सितार की बैठक

सितार वाद्य को बजाते समय कलाकार एक विशेष मुद्रा में बैठता है, जो सितार की बैठक या धारण विधि कहलाती है। सुरबहार एवं बीन के समकालीन होने के कारण सितार वाद्य की बैठक पर इन वाद्यों की बैठक का प्रभाव पड़ा। समय-समय पर सितार वाद्य की वादन तकनीक को ध्यान में रखते हुए कलाकारों ने इसकी बैठक में परिवर्तन किया है। सितार वाद्य को धारण करने की कई विधियाँ हैं।

सबसे प्राचीन विधि 'हनुमान बैठक' के नाम से जानी जाती है जिसमें, दाहिना घुटना मोड़कर पंजे को जमीन से लगाते हैं एवं बायां घुटना मोड़कर पंजा पीछे की ओर ले जाते हैं। इसमें दायां घुटना छाती के पास तथा बायां घुटना जमीन से लगा हुआ होता है। सितार के तुम्बे को दाहिने घुटने से दबाते हैं। इस प्रकार वादन पुरानी पीढ़ी के लोग करते थे। उस्ताद आशिक अली खां इसी प्रकार बैठकर बजाते थे। प्राचीन काल में सितार का तुम्बा चपटा होता था इसलिए इस प्रकार की बैठक में सितार सरकती नहीं थी। सितार के तूम्बे को तीन प्रकार से सहारा मिलता था जिसमें दायां बाजू, फर्श तथा दांयी टांग का सहारा होता था।

सितार वादन (प्राचीन तरीका)

सुरबहार की बैठक के अनुसार भी सितार की बैठक होती थी। इस प्रकार की बैठक में दायीं टांग को बांयी टांग की तरफ मोड़कर, दांए पैर पर बैठा जाता था तथा सितार का तुम्बा जमीन पर होता था और दायीं बाजू के द्वारा तुम्बे को ऊपर दबाया जाता था तथा बांयी टांग से सितार के डाण्ड को सहारा दिया जाता था। अब तब सितार का तुम्बा गोल आकृति का हो गया था। इस आकृति के वाद्य के बैठक में तुम्बा सरकने की सम्भावना बनी रहती थी। तार सत्पक में बढ़त करने में कठिनाई होती थी क्योंकि बांए हाथ को संचालित करने पर अड़चन आ जाती थी। बाएं पैर का पंजा जमीन पर रखकर घुटना छाती के पास लाते हैं और इस घुटने पर सितार की डांड रखते हैं। दाहिने पैर का घुटना जमीन पर होता है तथा पंजा बाएं पैर के नीचे वाले रिक्त स्थान पर रहता है। उ0 इमदाद खां, उ0 इनाइत खां इसी प्रकार सितार और सुरबहार को धारण करते थे।

सितार धारण की एक अन्य विधि की बैठक में कलाकार दोनों टांगों को पीछे की तरफ उल्टा करके दोनों पंजों के ऊपर बैठता था। सितार का तुम्बा दाईं तरफ जमीन में ही होता था तथा कमर से लगाया जाता था और तूम्बे के ऊपर भाग को दांयी बाजू के द्वारा सहारा दिया जाता था। इस प्रकार की बैठक की एक परेशानी थी कि इस बैठक में शीघ्र ही दोनों टांगे थक जाती थीं तथा साथ ही तूम्बे के ऊपर झुकाव देना पड़ता था क्योंकि इस बैठक में तुम्बा, सितार, वादन के समय सरक जाता था।

सितार के रूप परिवर्तन तथा प्रचार के साथ-साथ सितार के धारण की बैठक विधि में भी परिवर्तन हुआ। आज के समय में सितार में बैठक दो प्रकार की होती है। पहली साधारण बैठक तथा दूसरा योगासन बैठक। सितार की पहली बैठक जो साधारण बैठक है उसे प्रायः सितार वादन की प्रारम्भिक शिक्षा लेते समय विद्यार्थी अपनाते हैं। इस बैठक में दोनों टांगों को जमीन पर बांयी तरफ मोड़कर रखते हैं तथा दांयी ओर से सितार के तूम्बे के नीचे का भाग जमीन को छूता है तथा पीछे का भाग कमर से सटाकर रखा जाता है। इस बैठक में भी सितार को तीन ओर से सहारा मिलता है। इस तरह की बैठक में द्रुतगति से तान तोड़ा तथा अन्य वादन क्रियाओं का ठीक ढंग से वादन नहीं हो पाता है क्योंकि इस बैठक में भी प्रायः वादन के समय तुम्बा सरकता है। इस बैठक में दोनों पैरों को इस प्रकार मोड़ते हैं कि बांए पैर की स्थिति के समान ही दाहिना पैर उस पर जम जाए और दोनों पैरों के पंजे एक दूसरे के साथ सटे रहें। सामान्यः महिलाएं इसी सितार धारण करती हैं।

सितार की बैठक

सितार की दूसरी बैठक अर्थात् योगासन बैठक में बांयी टांग को जमीन पर दांयी ओर मोड़ते हैं तथा दायीं टांग के ऊपर से दांयीं ओर मोड़ते हैं। सितार के तूम्बे को बांए पैर के तलवे की हड्डी के गोलाई के ऊपर रखते हैं। इससे तुम्बे को दायीं बाजू, बांया पैर तथा दाएं घुटने का सहारा मिल जाता है। आजकल प्रायः सभी सितार वादक इसी प्रकार सितार को धारण करते हैं।

सितार की बैठक में पैरों की स्थिति

सितार की बैठक में पैरों तथा हाथ की स्थिति

सितार की बैठक

सितार की बैठक

सितार वादन के व्यवस्थित प्रशिक्षण की प्राथमिक अवस्था में बैठक का सर्वाधिक महत्त्व है। सितार वादन के लिए निर्धारित बैठक भले ही आरम्भ में शिक्षार्थी के लिए कष्टकारक हो, परन्तु आगे चलकर, वादन क्षमता, द्रुत हस्तचालन के विकास में उचित बैठक का महत्त्व सर्वविदित है।

2.3.2 सितार धारण के लिए ध्यान योग्य बातें

सितार धारण के लिए शिक्षार्थी को निम्न बातों से अवश्य अवगत होना चाहिए।

- बाँये पैर की ऐड़ी व उंगलियों के बीच (पैर का निचला समतल भाग) सितार का तुम्बा रखकर, दाहिने हाथ की कोहनी के अग्रभाग से ऐसे पकड़ना चाहिए ताकि बिना बायें हाथ की सहायता के सितार को पकड़ा जा सके।
- सितार पकडते समय दायें हाथ का अंगूठा अन्तिम पर्दे और गुल्लू के बीच अच्छी तरह से कर इस प्रकार रखा जाए ताकि सितार बजाते समय वह अपनी जगह से न हिलें। कसाव इतना अधिक नहीं होना चाहिए

जिससे उंगलियों व शरीर में किसी प्रकार का तनाव दिखाई दे। हाथ का अग्रभाग (उंगलियां) मिजराब के प्रहार हेतु स्वतंत्र रूप से संचालित होना चाहिए।

- बांया हाथ बिल्कुल स्वतंत्र होना चाहिए ताकि पर्दो पर हाथ बिना किसी अवरोध के आवागमन कर सके।
- सितार, वादक के काफी पास हो तथा 45 के कोण से सितार पकडा जाए।
- सितार बजाते समय दायें हाथ की कलाई व कंधों में अनावश्यक हिलाव नहीं होना चाहिए।
- बैठक के समय रीढ़ की हड्डी (90 के कोण) बिल्कुल सीधी होनी चाहिए। इससे दायें हाथ के संचालन तथा सितार की पकड़ को विशेष बल प्राप्त होता है।

मानव शरीर के अंगों का विकास, मानव प्रकृति, कार्यशैली व दिनचर्या के आधार पर निर्भर करता है। बाजू, हाथ, उंगलियों का लचीलापन सितार वादन में अपना विशेष महत्व रखता है अतः हाथ के लचीलेपन में बाधक कार्य प्रणाली की यथा सम्भव उपेक्षा हितकर हो सकती है।

सितार की बैठक चाहे कैसी क्यों न हो पर हमें हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि दाएं-बाएं हाथ के संचालन में सितार वादन के समय किसी प्रकार की दिक्कत या परेशानी न हो। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि दाहिने हाथ की कोहनी से सितार पर थोड़ा दबाव बनाए रखना चाहिए ताकि बाएं हाथ को आसानी के ऊपर नीचे सरकाया जा सके अर्थात् सितार को इस प्रकार खना चाहिए जिससे दोनों हाथों के वादन किया पर असर न पड़े।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

2.1 सितार का तुम्बे को कहां रखा जाता है।

क) बाँये पैर के सीधे नीचे

ख) जमीन पर

ग) बाँये पैर की उंगलियों के बीच

घ) बाँये पैर की ऐड़ी व उंगलियों के बीच

2.2 सितार पकडते समय दायें हाथ का अंगूठा अन्तिम पर्दे और .... के बीच रखा जाता है।

क) मनका

ख) अटी

ग) गुल्लू

घ) ब्रिज

2.3 मिजराब को किस हाथ में पहनते हैं।

क) दोनों

ख) दांया

ग) बांयां

2.4 सितार में तारों को किस अंगुली से दबाते है।

क) बाएं हाथ की तर्जनी

ख) दाएं हाथ की तर्जनी

ग) दाएं हाथ की कनिष्किा

घ) बाएं हाथ की मध्यमा

2.4 सारांश

सितार वाद्य भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रमुख वाद्य है। मानव शरीर के अंगों का विकास, मानव प्रकृति, कार्यशैली व दिनचर्या के आधार पर निर्भर करता है। बाजू, हाथ, उंगलियों का लचीलापन सितार वादन में अपना विशेष महत्व रखता है। सितार पकडते समय दायें हाथ का अंगूठा अन्तिम पर्दे और गुल्लू के बीच अच्छी तरह से कर इस प्रकार रखा जाए ताकि सितार बजाते समय वह अपनी जगह से न हिलें। कसाव इतना अधिक नहीं होना चाहिए जिससे उंगलियों व शरीर में किसी प्रकार का तनाव दिखाई दे। हाथ का अग्रभाग (उंगलियां) मिजराब के प्रहार हेतु स्वतंत्र रूप से संचालित होना चाहिए। बांया हाथ बिल्कुल स्वतंत्र होना चाहिए ताकि पर्दो पर हाथ बिना किसी अवरोध के आवागमन कर सके।

2.5 शब्दावली

- डाँड: यह लकड़ी का एक खोखला तथा लम्बा भाग होता है। इसे तुम्बे के साथ जोड़ा जाता है। डाँड के ऊपर ही परदे बंधे रहते हैं तथा खूंटियों के लिए जगह बनी रहती है।
- तुम्बा: यह सितार का गोलाकार भाग है। इसे कददू से बनाया जाता है। इसकी सहायता से ही सितार में आवाज की वृद्धि तथा गूंज उत्पन्न होती है।
- गुल्लू: सितार के जिस भाग में डाँड तुम्बे से जोड़ी जाती है उस भाग को गुल्लू कहा जाता है।
- मिजराब: यह लोहे या स्टील की तार का बना हुआ एक तिकोना होता है। इसे दाएं हाथ की तर्जनी में पहना जाता है। इसी की सहायता से तारों पर प्रहार करते हैं।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 उत्तर: घ)

2.2 उत्तर: ग)

2.3 उत्तर: ख)

2.4 उत्तर: क)

2.7 संदर्भ

https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Vintage_postcard_of_a_Hindu_musician.jpg

डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा साक्षात्कार 2024, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

2.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. सितार वाद्य के धारण हेतु ध्यान योग्य तथ्यों को बताएं।

प्रश्न 2. सितार वाद्य में दाएं हाथ के रखाव के विषय में बताएं।

प्रश्न 3. सितार वाद्य को लेकर किस प्रकार बैठा जाता है वर्णन करें।

इकाई-3
सितार वाद्य में हस्त संचालन व स्वरोत्पत्ति

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य तथा परिणाम
3.3	सितार वाद्य में हस्त संचालन व स्वरोत्पत्ति
3.3.1	दाएँ हाथ द्वारा वादन तकनीक, दाएँ हाथ का रखाव तथा संचालन
3.3.2	बाएँ हाथ द्वारा वादन तकनीक, बाएँ हाथ का रखाव तथा संचालन
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	सारांश
3.5	शब्दावली
3.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.7	संदर्भ
3.8	अनुशंसित पठन
3.9	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत वादन में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में भारतीय शास्त्रीय संगीत के सबसे प्रमुख और लोकप्रिय वाद्य सितार के विषय में जानकारी प्रदान की गई है। इस इकाई में सितार वाद्य पर स्वरों की उत्पत्ति किस प्रकार होती है यह बताया गया है। साथ ही दाएं हाथ का रखाव तथा बाएं हाथ का रखाव किस प्रकार होना चाहिए इस विषय में भी बताया गया है। दोनों हाथों का सही रखाव सितार वाद्य में बहुत ही आवश्यक होता है। अगर हाथों का रखाव गलत होगा तो सितार वाद्य सही प्रकार से नहीं बजाया जा सकता। सितार के तार पर आघात कर स्वरोत्पति की प्रक्रिया मिजराब द्वारा सम्पन्न होती है। मिजराब धारण करना व मिजराब के आकार आदि की सितार वादन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। लोहे की त्रिकोणाकार वस्तु, जिसे दायें हाथ की तर्जनी में धारण कर, सितार के तार पर आघात करने से ध्वनि उत्पन्न होती है मिजराब कहलाती है। अतः विद्यार्थी इस इकाई को पढ़ने के पश्चात यह जान पाएंगे कि दाएं हाथ की क्रियाएं कौन-कौन सी होती है और बाएं हाथ की क्रियाएं कौन-कौन सी होती है तथा किस प्रकार सितार वाद्य पर दोनों हाथों का रखाव सही प्रकार रखकर स्वरों की उत्पत्ति की जा सकती है।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को सितार वाद्य की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को सितार वाद्य में हस्त संचालन की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में सितार वाद्य से स्वरोत्पत्ति की क्रियात्मक जानकारी प्रदान करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी को सितार वाद्य के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी को सितार वाद्य में हस्त संचालन के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी में सितार वाद्य से स्वरोत्पत्ति के क्रियात्मक स्वरूप के विषय में जान पाएगा।

3.3 सितार में हस्त संचालन व स्वरोत्पत्ति

3.3.1 दाएँ हाथ द्वारा वादन तकनीक, दाएँ हाथ का रखाव तथा संचालन

मिजराब धारण विधि

सितार के तार पर आघात कर स्वरोत्पति की प्रक्रिया मिजराब द्वारा सम्पन्न होती है। मिजराब धारण करना व मिजराब के आकार आदि की सितार वादन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। लोहे की त्रिकोणाकार वस्तु, जिसे दायें हाथ की तर्जनी में धारण कर, सितार के तार पर आघात करने से ध्वनि उत्पन्न होती है मिजराब कहलाती है। मिजराब एक कोण की तरह बना हुआ होता है, जिसके ऊपर दो तारें इस तरह से कोण से बंधी हुई होती है कि वह एक पंख की शक्ल ग्रहण कर लेता है।

मिजराब को दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली पर पर इस प्रकार धारण करना चाहिए कि मिजराब के ऊपरी भाग यानि पंखों या चिमटी के बीच से दाहिने हाथ की तर्जनी उँगली को गुजारना होगा। मिजराब का जोड़ एक नाखून के ऊपर तथा दूसरा नीचे की तरफ होना चाहिए। मिजराब का लम्बा सिरा तार पर आघात करने के लिए बाहर की ओर निकला रहे तथा टोकरीनुमा भाग तर्जनी उँगली के अगले भाग को चिमटे की तरह दबाए रखे। मिजराब धारण करते समय इस बात का बहुत ध्यान रखना चाहिए कि पंख या चिमटी तर्जनी उंगली के प्रथम जोड़ तक ही रहे। जोड़ से न आगे जाएँ और न ही पीछे, अन्यथा उंगली के द्रुत संचालन में रुकावट पड़ेगी।

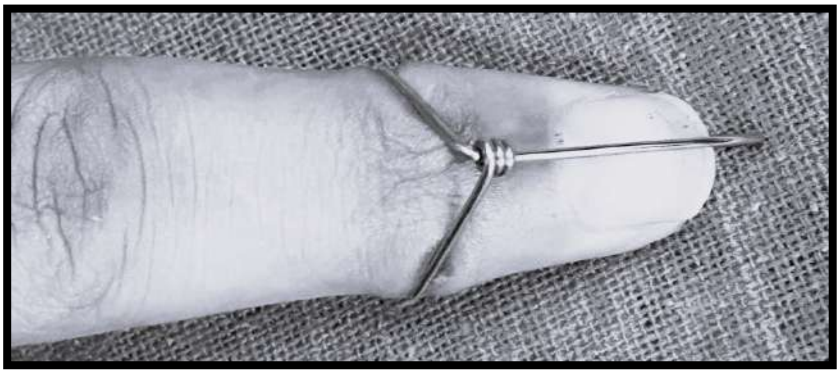

अंगुली पर मिजराब की स्थिति

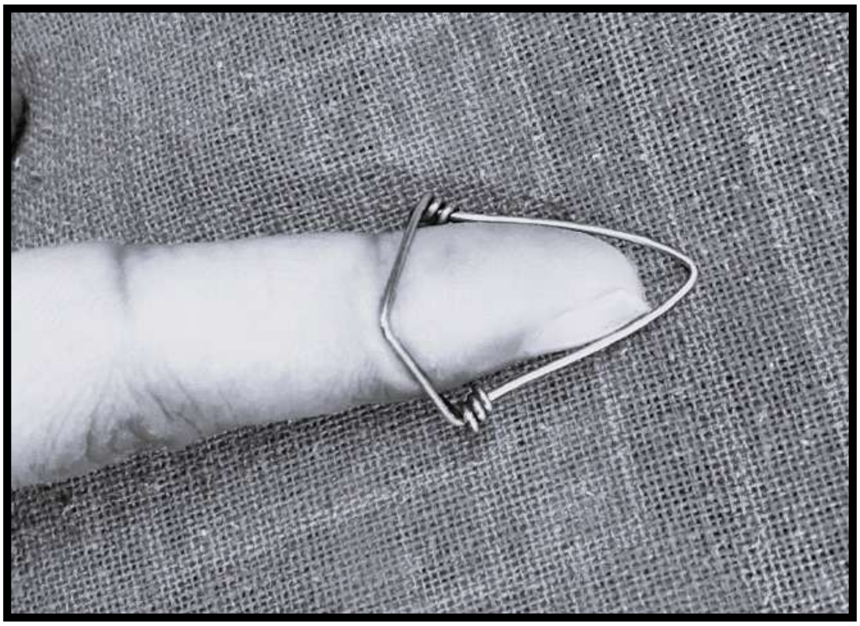

अंगुली पर मिजराब की स्थिति

आजकल प्रायः एक मिज़राब से ही सितार वादन किया जाता है, किन्तु पुरानी पीढ़ी के कलाकार तर्जनी तथा मध्यमा उंगली में दो मिजराब पहन कर वादन करते थे।

मिज़राब के आघात द्वारा उत्पादित (ध्वनित) बोल-

तन्त्री वाद्यों पर विभिन्न प्रकार के प्रहारों को संगीत की भाषा में 'बोल' कहते है। मिजराब की सहायता से सितार वादक दो तरह के आघात करते हैं आकर्ष प्रहार और अपकर्ष प्रहार।

सितार पर मिजराब द्वारा आघात करने से 'दा' और 'रा' दो बोल निकलते हैं। मूलरूप से इन बोलों को 'दे' और 'रु' के नाम से भी जाना जाता है। पहले, इन दोनों बोलों को 'दा' की अपेक्षा 'डा' और रा की अपेक्षा 'ड़ा' कहा जाता था।

श्री एस.एस. टैगोर के अनुसार, दा या डा को 'डा', 'डे' या 'डी' बोल कहते हैं तथा रा या ड़ा को 'रा', 'रे', 'री' भी कहते हैं। उपरोक्त डा, डे, डी तीनों बोल एक ही कार्य को तथा रा, रे री बोल भी एक ही प्रणाली को दर्शाते हैं।

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा' - मिज़राब युक्त तर्जनी उंगली से जब तार पर बाहर से अन्दर की ओर अर्थात अपनी ओर प्रहार करने पर जो ध्वनि या बोल बनता है, उसे 'दा' का बोल कहते है। इसे 'आकर्ष प्रहार' कहा जाता है।

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा' बजाने में हाथ की पहली स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा' बजाने में हाथ की दूसरी स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा' बजाने में हाथ की तीसरी स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा' -

मिज़राब युक्त तर्जनी उंगली से जब तार पर अन्दर से बाहर की ओर अर्थात् अपने से विपरीत दिशा में प्रहार करने पर जिस बोल की उत्पत्ति होती है उसे 'रा' कहते है। इसे 'अपकर्ष प्रहार' भी कहा जाता है।

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा' बजाने में हाथ की पहली स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा' बजाने में हाथ की दूसरी स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा' बजाने में हाथ की तीसरी स्थिति

इस 'रा' के उल्टे प्रहार में हमें कभी-कभी बाज की तार के साथ जोड़े की तार की ध्वनि भी सुनाई पड़ती। अतः मुख्य रूप से यह दो बोल 'दा' और 'रा' एक-एक मात्रिक काल में बजते हैं।

विद्वानों द्वारा उपरोक्त 'दा' तथा 'रा' के बोलों को विलम्बित लय में 'डा', 'रा', मध्यलय में 'डे', 'रे' तथा द्रुतलय में 'डी', 'री' कहा गया है।

इन दोनों बोलों के सहयोग से अन्य कई प्रकार के बोल बनाए जा सकते हैं जो कि क्रमशः एक मात्रा, डेढ़ मात्रा, एक चैथाई मात्रा काल में बनाए जाते हैं, जिन्हें 'दारा' अथवा 'दिर', 'द्रा', दाऽरा, द्राऽऽर, दाऽऽर के नाम से जाना जाता है।

'दा रा' अथवा 'दिर' - 'दा' और 'रा' को प्रायः लगभग एक-एक मात्रा काल का बोल माना गया है। 'दा' और 'रा' के बोल को द्रुत लय में न बजा कर केवल मध्य लय में एक मात्रा काल में ही मिज़राब द्वारा आघात करने से 'दारा' का बोल बनता है और इसी प्रकार यदि 'दारा' को द्रुत लय में जल्दी से अर्थात एक मात्रा काल में दोनों बोलों को एक साथ

बजाने से 'दिर' बोल बन जाता है। आज की अपेक्षा 'दिर' बोल को पहले 'डिड़', 'दिड़' तथा 'डिरी' भी कहा जाता था। जिसका प्रयोग दो स्वरों या एक ही स्वर को दो बार बजाने के लिए किया जाता था।

दाऽरा - जब 'दा' प्रहार को एक मात्रा में बजाएँ तथा उसे साथ ही 'रा' के बोल को केवल आधी मात्रा में बजाएँ तो मिजराब द्वारा 'दाऽरा' के बोल की उत्पत्ति होगी। सामान्यतया इस डेढ़ मात्रिक बोल को दो बार प्रयुक्त किया जाता है। दो बार बजाने से इस का मात्रा काल तीन मात्रा का हो जाता है जैसे 'दाऽर दाऽर' अर्थात मिजराब के चार बोलों को तीन मात्रा काल में रखा जाता है। इस प्रकार के बोल प्रायः रजाखानी गत अर्थात द्रुत गत की बंदिशों में, तोड़ों में प्रयुक्त किया जाता है।

'द्रा' - जब 'दा' और 'रा' के बोलों को चैथाई मात्रा में बजाएँ तो मिजराब के इस प्रकार आघात करने से 'द्रा' बोल की उत्पति होती है। इस बोल को सफाई या सुन्दरता से निकालने के लिए काफी अभ्यास की आवश्यकता होती है। कुछ लोग 'द्रा' बजाने के लिए तर्जनी व मध्यमा दोनों में मिजराब पहन कर बाज के तार पर इस प्रकार प्रहार करते हैं कि पहले मध्यमा उंगली की मिजराब बाज पर पड़े और तुरन्त ही तर्जनी की भी मिजराब बाज पर पड़े तब 'द्रा' बोल का बोध होता है।

उपरोक्त मिजराब के बोलों से ही अन्य कई प्रकार के बोलों तथा छन्दों की रचना की जाती है। जैसे द्रे, द्रा ऽर, डेरा ऽर, ददाऽर इत्यादि मिश्रित बोल बन सकते हैं जो कि विभिन्न प्रकार की लयकारियों में दर्शाए जा सकते हैं।

3.3.3 बाएँ हाथ द्वारा वादन तकनीक, बाएँ हाथ का रखाव तथा संचालन

बाएं हाथ की बन्द मुट्ठी को खोलते समय इस प्रकार बनावट की दी जाए की उंगलियाँ अर्ध चन्द्राकार का रूप धारण कर लें तथा तर्जनी उंगली और अंगूठा सामान्तर, एक दूसरे के सामने हो। उंगलियों को अर्ध चन्द्राकार आकार देते हुए, तर्जनी उंगली द्वारा तार को दबा कर, परदे पर इस प्रकार रखा जाता है, कि तर्जनी उंगली का अग्र भाग तार पर थोड़ा दबाव डाल कर परदे को छू सके और डाण्ड के पीछे वाले भाग में तर्जनी उंगली के सामान्तर ही अंगूठे को रखते हैं। अंगूठा केवल सहारा देने के लिए ही होता है।

सितार पर बाएँ हाथ का रखाव

सितार पर बाएँ हाथ का रखाव

सितार पर बाएँ हाथ का रखाव

सितार पर बाएँ हाथ का रखाव

सितार वादक, सितार वादन में मुख्यतः तर्जनी तथा मध्यमा उंगलियों का ही प्रयोग करते हैं। बाएँ हाथ की उँगलियों का संचालन इस प्रकार होना चाहिए कि परदों पर जब तर्जनी किसी एक स्वर से दूसरे स्वर तक पहुँचती है, तो एक स्वर से दूसरे स्वर तक घिसटती हुई आनी चाहिए ताकि दोनों स्वरों में निरन्तरता बनी रहे।

तर्जनी उंगली के बढ़ते क्रम के पश्चात लौटते क्रम में अंतिम स्वर पर मध्यमा उंगली का प्रयोग होना चाहिए। तत्पश्चात तर्जनी उंगली से लौटना चाहिए। इस प्रकार उंगलियों का सही संचालन सितार वादन की तकनीक में सहायक होता है।

बांयें हाथ की तर्जनी व मध्यमा में तार के 'कट' का निशान सही जगह पर होना चाहिए। उसे बार-बार बदलना नहीं चाहिए अन्यथा तार पर दबाव सन्तुलन प्रभावित होता है। मिजराब के आघात का ऐसा सन्तुलन सुनिश्चित होना चाहिए, जिससे जोड़े के तार की ध्वनि निरन्तर गुंजित होती रहे। पहले-पहल छात्र पर्दों को देखकर स्वर उच्चारण करता है, परन्तु छात्र को यथाशीघ्र स्वरों (पर्दो) के अन्तराल का अनुभव बिना देखे हो जाना चाहिए अन्यथा यह दोष छात्र के विकास पथ में एक लम्बे समय तक बाधक बनता है। वर्तमान समय में गौरीपुर घराने के उस्ताद इनायत हुसैन खां द्वारा बताए गए उंगली संचालन के नियम का ही पालन किया जाता है, उंगली संचालन के समय केवल मध्यमा उंगली का प्रयोग आरोह के अन्तिम स्वर, जहाँ से लौटती अवस्था हो अथवा अवरोह के प्रथम स्वर को बजाने के लिए ही किया जाता है तथा मध्यमा उंगली से ज़मज़मा, कृन्तन, मींड, गमक आदि विशेष रूप से बजाए जाते हैं।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

3.1 सितार में मिजराब को किस हाथ किस अंगुली में पहनते हैं

क) दाएं हाथ की मध्यमा

ख) बाएं हाथ की तर्जनी

ग) दाएं हाथ की कनिष्किा

घ) दाएं हाथ की तर्जनी

3.2 वर्तमान समय में किस घराने के उस्ताद द्वारा बताए गए उंगली संचालन के नियम का ही पालन किया जाता है,

क) पंजाब

ख) गौरीपुर

ग) दिल्ली

घ) मैहर

3.3 वर्तमान समय में किस उस्ताद द्वारा बताए गए उंगली संचालन के नियम का ही पालन किया जाता है।

क) उस्ताद इनायत बख्श खां

ख) उस्ताद इनायत हुसैन खां

ग) उस्ताद इनायत अली खां

घ) उस्ताद इनायत अब्दुल्ला खां

3.4 सितार में मिजराब अधिकतर किस धातु का बना होता है।

क) लोहा

ख) पीतल

ग) तांबा

घ) कांसा

3.5 सितार में मिजराब के 'आकर्ष प्रहार' से जो बोल बनता है उसे क्या कहा जाता है।

क) दिर

ख) द्रा

ग) रा

घ) दा

3.6 सितार में मिजराब के 'अपकर्ष प्रहार' से जो बोल बनता है उसे क्या कहा जाता है।

क) दिर

ख) द्रा

ग) रा

घ) दा

3.7 सितार में मिजराब यदि 'दारा' को द्रुत लय में जल्दी से अर्थात एक मात्रा काल में दोनों बोलों को एक साथ बजाने से कौन सा बोल बनता है

क) दारा

ख) दिर

ग) द्रा

घ) रदा

3.8 सितार बजाते समय जिस स्वर से वापस लौटते हैं उसे पर कौन सी अंगुली लगाई जाती है।

क) बाएं हाथ की मध्यमा

ख) बाएं हाथ की तर्जनी

ग) बाएं हाथ की कनिष्किा

घ) दाएं हाथ की तर्जनी

3.4 सारांश

सितार वाद्य भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रमुख वाद्य है। सितार वाद्यको बजाने के लिए दाएं तथा बाएं हाथ की उंगलियों को विशेष महत्व रखता है। सही ढंग से ना रखने पर सितार सही ढंग से नहीं बज पाती। मिजराब के प्रहारों से जो बोल बनते हैं उन्हें दा तथा रा कहते हैं और इन्हीं बोलों के अलग-अलग समय अंतराल से विभिन्न प्रकार के बोलों का निर्माण होता है।

3.5 शब्दावली

- मिजराब: लोहे की त्रिकोणाकार वस्तु, जिसे दायें हाथ की तर्जनी में धारण कर, सितार के तार पर आघात करने से ध्वनि उत्पन्न होती है।
- दा का बोल: तार पर बाहर से अन्दर की ओर प्रहार करने पर जो बोल बनता है, उसे 'दा'कहते हैं।
- रा का बोल: तार पर अन्दर से बाहर की ओर प्रहार करने पर जो बोल बनता है, उसे 'रा'कहते हैं।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 उत्तर: घ)

3.2 उत्तर: ग)

3.3 उत्तर: ख)

3.4 उत्तर: क)

3.5 उत्तर: घ)

3.6 उत्तर: ग)

3.7 उत्तर: ख)

3.8 उत्तर: क)

3.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

3.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. सितार वाद्य में मिजराब धारण विधि के विषय में बताएं।

प्रश्न 2. सितार वाद्य में मिज़राब के आघात द्वारा उत्पादित बोलों के विषय में बताएं।

प्रश्न 3. सितार वाद्य में बाएँ हाथ द्वारा वादन तकनीक के विषय में बताएं।

इकाई-4
तानपुरा का परिचय तथा वादन तकनीक

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य तथा परिणाम
4.3	तानपुरा का परिचय, इतिहास तथा अंग
4.3.1	तानपुरा का इतिहास
4.3.2	तानपुरा की तारें
4.3.3	तानपुरा के अंग
4.3.4	तानपुरा छेड़ने की तकनीक व बैठक
4.3.5	कंठ द्वारा स्वरों का लगाव
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	सारांश
4.5	शब्दावली
4.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.7	संदर्भ
4.8	अनुशंसित पठन
4.9	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत वादन में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में भारतीय शास्त्रीय संगीत के वाद्य तानपुरा के विषय में जानकारी प्रदान की गई है। इसमें तानपुरा वाद्य का इतिहास, उसका विकास तथा उसके विभिन्न अंगों का वर्णन किया गया है। तानपुरा वाद्य भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रमुख वाद्य है जिस पर शास्त्रीय संगीत के प्रदर्शनों में उपस्थिति अनिवार्य रहती है। तानपुरा की ध्वनि वातावरण में एक सांगीतिक माहौल पैदा कर देती है जिसके कारण गायक तथा वादक की सांगीतिक प्रस्तुतियों में सुंदरता दृष्टिगोचर होती है। तानपूरे को गायन संगीत का मूलाधार माना गया है। उत्तर तथा दक्षिण दोनों संगीत पद्धतियों में तम्बूरे का प्रयोग गायन, वादन तथा नृत्य तीनों के साथ स्वर मेल के लिए किया जाता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी तानपुरा वाद्य के विषय में संपूर्ण जानकारी तथा उसे बजाने की शैलियों का सही प्रकार से प्रयोग कर सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को तानपुरा वाद्य की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को तानपुरा वाद्य के इतिहास की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में तानपुरा वाद्य के विभिन्न अंगों की क्रियात्मक जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में तानपुरा वाद्य की वादन शैलियों/तकनीकों की जानकारी प्रदान करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी को तानपुरा वाद्य के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी को तानपुरा वाद्य के इतिहास के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी में तानपुरा वाद्य के विभिन्न अंगों के क्रियात्मक प्रयोग के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी में तानपुरा वाद्य की वादन शैलियों/तकनीकों के विषय में जान पाएगा।

4.3 तानपुरा का परिचय, इतिहास, अंग, तकनीक

4.3.1 तानपुरा का इतिहास

'तंबूरा' शब्द का अपभ्रंश रूप, प्रचलित तानपूरा शब्द को कहा जाता है। कहा जाता है कि 'तुमरू' नामक ऋषि द्वारा इस वाद्य का आविष्कार किया गया था और तुमरू ऋषि के नाम पर ही इसे 'तम्मूरा' या 'तम्बूरा' कहा गया। पाणिनीय शिक्षा में 'अलाबू' नामक द्वीतंत्री वीणा का उल्लेख मिलता है। अलाबू का अर्थ है 'तुम्बा'। अतः तुम्बे पर विशिष्ट रूप से आश्रित इस वाद्य को 'तम्बूरा' कहा जा सकता है। वैदिक काल में सामगान के साथ स्वर-गुंजन होता रहे इसी कारण से वीणा का प्रयोग किया जाता था। साम गायन की चतुःस्वर योजना के लिए स्वराधार आवश्यक था। प्राचीनकाल में एकतन्त्री वीणा का प्रचलन था। परन्तु जैसे-जैसे भारतीय संगीत में स्वरों का व इन पर आधारित संगीत का क्रमशः विकास होता गया वैसे-वैसे स्वर-संवाद तथा स्वराधार की आवश्यकता अनुभव होने लगी। फलतः एकतन्त्री वीणा के स्थान पर द्वीतन्त्री, त्रीतन्त्री वीणा के प्रकारों का प्रचार होने लगा। यह एक महत्वपूर्ण तंत्री वाद्य है। इसे आज 'तानपुरा' कहा जाता है। इसका प्रयोग गूंज अर्थात् स्वर मेल के लिए किया जाता है। अपनी इस प्रभावित गूंज के कारण ही यह वाद्य गायन संगीत का आधारभूत वाद्य माना जाता है। गायक अपने गले के अनुसार इसमें अपना स्वर कायम कर लेता है और फिर इसकी झंकार के सहारे अपना गायन करता है। तानपूरे के साथ गायन करने से आवाज़ अपनी स्वभाविकता में रहती है। इसी कारण ही तानपूरे को गायन संगीत का मूलाधार माना गया है। उत्तर तथा दक्षिण दोनों संगीत पद्धतियों में तम्बूरे का प्रयोग गायन, वादन तथा नृत्य तीनों के साथ स्वर मेल के लिए किया जाता है।

भारत के प्राचीन तथा मध्ययुगीन चित्रों तथा शिल्पों में कहीं भी इस वाद्य का चित्र प्राप्त नहीं होता। प्राचीन काल में गायक के साथ स्वर देने के लिए एकतन्त्री एवं द्वीतन्त्री जैसी वीणाओं की तन्त्रियों को निरन्तर छेड़ा जाता था जिससे गायक का ध्यान आरम्भिक स्वर पर सदा केन्द्रित रहे। प्रतीत होता है कि इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए संवाद-सिद्धांत के आधार पर चार तन्त्री वाला तम्बूरा प्रचार में आया होगा।

कुछ लोग इसे 'तुम्बरू' की वीणा मानते हैं जो सही प्रतीत नही होता। क्योंकि 'तुम्बरू 'की वीणा का नाम 'कलावती' था और इसमें 9 तारें होती थी। प्राचीन तथा अन्य संस्कृत ग्रन्थों में 'तुम्बी वीणा' या 'तुम्ब वीणा' के नाम से वाद्यों का उल्लेख हुआ है जिससे तम्बूरे की उत्पत्ति की कल्पना की जा सकती है।

परन्तु मध्य युग तक ऐसे तुम्ब वाद्य एक से लेकर अनेक तंत्रियों वाले रहे हैं और उनमें प्रायः सभी पर 'रबाव' तथा 'सरोद' की भान्ति गीतों का वादन किया जाता रहा है। अतः इन तुम्ब वीणाओं से तम्बूरे की उत्पत्ति मानना समुचित प्रतीत नही होता। कहते हैं कि इस वाद्य में चार तारों को चढ़ाने का क्रमिक विकास हुआ। लेकिन आजकल कहीं 5 तथा 6 तारों का तानपूरा भी प्रचलित है।

4.3.2 तानपुरे की तारें

तानपूरे में जो तारें प्रयोग की जाती हैं वे पीतल और स्टील की होती हैं। तानपूरे में अधिकतर चार तारें प्रयोग की जाती हैं। जिनमें से बीच की दो तारों को जोड़ा भी कहा जाता है। इन चारों तारों को षड़ज-पंचम भाव में मिलाया जाता है। जिन रागों में पंचम स्वर नही लगता उनमें इन तारों को षड़ज-मध्यम भाव में मिलाया जाता है। इसी प्रकार यदि राग में तीव्र मध्यम भी लग रहा हो जैसे कि राग पूरिया या मारवा इत्यादि, तो पंचम के तार को गान्धार या निषाद स्वर में इच्छानुसार मिला लिया जाता है।

4.3.3 तानपुरे के अंग

तानपूरा भी अनेक भागों को मिलाकर बनता है। इस वाद्य के विभिन्न भाग इस प्रकार हैं-

- तुम्बाः- तानपूरे का यह भाग कद्दू या लौकी का बना होता है। यह अन्दर से खोखला होता है जिसे एक ओर से काट कर चपटा कर दिया जाता है। इस वाद्य के खोखलेपन पर इसकी गूंज निर्भर करती है। तानपूरे के तुम्बे की परिधि लगभग 90 सेंटीमीटर होती है।
- तबलीः- यह साधारणतया तून की लकड़ी की बनी होती है। इसे तुम्बे के ऊपरी चपटे भाग पर लगाया जाता है।
- ब्रिज या घुड़चः- तबली पर टिकी हाथी दांत की बनी छोटी सी चैकी जिस पर तानपूरे के चारों तार स्थित रहते हैं, उसे ‘‘घोड़ी’’, ‘‘घुड़च’’ या ‘‘ब्रिज’’ कहा जाता है।

- डांडः- लकड़ी का खोखला लम्बा सा डण्डा जो तुम्बे के साथ जुड़ा रहता है तथा जिसमें तार व खूंटियां लगी होती हैं, उसे ‘‘डांड’’ कहते हैं। तानपूरे की कुल लम्बाई लगभग 150 सेंटीमीटर होती है।
- लंगोटः- तुम्बे की पैंदी में लगी हुई फट्टीनुमा कील को ‘‘लंगोट’’ कहते हैं। इनसे तानपूरे के तार बंधे होते हैं। यहां से तार आरम्भ होकर खूंटियों तक पहुंचते हैं।
- अटी या तारगहनः- खूंटियों की ओर हड्डी की दो पट्टियां लगी होती हैं जिनमें से तानपूरे के तार खूटियों तक पहुंचते हैं। इन्हीं पट्टियों को अटी या तारगहन या तारदान कहा जाता है

- सिरा या ग्रीवाः- 'अटी' या 'तारगहन' के बाद तानपूरे का ऊपरी भाग 'सिरा', 'शिर' या 'ग्रीवा' कहलाता है। इसे 'मुख' या 'मस्तक' भी कहते हैं। इसी भाग में खूँटियां लगी रहती हैं।
- गुलूः- जहां डांड और तुम्बा जुड़े होते हैं उस स्थान को 'गुलू' कहते हैं।
- खूंटियां- जिनमें तानपूरे की तारें बांधी जाती हैं उन्हें 'खूंटियां' कहते हैं। ये लकड़ी की बनी छोटी-छोटी चाबीनुमा होती हैं जिनमें तारों को लपेटा जाता है। इन खूंटियों के द्वारा तानपूरे की तारों को कसा व ढीला किया जाता है।
- मनका या मणकाः- ब्रिज या घोड़ी और लंगोट के बीच के तारों में जो मोती पिरोए जाते हैं उन्हें 'मनका' कहते हैं। इनसे तारों के सूक्ष्म स्वरान्तर को ठीक किया जाता है। ये हाथी दांत के बने होते हैं लेकिन आजकल ये कांच या प्लास्टिक के बने भी मिलते हैं।
- ज्वारीः- चार तारों के नीचे तथा ब्रिज के ऊपर रेशम या सूत के चार धागे लगे होते हैं जिन्हें इधर-उधर खिसकाने से झंकार की खुली आवाज़ आती है अर्थात् तारों की गूंज में वृद्धि होती है, इसे ही 'ज्वारी' कहते हैं।
- तारः- तानपूरे में पर्दे नहीं होते केवल चार तार होते हैं जिनमें से पहले तीन तार स्टील के होते हैं और चैथा तार पीतल का होता है। कुछ लोग मर्दानी या भारी आवाज़ के लिए पहला तार पीतल या तांबे का भी प्रयोग करते हैं। विविधता की दृष्टि से कुछ लोग तानपूरे में पांच या छः तार भी लगा लेते हैं। पहला तार मध्य पंचम, अगले दो जोड़ी के तार मध्य षड़ज और चौथा तार मंद्र षड़ज से मिला होता है। ध्यान से सुनने पर इन चार तारों के छिड़ने से सातों स्वरों की ध्वनि सुनाई देती है। तानपूरा को लिटाकर या सीधा खड़ा करके बजाया जाता है।

4.3.4 तानपुरा छेड़ने की तकनीक व बैठक

यह एक आम धारणा है कि संगीत में यदि कुछ सरल है तो वह है तानपुरा छेड़ना। इसके लिए किसी तैयारी या परिश्रम की विषेश आवष्यकता नहीं समझी जाती। वस्तुतः स्थिति कुछ और है तानपुरा एक ऐसा वाद्य है जिसे भारतीय संगीत का मूलाधार होने का गौरव प्राप्त है। गायन, वादन, नर्तन तथा नाट्य आदि समस्त सांगीतिक विधाओं में इसका व्यापक प्रयोग किया जाता है। अतः इसके महत्व को समझते हुए इसकी प्रयोग-विधि का समुचित ज्ञान होना बहुत आवष्यक है। संगीतमय वातावरण बनाने में तानपुरे का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। अतः इसे बड़ी कुषलता से छेड़ा जाना चाहिए।

वास्तव में यह कार्य इतना सरल नहीं है जितना इसे समझा जाता है। यहां तानपुरा छेड़ने से संबंधित बातों का विवरण दिया जा रहा है, जिसके अभ्यास से कुछ ही समय में यह कार्य अत्यंत सहज एवं सुगम हो सकता है।

तानपुरा लिटा कर छेड़ना

तानपुरा सही ढ़ग से छेडने के लिए उसकी पकड सही होनी चाहिए। तानपुरा या तो लिटा कर या खड़ा करके छेड़ा जाता है। लिटा कर छेड़ने की स्थिति में तानपुरा भूमि पर इस प्रकार टिका रहता है कि इसका ऊपरी डांड वाला भाग, जिसके ऊपर तारे होती हैं आगे की ओर झुका रहता है। तानपुरे को पीछे से पालथी का सहारा तथा डांड को आगे वाली खूंटी का सहारा रहता है। इसके अतिरिक्त तबली पर कोहनी को टिका दिया जाता है। इस प्रकार तानपुरे की पकड़ ऐसी हो जाती है कि वह हिलता नहीं है तथा उसकी स्थिति स्थिर हो जाती है। तानपुरा खड़ा करके छेड़ने कि स्थिति में इसके तुम्बे की गोद में ले लिया जाता है या दोनों टागों के बीच में ले लिया जाता है। तुम्बे के एक ओर दाहिनी कोहनी टिकी रहती है तथा दूसरी ओर बांया हाथ तानपुरे को संभाले रखता है। तानपुरे का डांड वाला ऊपरी भाग स्वतंत्र रहता है।

तानपुरे की पकड़ ऐसी होनी चाहिए कि छेड़ने वाले को पूर्णतया सुविधाजनक लगे क्यांेकि तानपुरे को काफी देर तक छेड़ना पड़ता है अतः उसकी पकड में किसी श्रम का आभास नहीं होना चाहिए। अपितु पकड़ बहुत स्वाभाविक होनी चाहिए। पकड़ सही न हो तो तानपुरा हिलता रहता है जिससे संगीतमयी वातावरण मंे विखराव आ जाता है। पकड़ के साथ कुछ और बातें भी ध्यान देने योग्य हैं जैसे- तानपुरा छेड़ने वाला हाथ साफ होना चाहिए। उंगलियों के नाखून बढ़े

हुए न हो, क्योंकि बड़े हुए नाखून तारों को छेड़ने में अवरोध उत्पन करते हैं। इसके अतिरिक्त नर्म तथा लचीला हाथ तानपुरा छेड़ने में और भी अधिक सहायक सिद्ध होता है।

तानपुरा खड़ा करके छेड़ना

तानपुरा छेड़ने में हाथ का बहुत योगदान है। तानपुरा लिटाकर छेड़ा जाए अथवा खड़ा करके दोनों अवस्थाओं में कोहनी से लेकर अंगुलियों तक का भाग डांड या तारों के समानान्तर रहना चाहिए। इससे अंगुलियां तानपुरे के मध्य तक पहुच जाती हैं। तानपुरे को ठीक मध्य से छेड़ना ही अधिक उपयुक्त रहता है क्योंकि तारे दोनों ओर से बांधी रहती हैं और इसके किनारे अपेक्षाकृत कठोर होते हैं। तार का मध्य भाग हलके प्रहार से ही स्वर को उत्पान करने की क्षमता रखता है। लम्बी तारों के किनारों पर अधिक जोर से प्रहार करना पड़ता है जिससे आन्दोलनों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः आवष्यक है कि तारों को मध्य भाग से ही छेड़ा जाए। तानपुरा छेड़ते समय हाथ का कांपना नहीं चाहिए।

तानपुरे की तारों को दांए हाथ की तर्जनी तथा मध्यमा से छेड़ा जाता है। प्रथम तार को मध्यमा तथा षेश तीन तारों को तर्जनी उंगली से छेड़ा जाता है। तार छेड़ते समय उंगलियां तारों के लगभग समानान्तर रहनी चाहिए। इस प्रकार तारों पर उंगली का प्रभाव डांड की ओर लांबिक पड़ना चाहिए। तारों को उंगली से दबाना नहीं चाहिए। अपितु उंगली के किनारे के हल्के से स्पर्ष या प्रहार द्वारा स्वर निकालना चाहिए। तार पर उंगली के अनावष्यक दबाव से जहां स्वर का क्रम टूट सकता है, वहां दबाव के कारण स्वर उतर भी सकता है। तानपुरा छेड़ते समय उंगलियों को प्रहार सब तारों पर एक जैसा रहना चाहिए तभी एक जैसा स्वर प्राप्त हो सकता है। तानपुरा मिलते समय जिस स्थिति में रखा गया हो उसी प्रकार छेड़ते समय भी वही स्थिति रहनी चाहिए।

तानपुरा खड़ा करके छेड़ना

किसी तार पर अधिक जोर से या कम जोर से आधात करने पर भी वांछित वातावरण की रंजकता में विघ्न पड़ता है। अंतिम तार को छोड़, षेश तारों के समय का अंतराल समान रहने से वातावरण सुरीला रहता है। अंतिम तार का समय अंतराल षेश तारों के समय अंतरालों से दुगुना रहना चाहिए। एक तार के बाद दूसरी तार को छेड़ने का समय न बहुत कम न बहुत अधिक रहना चाहिए। तारों को बहुत जल्दी छेड़ने से स्वरों का षोर सा बन जाता है और ऐसे स्वर गुच्छ

उत्पन्न होते हैं जो कानों को सुनने में प्रिय नहीं लगते क्योंकि कान इस जल्दबाजी में उत्पन्न स्वरों की ठीक पहचान नहीं कर पाते और इससे एक बेचैन सा वातावरण उत्पन हो जाता है।

इसके विपरीत, तारों को बहुत ही विलंब से छोड़ने पर स्वर समूह दूर दूर रहते हैं और वातावरण में एकरूपता सी न रहकर खालीपन सा प्रतीत होने लगता है। अतः तारों को छोड़ने को समय या अंतराल ऐसा होना चाहिए कि स्वरों की एक निरंतर श्रृंखला बन जाए। स्वर अपना उचित असर बनाए रखेगें तो वातावरण एक निरंतर ध्वनि से भरपूर रहेगा। अतः तारों को न तो बहुत षीघ्रता से और न ही बहुत विलंब से छोड़ना चाहिए। साधाणतया दो तारों के छेड़ने के बीच का समय आधा सैकेन्ड पर्याप्त रहता है। अंतिम तार को छेड़ने पर स्वरों के एक आवृत की प्राप्ति होती है। अतः आवृत का प्रभाव बनाए रखने की दृश्टि से अंतिम तार को छोड़ने के बाद थोड़ा न्यास किया जाना चाहिए। इससे स्वरों में एक प्रकार का टिकाव रहता है। इस आवृत की निरंतर पुनरावृति करने से स्वरों का एक स्पश्ट सुन्दर तथा रंजक वातावरण तैयार हो जाता है। तानपुरा छेड़ने की एक सुनियोजित प्रक्रिया में उंगलियों का चलन इतना सरल हो जाना चाहिए कि वे संगीत में प्रयुक्त किसी भी लयकारी से प्रभावित हुए बिना निरंतर एवं स्वाभाविक चाल में चलती रहे। यह प्रक्रिया इतनी प्राकृतिक तथा सहज हो जानी चाहिए कि बिना ध्यान दिये भी यह प्रक्रिया स्वतः एक निष्चित गति से होती रहनी चाहिए।

तानपुरा जिस अवस्था में मिलाया गया हो उसी अवस्था में छेड़ा जाना चाहिए अर्थात यदि इसे लिटाकर मिलाया गया हो तो लिटाकर छेड़ना ही उपयोगी होगा। खड़ा करके छेड़ने से उसके स्वरों में फर्क आ जाता है। इसका वैज्ञानिक कारण

यह है कि लेटी हुई अवस्था में खूंटी का कसाव पृथ्वी के धरातल से समानान्तर रहता है जबकि खड़े तानपुरे में यह कसाव लांबिक होता है अब इस बल के साथ एक और बल भी प्रभाव डालता है जिसे पृथ्वी का गुरुत्वाकर्शण बल कहते हैं। यह तारों पर लांबिक रुप से प्रभाव डालता है और खड़े तानपुरे में यह समानांतर बल का कार्य करता है। अतः दोनों दषाओं में स्वर की तारता में सूक्ष्म अंतर आने की संभावना रहती है। अतः यह आवष्यक है कि जिस अवस्था में भी तारपुरा मिलाया जाए उसको उसी अवस्था में छोड़ना चाहिए।

यद्यपि तानपुरा लिटा कर और खड़ा करके दोनों ही तरह से बजाया जाता है। कई बार गायक तानपुरे की डांड को दाएं कान से ही लगा लेता है। इसके दो परिणाम होते हैं एक तो दांए कान को स्वर बहुत निकट से सुनाना पड़ता है जबकि बांए कान को स्वर अपेक्षाकृत काफी दूरी से ग्रहण करना पड़ता है। स्वरों के दो विभिन्न घनत्वों के कारण स्वर की पहचान में कान को भ्रम भी हो सकता है। दूसरे, यह भी होता है कि कान में स्वर के तेज प्रहार से दायां कान सुन्न पड़ जाता है और कई बार तो स्वर पहचान की क्षमता भी खो बैठता है। दोनों ही परिणाम गायक के लिए षुभ नहीं हैं। अतः गायक को चाहिए कि वह तानपुरे की डांड दाएं कान के बहुत निकट न रखे ताकि स्वर पहचानने में भ्रम न हो। स्वर पहचान की यह कठिनाई तानपुरे को लिटाकर छेड़ने में नहीं आती क्योंकि इस अवस्था में दोनां ्रे एक बराबर की दूरी से स्वर ग्रहण करते हैं।

4.3.5 कंठ द्वारा स्वरों का लगाव

कंठ द्वारा स्वरों के लगाव के लिए सर्वप्रथम साधक की बैठक सरल और अनुकूल होनी चाहिए। आड़ा-तिरछा बैठना, मुंह टेढ़ा करना या अकारण हिलते रहने से स्वर उच्चारण में कई दोश आ जाते हैं। पालथी मार कर, एकाग्रचित होकर, बिना हिले डुले सीधा बैठना चाहिए। तानपुरा छेड़ने की प्रक्रिया भी सरल एवं स्वाभाविक होनी चाहिए।

स्वरों में ‘शड्ज’ स्वर अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यह आधार स्वर होता है तथा सप्तक के षेश स्वर इससे एक निष्चित दूरी पर स्थित रहते हैं। अतः सर्वप्रथम ‘शड्ज’ स्वर को जानकर उसका उच्चारण करना आवष्यक है। ‘शडज’ स्वर की पहचान हमें ठीक मिले हुए तानपुरे से मिलती है। तानपुरे को छेड़ने से हमें जो प्रमुख स्वर मिलता है उसे सांगीतिक भाशा में ‘शड्ज’ या ‘सा’ कहा जाता है। विद्यार्थी को इसकी आवाज़ के साथ अपनी आवाज़ मिलानी चाहिए। सुविधा के

लिए इस ध्वनि पर ‘सा’ षब्द को उच्चारण किया जा सकता है, जो स्वर नाभि से प्रेरित होकर कण्ठ से विकसित होता हुआ मुंह द्वारा व्यक्त होता है, वही स्वर स्वाभाविक लगता है। अतः स्वर के प्रस्फुटन मंे नाभि, कण्ठ तथा मुंह का संयुक्त योगदान होना चाहिए। यही कारण है कि बैठक का स्वर लगाव पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

स्वर लगाते हुए अपने ष्वास को यथासंभव लंबा करना चाहिए तथा उचित बल से इसका उच्चारण करना चाहिए। इससे आवाज में एक स्थिरता आती है तथा उसका एक घनत्व भी स्थापित होता है। जितनी देर ष्वास रहे, आवाज़ तानपुरे के स्वर से बिलकुल घुली-मिली रहनी चाहिए। पूरी एकाग्रता से तानपुरे की आवाज़ से अपनी आवाज़ का तारतम्य जोड़ लेना चाहिए। आवाज़ का उंचा नीचापन हर रोज के अभ्यास से स्वतः अपनी जगह ढूंढ लेता है और वांछित स्वर मिल जाने पर एक गहन रजंकता का बोध होता है। प्रत्येक बार स्वर लगाने पर इसी स्थिति को बनाए रखने की कोषिष करनी चाहिए। अब निरन्तर इस क्रिया के करने से स्वर लगाव की प्रक्रिया स्वाभाविक होती प्रतीत होने लगेगी। स्वर लगाव की प्रक्रिया में जहां आवाज़ की ऊंचे-नीचे की पहचान करना आवष्यक है वहीं उसे सही स्थान पर स्थापित करके टिकाऊ बना देना, स्वर का ऊपर नीचे हिलने नहीं देना, उसका उचित बल के साथ घनत्व बनाए रखना आदि बातें बहुत उपयोगी सिद्ध होती हैं।

‘षड्ज’ स्वर के लगाने के पष्चात् सप्तक के अन्य स्वरों की बारी-बारी से पहचान करनी चाहिए। ‘षड्ज’ स्वर से एक निष्चित अंतराल पर ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत तथा निषाद स्वर स्थित रहते हैं। पूर्वांग स्थित स्वरों (षड्ज, ऋशभ, गांधार, मध्यम) को लगाने के बाद उत्तरांग स्थित स्वरों (पंचम, धैवत तथा निषाद) को जानना चाहिए। स, रे, ग, म इस स्वरवलि के अनुरूप संवाद भाव रखती हुई सप्तक के उत्तरांग में प, ध, नि, सां स्वरावलि निकलेगी। इस प्रकार के ज्ञान से संपूर्ण सप्तक के शुद्ध स्वरों का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। शुद्ध स्वरों के ज्ञान के बाद विकृत स्वरों (कोमल-कोमल-तीव्र) के स्वर ध्यानों का ज्ञान करना चाहिए।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

4.1 ‘तुम्बरू’ की वीणा का नाम क्या था

क) तंबूरा

ख) नंदवती

ग) ध्रुवा

घ) कलावती

4.2 'तुम्बरू' की वीणा में कितनी तारें होती थी

क) 8

ख) 10

ग) 9

घ) 11

4.3 आधुनिक तानपूरे में जो तारें प्रयोग की जाती हैं वे किस धातु की बनी होती हैं।

क) पीतल और तांबा

ख) पीतल और स्टील

ग) पीतल

घ) स्टील

4.4 तानपूरा किस श्रेणी का वाद्य है?

क) तत् वाद्य

ख) सुषिर वाद्य

ग) घन वाद्य

घ) अवनद्ध वाद्य

4.5 अधिकतर महिला तानपूरा में कितनी तारें होती है?

क) 3

ख) 5

ग) 6

घ) 4

4.6 अधिकतर पुरुष तानपूरा कितनी तारें होती है?

क) 6

ख) 5

ग) 4

घ) 8

4.7 तानपुरे का चौथा तार किस नाम से जाना जाता है?

क) परज़ का तार

ख) खरज़ का तार

ग) लरज़ का तार

घ) बाज का तार

4.8 तानपुरे के जिस भाग से तारें कसी या ढीली की जाती है, उसे .... कहते हैं।

क) खूंटी

ख) अट्टी

ग) परदा

घ) अन्य

4.4 सारांश

तानपूरा भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण वाद्य है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इनके साथ अभ्यास से शास्त्रीय संगीत में तैयारी और परिपक्क्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। प्राचीन काल में गायक के साथ स्वर देने के लिए एकतन्त्री एवं द्वीतन्त्री जैसी वीणाओं की तन्त्रियों को निरन्तर छेड़ा जाता था जिससे गायक का ध्यान आरम्भिक स्वर पर सदा केन्द्रित रहे। प्रतीत होता है कि इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए संवाद-सिद्धांत के आधार पर चार तन्त्री वाला तम्बूरा प्रचार में आया होगा। इस वाद्य को हाथ की अंगुलियों की सहायता से बजाया जाता है। तानपुरा छेड़ने में हाथ का बहुत योगदान है। तानपुरा

लिटाकर छेड़ा जाए अथवा खड़ा करके दोनों अवस्थाओं में कोहनी से लेकर अंगुलियों तक का भाग डांड या तारों के समानान्तर रहना चाहिए। इससे अंगुलियां तानपुरे के मध्य तक पहुच जाती हैं। तानपुरे को ठीक मध्य से छेड़ना ही अधिक उपयुक्त रहता है। तानपूरे में अधिकतर चार तारें प्रयोग की जाती हैं। जिनमें से बीच की दो तारों को जोड़ा भी कहा जाता है। इस वाद्य को बनाने वाले कलाकार बहुत ही कुशल कारीगर होते हैं जो कद्दू के बाहरी आवरण तथा लकड़ी इत्यादि के माध्यम से इस वाद्य को बनाते हैं।

1.5 शब्दावली

- तुम्बा: यह सितार का गोलाकार भाग है। इसे कददू से बनाया जाता है। इसकी सहायता से ही सितार में आवाज की वृद्धि तथा गूंज उत्पन्न होती है।
- मनका: तार को खूंटियों की सहायता से कसा या ढीला किया जाता है परन्तु सूक्ष्म अंतर को तारों में लगाए गए मोती या मनका की सहायता से ठीक करते हैं।
- ज्वारी: तारों के नीचे तथा ब्रिज के ऊपर रेशम या सूत के चार धागे लगे होते हैं जिन्हें इधर-उधर खिसकाने से झंकार की खुली आवाज़ आती है अर्थात् तारों की गूंज में वृद्धि होती है, इसे ही ‘ज्वारी’ कहते हैं।
- लंगोटः तुम्बे की पैंदी में लगी हुई फट्टीनुमा कील को ‘लंगोट’ कहते हैं। इनसे तानपूरे के तार बंधे होते हैं। यहां से तार आरम्भ होकर खूंटियों तक पहुंचते हैं।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 उत्तर: घ)

4.2 उत्तर: ग)

4.3 उत्तर: ख)

4.4 उत्तर: क)

4.5 उत्तर: घ)

4.6 उत्तर: ग)

4.7 उत्तर: ख)

4.8 उत्तर: क)

4.7 संदर्भ

डॉ. कीर्ति गर्ग से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, 2024।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

4.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तानपूरा वाद्य के अंगों का वर्णन करें।

प्रश्न 2. तानपूरा वाद्य में प्रयोग होने वाली तारों के विषय में बताएं।

प्रश्न 3. तानपूरा वाद्य की वादन विधि बताएं।

इकाई-5
तालें: तीन ताल तथा दादरा ताल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य तथा परिणाम
5.3	तीन ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
5.4	दादरा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.5	सारांश
5.6	शब्दावली
5.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.8	संदर्भ
5.9	अनुशंसित पठन
5.10	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली कुछ तालों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में तीन ताल, कहरवा आदि तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस तालों को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तीन ताल तथा कहरवा ताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- तीन ताल तथा कहरवा ताल का परिचय प्रदान करना।
- तीन ताल तथा कहरवा ताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- तीन ताल तथा कहरवा ताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, तीन ताल तथा कहरवा ताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, तीन ताल तथा कहरवा ताल को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, तीन ताल तथा कहरवा ताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, तीन ताल तथा कहरवा ताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

5.3 तीन ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं	16
विभाग	04
ताली	03
खाली	01

तीन ताल 16 मात्रा की ताल है। यह ताल 4 विभागों में विभक्त है। हर विभाग 4 मात्राओं के होते हैं। इस ताल में पहली मात्रा पर सम, पांचवी व तेहरवीं मात्रा पर ताली तथा नौवीं मात्रा खाली होती है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है। इस ताल में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, विलंबित गतें, द्रुत गतें, ठुमरी इत्यादि गाए-बजाए जाते हैं। फिल्मी संगीत में इस ताल का काफी प्रयोग होता है।

काललिपि

एकगुण

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा

दुगुण

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धाधीं	धींधा	धा धीं	धींधा	धातीं	तीं ता	ताधीं	धींधा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धाधीं	धींधा	धा धीं	धींधा	धातीं	तीं ता	ताधीं	धींधा

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धाधीं	धींधा	धा धीं	धींधा	धातीं	तीं ता	ताधीं	धींधा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धाधीं	धींधा	धा धीं	धींधा	धातीं	तीं ता	ताधीं	धींधा

तिगुण

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धाधीं धीं	धा धा धीं	धींधाधा	तींतीं ता	ताधींधीं	धा धाधीं	धींधा धा	धीं धींधा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धातीं तीं	ताताधीं	धींधा धा	धीं धींधा	धा धींधीं	धाधातीं	तींताता	धींधींधा

x				2			
1	2	3	4	5	6	7	8
धाधीं धीं	धा धा धीं	धींधाधा	तींतीं ता	ताधींधीं	धा धाधीं	धींधा धा	धीं धींधा
0				3			
9	10	11	12	13	14	15	16
धातीं तीं	ताताधीं	धींधा धा	धीं धींधा	धा धींधीं	धाधातीं	तींताता	धींधींधा

चौगुण

1	2	3	4	5	6	7	8
धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा	धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा
x				2			
9	10	11	12	13	14	15	16
धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा	धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा
0				3			

1	2	3	4	5	6	7	8
धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा	धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा
x				**2**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा	धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा
0				**3**			

5.5 कहरवा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 08

विभाग 02

ताली 01

खाली 01

कहरवा ताल आधुनिक समय की एक बहुत लोकप्रिय ताल है। इसका प्रयोग फिल्मी गीत, भजन, ग़ज़ल, लोक संगीत आदि में अधिक होता है। यह प्रमुख रूप से तबले, ढोलक, नाल आदि पर बजाई जाती है। यह चंचल प्रकृति की ताल मानी गई है। इस ताल में 8 मात्राएं है तथा 2 विभाग हैं। प्रत्येक विभाग 4-4 मात्राओं का है। पहली मात्रा पर सम तथा पांचवी मात्रा पर खाली है।

ताललिपि

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
एकगुण							
धा	गे	ना	ती	न	क	धिं	न

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
दुगुण							
धागे	नाती	नक	धिंन	धागे	नाती	नक	धिंन

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
तिगुण							
धागेना	तीनक	धिंनधा	गेनाती	नकधिं	नधागे	नातीन	कधिंन
धागेना	तीनक	धिंनधा	गेनाती	नकधिं	नधागे	नातीन	कधिंन

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
चारगुण							
धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन
धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1. तीन ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 14

घ) 16

5.2. तीन ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

5.3. तीन ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

5.4. तीन ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

5.5. कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 8

घ) 6

5.6. कहरवा ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

5.7 कहरवा ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 5

ख) 4

ग) 6

घ) 3

5.8. कहरवा ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 6

ग) 3

घ) 5

5.9. कहरवा ताल में 7वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) क

ग) धिं

घ) गे

5.10 कहरवा ताल में दूसरी मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) ना

ग) गे

घ) ता

10.5 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में तीन ताल तथा दादरा तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। तीन ताल 16 मात्रा तथा दादरा 06 मात्रा की ताल है। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इन तालों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

10.6 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

10.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 उत्तर: घ)

5.2 उत्तर: ग)

5.3 उत्तर: ग)

5.4 उत्तर: क)

5.5 उत्तर: ग)

5.6 उत्तर: क)

5.7 उत्तर: क)

5.8 उत्तर: क)

5.9 उत्तर: ग)

5.10 उत्तर: ग)

5.8 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.9 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तीनताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. दादरा ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. तीनताल को हाथ पर ताली के साथ बोलकर बताइए।

प्रश्न 4. दादरा ताल को हाथ पर ताली के साथ बोलकर बताइए।

इकाई-6
हिमाचल प्रदेश के मेले
कुल्लू दशहरा, लवी मेला, मिंजर मेला

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य तथा परिणाम
6.3	हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले मेले
6.3.1	कुल्लू दशहरा
6.3.2	लवी मेला
6.3.3	चंबा का मिंजर मेला
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	सारांश
6.5	शब्दावली
6.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.7	संदर्भ
6.8	अनुशंसित पठन
6.9	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में हिमाचल प्रदेश में मेलों तथा अन्य उत्सवों के विषय में बताया गया है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न अवसर पर अनेक मेलों तथा उत्सवों का आयोजन किया जाता है। यह उत्सव हिमाचल प्रदेश सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जाते हैं। इन उत्सवों में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हिमाचल प्रदेश के मेलों में कुल्लू दशहरा विश्वप्रसिद्ध है। साथ ही चंबा का मिंजर मेला और शिमला का लवी मेला पूरे विश्व में अपनी अनोखी छाप छोड़ रहा है। इन मेलों में शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत, फिल्म संगीत इत्यादि की प्रस्तुतियां देखने को मिलती हैं। साथ ही पूरे प्रदेश से दूर दराज के क्षेत्र से, लोक गायक, वादक, नर्तक आते हैं और अपनी पारंपरिक वेशभूषा में अपने लोक संगीत का प्रस्तुतीकरण करते हैं। साथ ही यह मेलं व्यापार तथा आपसी भाईचारे का सशक्त माध्यम रहे हैं। मेले तथा उत्सवों में प्रदेश के इलावा अन्य प्रदेशों तथा विदेशों से भी कलाकारों का संगतिक प्रस्तुतीकरण देखने को मिलता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश में होने वाले विभिन्न मेलों तथा अन्य उत्सवों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे तथा प्रतिवेदन बनाने संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले मेलों तथा अन्य उत्सवों के विषय में जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले मेलों तथा अन्य उत्सवों पर प्रतिवेदन बनाने संबंधी जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले मेलों तथा अन्य उत्सवों के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले मेलों तथा अन्य उत्सवों पर प्रतिवेदन बनाने में सक्षम होगा।

● विद्यार्थी में कल्पना तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।

6.3 हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले मेले

6.3.1 कुल्लू दशहरा

कुल्लू दशहरा पूरे भारत में प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भाँति यहाँ भी दस दिन अथवा एक सप्ताह पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है। स्त्रियाँ और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से सज्जित होकर तुरही, बिगुल, ढोल, नगाड़े, बाँसुरी आदि-आदि जिसके पास जो वाद्य होता है, उसे लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूम धाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में प्रशिक्षित नर्तक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा करते हैं और कुल्लू नगर में देवता रघुनाथ जी की वंदना से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराली होती है।

इसकी खासियत है कि जब पूरे देश में दशहरा खत्म हो जाता है तब यहां शुरू होता है। देश के बाकी हिस्सों की तरह यहां दशहरा रावण, मेघनाथ और कुंभकर्ण के पुतलों का दहन करके नहीं मनाया जाता। सात दिनों तक चलने वाला यह उत्सव हिमाचल के लोगों की संस्कृति और धार्मिक आस्था का प्रतीक है। उत्सव के दौरान भगवान रघुनाथ जी की

रथयात्रा निकाली जाती है। यहां के लोगों का मानना है कि करीब 1000 देवी-देवता इस अवसर पर पृथ्वी पर आकर इसमें शामिल होते हैं।

किंवदंती के अनुसार, महर्षि जमदग्नि के तीर्थयात्रा से लौटने के बाद मलाणा में अपने धर्मोपदेश के लिए गए। अपने सिर पर उन्होंने विभिन्न देवताओं की अठारह छवियों से भरी एक टोकरी रखी। चंदरखानी पास से गुजरते हुए, वह एक भयंकर तूफान आया। अपने पैरों पर रहने के लिए संघर्ष करते हुए, महर्षि जमदग्नि की टोकरी उनके सिर से फेंक दी गई, और कई विकृत स्थानों पर छवियों को बिखेर दिया। पहाड़ी लोग, इन छवियों को देखकर उन्हें भगवान के रूप में आकार या रूप लेते हुए देखा और उनकी पूजा करने लगे। किंवदंती है कि कुल्लू घाटी में देवता की पूजा शुरू हुई।

16 वीं शताब्दी में, राजा जगत सिंह ने कुल्लू के समृद्ध और सुंदर राज्य पर शासन किया। शासक के रूप में, राजा को दुर्गादत्त के नाम से एक किसान के बारे में पता चला, जो जाहिर तौर पर कई सुंदर मोती रखते थे। राजा ने सोचा कि उसके पास ये क़ीमती मोती होने चाहिए, जबकि एकमात्र मोती दुर्गादत्त के पास ज्ञान के मोती थे। लेकिन राजा ने अपने लालच में दुर्गादत्त को अपने मोती सौंपने या फांसी देने का आदेश दिया। राजा के हाथों अपने अपरिहार्य भाग्य को जानकर, दुर्गादत्त ने खुद को आग पर फेंक दिया और राजा को शाप दिया, "जब भी तुम खाओगे, तुम्हारा चावल कीड़े के रूप में

दिखाई देगा, और पानी खून के रूप में दिखाई देगा”। अपने भाग्य से निराश होकर, राजा ने एकांत की मांग की और एक ब्राह्मण से सलाह ली। पवित्र व्यक्ति ने उससे कहा कि शाप को मिटाने के लिए, उसे राम के राज्य से रघुनाथ के देवता को पुनः प्राप्त करना होगा। हताश, राजा ने एक ब्राह्मण को अयोध्या भेजा। एक दिन ब्राह्मण ने देवता को चुरा लिया और वापस कुल्लू की यात्रा पर निकल पड़ा। अयोध्या के लोग, अपने प्रिय रघुनाथ को लापता पाते हुए, कुल्लू ब्राह्मण की खोज में निकल पड़े। सरयू नदी के तट पर, वे ब्राह्मण के पास पहुँचे और उनसे पूछा कि वे रघुनाथ जी को क्यों ले गए हैं। ब्राह्मण ने कुल्लू राजा की कहानी सुनाई। अयोध्या के लोगों ने रघुनाथ को उठाने का प्रयास किया, लेकिन अयोध्या की ओर वापस जाते समय उनका देवता अविश्वसनीय रूप से भारी हो गया, और कुल्लू की ओर जाते समय बहुत हल्का हो गया। कुल्लू पहुँचने पर रघुनाथ को कुल्लू राज्य के राज्य देवता के रूप में स्थापित किया गया। रघुनाथ के देवता को स्थापित करने के बाद, राजा जगत सिंह ने देवता के चरण-अमृत पिया और शाप हटा लिया। जगत सिंह भगवान रघुनाथ के प्रतिनिधि बन गए। यह किंवदंती कुल्लू में दशहरे से जुड़ी हुई है। इस देवता को दशरथ रथ में ले जाया जाता है।

6.3.2 लवी मेला

हिमाचल प्रदेश भारत का एक ऐसा राज्य है जो अपनी सुंदरता और बर्फ से ढकें पहाड़ों के लिए तो प्रसिद्ध है ही साथ ही यह अपने मेलों और रंग-बिरगें उत्सवों के लिए भी प्रसिद्ध है। हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला से करीब 120 किलोमीटर दूर रामपुर बुशहर में भारत व तिब्बत के बीच व्यापार का प्रतीक अंतराष्ट्रीय मेले की शुरुआत हुई थी। जिसे प्रत्येक वर्ष नवंबर माह की 11 तारीख को आयोजित किया जाता है। चार दिनों तक चलने वाले इस मेले में देश-विदेश के लोग व्यापार करने एवं खरीदारी करने के लिए यहां आते हैं। यह मेला भारतीय संस्कृति का मेला है। अंतरराष्ट्रीय लवी मेला सैकड़ों वर्ष पुराना है। यह मेला भारत व चीन के बीच आपसी व्यापार के लिए जाना जाता है। इस मेले में देश के आधुनिक उत्पादों की भी बिक्री होती है तथा लोकल पारंपरिक उत्पाद भी बेचे जाते हैं। यह केवल व्यापारिक मेला ही नहीं, बल्कि इस मेले में हिमाचल प्रदेश की पुरानी संस्कृति की विशेष झलक दिखती है। आज भी यहां पर पारंपरिक वाद्य यंत्रों की खरीद फरोख्त, ऊनी वस्त्रों, ड्राई फ्रूट्स, जड़ी-बूटियों की खरीद प्रमुख है। आज यह मेला कई ऊंचाईयां छू रहा है। मेले में आज भी पारंपरिक संस्कृतिक की झलक देने को मिलती है। लवी शब्द लोई का एक अपभ्रंश है। लोई ऊनी कपड़े को कहा जाता है जिसे पहाड़ के लोग ठंड से बचने के लिए पहनते एवं ओढ़ते हैं। लोई का पहाड़ों में खूब

प्रचलन रहा है क्योंकि यहां अमूमन ठंड का ही मौसम रहता है। इसलिए इस मेले की महत्वता और ज्यादा बढ़ जाती है। यह मेला हिमाचल प्रदेश की पहचान का मेला है।

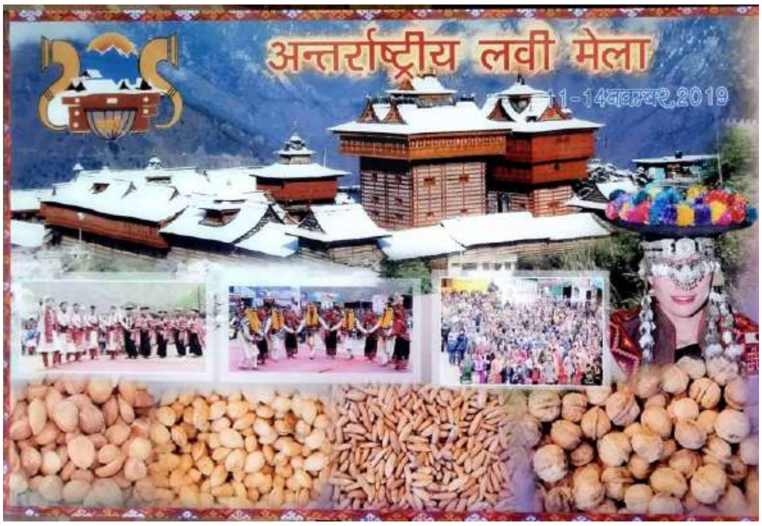

अंतर्राष्ट्रीय लवी मेला हथकरघा व्यवसाय को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा हैं। लवी मेले के कारण ही ग्रामीण दस्तकारों की साल भर की रोजी चल रही है। ग्रामीण दूर दराज क्षेत्र के बुनकरों का अंतर्राष्ट्रीय लवी मेला आर्थिक और रोजगार का प्रमुख साधन बना हैं। शिमला से करीब 130 किलामीटर दूर रामपुर बुशहर में हर वर्ष 11 नवंबर से अंतर्राष्ट्रीय लवी मेला आयोजित किया जाता है। उत्तर भारत का यह प्रमुख व्यापारिक मेला ग्रामीण दस्तकारों के रोजगार और आर्थिक मजबूती का केंद्र बना है। मेले के दौरान हस्तनिर्मित वस्त्रों, शॉल, पट्टू, पट्टी, टोपी, मफलर, खारचे आदि की मांग बढ़ जाती है। अंतर्राष्ट्रीय लवी मेला से पूर्व ग्रामीण दस्तकार साल भर विभिन्न प्रकार के वस्त्र व दूसरा सामान तैयार करते हैं और लवी मेले में लाकर बेचते हैं। ऐसे में ग्रामीण दस्तकारी को बढ़ावा देने में अंतर्राष्ट्रीय लवी मेला उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच एक सेतु का काम कर रहा है। हर ग्रामीण दस्तकार की कोशिश रहती है कि 11 नवंबर से शुरू होने वाले अंतर्राष्ट्रीय लवी मेले में अधिक सामान एवं वस्त्र तैयार कर ले जाएं, ताकि वह मेले में अच्छा पैसा कमाएं। इसलिए हाथों से ऊनी वस्त्र, शॉल, पट्टू व पट्टी आदि तैयार करते है। ताकि इस कमाई से वे साल भर का खर्चा चला सकें। इस व्यवसाय से जुड़े ग्रामीण लोग सामान तैयार करते हैं और लवी मेले में बेचने लाते हैं। इसके अलावा लवी मेले में वाद्य यंत्रों को खरीदने वालों की भी कमी नहीं है। लोग दूर-दूर से यहां पर वाद्य यंत्रों को खरीदने के

लिए पहुंचते हैं। इसकी मुख्य वजह यह है कि यहां पर ये वाद्य यंत्र बने बनाए मिल जाते हैं, जबकि इन वाद्य यंत्रों को बनाने के लिए लोगों को कारीगर ढूंढने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती है। इन वाद्य यंत्रों में विशेष कर ढोल-नगाड़े, करनाले, धुड़च व हरनशिंगे आदि आसानी से मिल जाते हैं। इन सामान को बेचने वाले व्यापारी मुख्यतः कुल्लू व आसपास के क्षेत्रों से आए हुए हैं। ये व्यापारी हर वर्ष यहां पर इन विभिन्न वाद्य यंत्रों को बेचने के लिए आते हैं।

रामपुर रियासत के राजा ने तिब्बत के साथ व्यापारिक समझौता यह सोच कर किया था कि दोनों देश के व्यापारी बिना कर दिए व्यापार कर सकेंगे। 1911 से कुछ वर्ष पूर्व रामपुर में तिब्बत और हिंदुस्तान के बीच व्यापार शुरू हुआ। उस समय राजा केहर सिंह ने तिब्बत सरकार के साथ व्यापार को लेकर संधि की थी। व्यापार मेले में कर मुक्त व्यापार होता था। लवी मेले में किन्नौर, लाहौल-स्पीति, कुल्लू और प्रदेश के अन्य क्षेत्रों से व्यापारी पैदल पहुंचते थे। रामपुर में लवी मेले का आयोजन पहले रामपुर बाजार में किया जाता था। अंतरराष्ट्रीय लवी मेले में तिब्बत, अफगानिस्तान और उज्वेकिस्तान के व्यापारी कारोबार करने के लिए आते थे। वे विशेष रूप से ड्राई फ्रूट, ऊन, पशम और भेड़-बकरियों सहित घोड़ों को लेकर यहां आते थे। बदले में व्यापारी रामपुर से नमक, गुड़ और अन्य राशन लेकर लेकर जाते थे। यह नमक मंडी जिले के गुम्मा से लाया जाता था। लवी मेले में चामुर्थी घोड़ों का भी कारोबार किया जाता था। ये घोड़े उत्तराखंड से लाए जाते थे। इसके अलावा ऊन से बने उत्पादों की खरीद-फरोख्त भी होती थी। शिमला जिले की रामपुर रियासत में लवी मेला मध्य शताब्दी से चल रहा है। लवी मेले के शुरु होते ही पहले इसमें घोड़ों की बिक्री की जाती है।

जिसके बाद ऊनी वस्त्र, शाल, गर्म कॉ, पट्टी इत्यादि को बेचा व खरीदा जाता है। दूर-दूर से लोग इस मेले में शामिल होने आते हैं। यह मेला हिमाचल प्रदेश को गौरवान्वित करता है।

6.3.3 चंबा का मिंजर मेला

देवभूमि हिमाचल में देवी-देवताओं का वास कहा जाता है। यहां की संस्कृति और परंपराएं काफी अलग हैं। यूं तो प्रदेशभर में बहुत से मेले, त्योहार और उत्सव मनाए जाते हैं, लेकिन शिवभूमि चंबा का मिंजर मेला प्रदेश में ही नहीं, बल्कि पूरे देशभर में प्रसिद्ध है। चंबा शहर राजा साहिल वर्मन द्वारा उनकी बेटी राजकुमारी चंपावती के कहने पर रावी नदी के किनारे बसाया गया था। इसीलिए इस शहर का नाम चंबा रखा गया था। मिंजर मेले को अंतरराष्ट्रीय मेले का दर्जा दिया गया है। यह मेला श्रावण मास के दूसरे रविवार को शुरू होकर सप्ताह भर चलता है।

इस मेले को क्यों मिला मिंजर का नाम- स्थानीय लोग मक्की और धान की बालियों को मिंजर कहते हैं। इस मेले का आरंभ रघुवीर जी और लक्ष्मीनारायण भगवान को धान और मक्की से बना मिंजर या मंजरी और लाल कपड़े पर गोटा जड़े मिंजर के साथ, एक रुपया, नारियल और ऋतुफल भेट किए जाते हैं। इस मिंजर को एक सप्ताह बाद रावी नदी में प्रवाहित किया जाता है। मक्की की कौंपलों से प्रेरित चंबा के इस ऐतिहासिक उत्सव में मुस्लिम समुदाय के लोग कौंपलों की तर्ज पर रेशम के धागे और मोतियों से पिरोई गई मिंजर तैयार करते हैं, जिसे सर्वप्रथम लक्ष्मीनारायण मंदिर और रघुनाथ मंदिर में चढ़ाया जाता है और इसी परंपरा के साथ मिंजर महोत्सव की शुरुआत भी होती है।

क्यों मनाया जाता है मिंजर- लोककथाओं के अनुसार मिंजर मेले की शुरुआत 935 ई. में हुई थी। जब चंबा के राजा त्रिगर्त के राजा जिसका नाम अब कांगड़ा है, पर विजय प्राप्त कर वापस लौटे थे, तो स्थानीय लोगों ने उन्हें गेहूं, मक्का और धान के मिंजर और ऋतुफल भेंट करके खुशियां मनाई थीं। मिंजर मेले की परंपराएं- मिंजर मेले में पहले दिन भगवान रघुवीर जी की रथ यात्रा निकलती है और इसे रस्सियों से खींचकर चंबा के ऐतिहासिक चौगान तक लाया जाता है, जहां से मेले का आगाज होता है। भगवान रघुवीर जी के साथ आसपास के 200 से ज्यादा देवी-देवता भी वहां पहुंचते हैं। मिर्जा परिवार सबसे पहले मिंजर भेंट करता है। रियासत काल में राजा मिंजर मेले में ऋतुफल और मिठाई भेंट करता था, लेकिन अब यह काम प्रशासन करता है। उस समय घर-घर में ऋतुगीत और कूंजड़ी-मल्हार गाए जाते थे। अब स्थानीय कलाकार मेले में इस परंपरा को निभाते हैं। मिंजर मेले की मुख्य शोभायात्रा राजमहल अखंड चंडी से चौगान से होते हुए रावी नदी के किनारे तक पहुंचती है। यहां मिंजर के साथ लाल कपड़े में नारियल लपेट कर, एक रुपया और फल, मिठाई नदी में प्रवाहित की जाती है। चंबा संस्कृति की झलक ङ्क्षमजर मेले में देखने को मिलती है। लोग दूर-दूर से इस मेले को देखने आते हैं।

हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक- शाहजहां के शासनकाल के दौरान सूर्यवंशी राजा पृथ्वी सिंह रघुवीर जी को चंबा लाए थे। शाहजहां ने मिर्जा साफी बेग को रघुवीर जी के साथ राजदूत के रूप में भेजा था। मिर्जा साहब जरी गोटे के कम में माहिर थे। चंबा पहुंचने पर उन्होंने जरी का मिंजर बना कर रघुवीर जी, लक्ष्मीनारायण भगवान और राजा पृथ्वी सिंह को भेंट किया था। तब से मिंजर मेले का आगाज मिर्जा साहब के परिवार का वरिष्ठ सदस्य रघुवीर जी को मिंजर भेंट करके करता है। इससे सिद्ध होता है कि चंबा और संपूर्ण भारत धर्म निरपेक्ष था। सदियों पुरानी परंपरा के अनुसार आज भी मिर्जा परिवार के सदस्यों द्वारा मिंजर तैयार कर भगवान रघुवीर को अर्पित की जाती है, जिसके बाद ही विधिवत रूप से मिंजर मेले का आगाज होता है और मौजूदा समय में भी इस परिवार का वरिष्ठ सदस्य इस परंपरा को पूरी निष्ठा के साथ निभा रहा है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 कुल्लू दशहरा किस जिला में आयोजित होता है।

क) कांगड़ा

ख) शिमला

ग) मंड़ी

घ) कुल्लू

6.2 कुल्लू दशहरा में सबसे प्रमुख देवता का क्या नाम है।

क) भरत जी

ख) राधा जी

ग) रघुनाथ जी

घ) कृष्ण जी

6.3 लवी मेला किस जिला में आयोजित होता है।

क) कांगड़ा

ख) शिमला

ग) मंड़ी

घ) कुल्लू

6.4 लवी मेला किस स्थान में आयोजित होता है।

क) रामपुर बुशहर

ख) मुख्य शिमला

ग) नारकंड़ा

घ) किन्नौर

6.5 लवी मेला एक .... मेला है

क) जिला स्तरीय

ख) क्षेत्रीय

ग) राष्ट्रीय

घ) अंतराष्ट्रीय

6.6 लवी मेला किस स्थान में आयोजित होता है।

क)

ख)

ग)

घ)

6.7 चंबा में स्थानीय लोग ....की बालियों को मिंजर कहते हैं।

क) सेब

ख) मक्की और धान

ग) मटर और गाजर

घ) टमाटर

6.8 लोककथाओं के अनुसार मिंजर मेले की शुरुआत .... में हुई थी।

क) 935 ई.

ख) 945 ई.

ग) 955 ई.

घ) 925 ई.

6.9 भगवान रघुवीर जी की रथ यात्रा को रस्सियों से खींचकर चंबा के ऐतिहासिक ...... तक लाया जाता है,

क) महल

ख) खेतों

ग) चुराग

घ) चौगान

6.10 कूंजड़ी-मल्हार किस मेले के अवसर पर गाया जाता है।

क) कुल्लू मेला

ख) लवी मेला

ग) मिंजर मेला

घ) इनमें से कोई नहीं

6.4 सारांश

हिमाचल प्रदेश में विभिन्न अवसर पर अनेक मेलों तथा उत्सवों का आयोजन किया जाता है। यह उत्सव हिमाचल प्रदेश सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जाते हैं। इन उत्सवों में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हिमाचल प्रदेश के मेलों में कुल्लू दशहरा, चंबा का मिंजर मेला और शिमला का लवी मेला पूरे विश्व में अपनी अनोखी छाप छोड़ रहा है। इन मेलों में शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत, फिल्म संगीत इत्यादि की प्रस्तुतियां देखने को मिलती हैं। मेले तथा उत्सवों में प्रदेश के इलावा अन्य प्रदेशों तथा विदेशों से भी कलाकारों का संगतिक प्रस्तुतीकरण देखने को मिलता है।

6.5 शब्दावली

- मिंजर: स्थानीय लोग मक्की और धान की बालियों को मिंजर कहते हैं। अब इसे एक रेशमी लटकन जिसे पुरुष और महिलाएं समान रूप से अपने कपड़ों के कुछ हिस्सों पर पहनते हैं।
- मेला: जब किसी एक स्थान पर बहुत से लोग किसी सामाजिक ,धार्मिक एवं व्यापारिक या अन्य कारणों से एकत्र होते हैं तो उसे मेला कहते हैं।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 उत्तर: घ)

6.2 उत्तर: ग)

6.3 उत्तर: ख)

6.4 उत्तर: क)

6.5 उत्तर: घ)

6.6 उत्तर: ग)

6.7 उत्तर: ख)

6.8 उत्तर: क)

6.9 उत्तर: घ)

6.10 उत्तर: ग)

6.7 संदर्भ

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%B2%E0%A5%82_%E0%A4%A6%E0%A4%B6%E0%A4%B9%E0%A4%B0%E0%A4%BE

https://en.wikipedia.org/wiki/Lavi_Fair

https://hpchamba.nic.in/festival/minjar-mela/

https://www.tourmyindia.com/states/himachal/minjar-mela.html

https://kulludussehra.hp.gov.in/

https://www.divyahimachal.com/2023/07/international-minjar-fair-of-chamba/amp/

https://www.indiatoday.in/india/story/women-perform-folk-dance-international-kullu-dussehra-festival-himachal-2282461-2022-10-08

https://www.traveltourguru.in/fairs-and-festivals-in-himachal-pradesh/

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

6.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले किसी एक मेले पर एक सांस्कृतिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले किसी एक मेले पर एक सांगीतिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

प्रश्न 3. हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले किसी एक मेले पर एक power point presentation प्रस्तुत करें।

इकाई-7
हिमाचल प्रदेश के मेले
मंडी की शिवरात्रि, रेणुका मेला

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य तथा परिणाम
7.3	हिमाचल प्रदेश के मेले मंडी की शिवरात्रि, रेणुका मेला
7.3.1	मंडी की शिवरात्रि
7.3.2	रेणुका मेला
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.4	सारांश
7.5	शब्दावली
7.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.7	संदर्भ
7.8	अनुशंसित पठन
7.9	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में हिमाचल प्रदेश में मेलों तथा अन्य उत्सवों के विषय में बताया गया है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न अवसर पर अनेक मेलों तथा उत्सवों का आयोजन किया जाता है। यह उत्सव हिमाचल प्रदेश सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जाते हैं। इन उत्सवों में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हिमाचल प्रदेश के मेलों में मंडी की शिवरात्रि, रेणुका मेला पूरे विश्व में अपनी अनोखी छाप छोड़ रहा है। इन मेलों में शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत, फिल्म संगीत इत्यादि की प्रस्तुतियां देखने को मिलती हैं। साथ ही पूरे प्रदेश से दूर दराज के क्षेत्र से, लोक गायक, वादक, नर्तक आते हैं और अपनी पारंपरिक वेशभूषा में अपने लोक संगीत का प्रस्तुतीकरण करते हैं। साथ ही यह मेलं व्यापार तथा आपसी भाईचारे का सशक्त माध्यम रहे हैं। मेले तथा उत्सवों में प्रदेश के इलावा अन्य प्रदेशों तथा विदेशों से भी कलाकारों का संगतिक प्रस्तुतीकरण देखने को मिलता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश में होने वाले विभिन्न मेलों तथा अन्य उत्सवों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे तथा प्रतिवेदन बनाने संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले मेले मंडी की शिवरात्रि, रेणुका मेला के विषय में जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले मेलों मंडी की शिवरात्रि, रेणुका मेला पर प्रतिवेदन बनाने संबंधी जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले मेलों तथा अन्य उत्सवों के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले मेलों मंडी की शिवरात्रि, रेणुका मेला पर प्रतिवेदन बनाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।

7.3 हिमाचल प्रदेश के मेले मंडी की शिवरात्रि, रेणुका मेला

7.3.1 मंडी की शिवरात्रि

आज देशभर में शिवरात्रि महोत्सव मनाया जा रहा है। इस पर्व को भगवान शिव व माता पार्वती के विवाह के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। देवों की भूमि हिमाचल में यह पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। यहां हर गांव व हर कस्बे और शहर में इसे मनाया जाता है। हिमाचल में मंडी में मनाये जाने वाले शिवरात्रि महोत्सव को अंतरराष्ट्रीय दर्जा मिला हुआ है। अपने 81 मंदिरों से त्योहार में आमंत्रित देवताओं और देवियों की बड़ी संख्या को ध्यान में रखते हुए मंडी शहर को 'पहाड़ियों की वाराणसी' यानी छोटी काशी का खिताब मिला है। मंडी में मनाये जाने वाले शिवरात्रि महोत्सव के विषय में अनेक मान्यताएं हैं।

एक मान्यता के अनुसार मंडी के राजा शिवमान सिंह की मृत्यु के समय उसका बेटा ईश्वरी सेन केवल पांच वर्ष का था। सन 1788 में 5 वर्ष की आयु में ही ईश्वरी सेन को मंडी राज्य का राजा नियुक्त कर दिया गया। कांगड़ा के राजा संसार चंद ने इस बात का फायदा उठाया और मंडी पर आक्रमण कर दिया और ईश्वरी सेन को कांगड़ा ले गया। वहां 12 वर्ष तक

नादौन में बंदी बनाकर रखा। सन् 1806 में गोरखों ने ईश्वरी सेन को आजाद करवाया। कहा जाता है कि राजा ईश्वरी सेन शिवरात्रि के कुछ दिन पहले ही लंबी कैद से मुक्त होकर मंडी वापस लौटे थे। इसी खुशी में ग्रामीण भी अपने देवताओं को राजा से मिलाने के लिए मंडी नगर की ओर चल पड़े। राजा व प्रजा ने मिलकर यह जश्न मेले के रूप में मनाया। महाशिवरात्रि का पर्व भी इन्हीं दिनों था तथा इस तरह से शिवरात्रि पर हर वर्ष मेले की परंपरा शुरू हो गई।

भूतनाथ मंदिर, भगवान शिव की अभिव्यक्ति की मूर्ति के साथ, 1520 के दशक का एक प्राचीन मंदिर, मंडी का पर्याय है। यह शहर के मध्य में है। नंदी, शिव की सवारी, अलंकृत दोहरे धनुषाकार प्रवेश द्वार से देवता का सामना करती है। शिवरात्रि का त्योहार इस मंदिर का प्रमुख आयोजन है, जो मंदिर में सात दिन तक मनाया जाता है। भूतनाथ मंदिर के निर्माण के बारे में एक किंवदंती बताई जाती है। ऐसा कहा जाता है कि, 1526 में, राजा अजबर सेन ने मंडी के एक जंगल में एक गाय द्वारा अपनी इच्छा से एक विशेष पत्थर पर दूध चढ़ाने की कहानी सुनी थी। ऐसा कहा जाता है कि राजा के सपने में भगवान शिव प्रकट हुए और उन्होंने उस स्थान पर दबे हुए शिव लिंग को बाहर निकालने का निर्देश दिया। इसके बाद, राजा को संकेतित स्थान पर शिव लिंग मिला, जिसे उन्होंने 1526 में एक मंदिर में स्थापित किया, उसी स्थान पर जहां यह पाया गया था। उन्होंने इसे भूतनाथ मंदिर कहा और मंडी में शिवरात्रि उत्सव मनाने की शुरुआत की। इस घटना के साथ-साथ, राजा ने अपनी राजधानी भिउली से मंडी स्थानांतरित कर दी।

शिवरात्रि में माधोराय: शोभा यात्रा का नेतृत्व

मंडी के पहले राजा बाणसेन शिव भक्त थे, जिन्होंने अपने समय में शिव महोत्सव मनाया। राजा अजबर सेन ने 1527 में मंडी कस्बे की स्थापना की और भूतनाथ में विशालकाय मंदिर निर्माण के साथ-साथ शिवोत्सव मनाया। राजा अजबर सेन के समय यह उत्सव एक या दो दिन ही मनाया जाता था। परंतु राजा सूरज सेन (1664-1679) के समय इस उत्सव को नया आयाम मिला। ऐसा माना जाता है कि राजा सूरज सेन के 18 पुत्र थे जो उसके जीवनकाल में ही मर गए।

उत्तराधिकारी के रूप में राजा ने एक सुनार 'भीमा' से एक चांदी की प्रतिमा बनवाई जिसे माधोराय नाम दिया गया। राजा ने अपना साम्राज्य माधोराय को दे दिया। इसके बाद शिवरात्रि में माधोराय ही शोभा यात्रा का नेतृत्व करने लगे। राज्य के समस्त देव शिवरात्रि में आकर पहले माधोराय व फिर राजा को हाजिरी देने लगे।

7.3.2 हिमाचल का रेणुका जी मेला

माँ रेणुका जी मेला हिमांचल के जिले सिरमौर में मनाया जाने वाला एकमात्र राज्यस्तरीय मेला है जिसके उदघाटन और समापन पर प्रदेश के मुख्यमंत्री और राज्यपाल स्वयं आ कर देवताओं की अगवानी व विदाई करते हैं। रेणुका तीर्थ स्थल जिला सिरमौर के मुख्यालय नाहन से मात्र 40 किलोमीटर तथा चण्डीगढ़ से क़रीब 125 किलोमीटर है। नाहन से ददाहू होते हुए रेणुका जी पहुँचने के लिए गिरिगंगा को पार करना पड़ता है। इस नदी की उत्पत्ति को यहाँ के लोग एक दंतकथा

से जोड़ते हैं जिसके अनुसार कोई ऋषि हरिद्वार की तीर्थ यात्रा करके कमंडल में गंगा का पवित्र जल ले कर कैलाश पर्वत की ओर जा रहे थे। शिमला जिले में कोटखाई नामक स्थान के समीप उनका पैर फ़िसल गया और गंगा जल से भरे पात्र से कुछ जल गिर गया। उनके मुँह से निकला ‘‘ये गिरि गंगा’’। उनके यह शब्द ब्रह्मवाक्य हुए। उसी समय वहाँ से एक जलधारा निकली जो आज गिरि गंगा के नाम से प्रसिद्ध है। यह नदी सिरमौर को दो भागों में बांटती है जो गिरिवार और गिरिपार के नाम से प्रसिद्ध हैं, रेणुका जी से चार कि .मी .दूर जटोन नामक स्थान में नदी के पानी को सुरंग द्वारा ‘‘गिरि बाता’’ जल–विद्युत योजना बनाई गई है। यह नदी सिरमौर में बहने वाली नदियों में सबसे उपयोगी है। गिरिगंगा को पावन नदी समझकर हज़ारों श्रद्धालु इसमें स्नान करते हैं।

इसी के साथ बालगंगा नदी है और गिरि तथा बालगंगा के संगम पर एक कुंड है जिसका पानी बिलकुल नीला है। यहाँ स्नान करने से एकदम ताज़गी आ जाती है। गिरि नदी आगे जा कर जलाल नदी से मिलती है, इस स्थान को प्रयागराज कहते हैं। यह स्थान त्रिवेणी के नाम से चर्चित है। इस त्रिवेणी को लोग बड़ी श्रद्धा के भाव से मानते और यहाँ स्नान करते हैं। इसमें स्नान करने वालों का मत है कि जो पुण्य प्रयागराज के स्नान करने में प्राप्त होता है वही पुण्य इस स्थान में प्राप्त होता है। वैसे रेणुका स्नान से पहले इस स्थान के स्नान को बहुत ही शुभ माना जाता है।

गिरि नदी को पार करने के बाद एक पनचक्की है, उसके पास एक कावेरी–वृक्ष की जड़ में शिवलिंग है। इस शिवलिंग पर, जिसे पंचमुखा सोमेश्वर देवता कहा जाता है, पानी की बूँदें हर समय टपकती रहती हैं। इसी के सामने स्थित पहाड़ी को पुंचभाइया के नाम से और देवता को ‘‘सिरमौर देवता’’ के नाम से जाना और पूजा जाता है। पंचमुखा सोमेश्वर से थोडी दूर लगभग सौ मीटर की दूरी पर फिर एक शिवलिंग है इस लिंग का नाम ‘‘कपिलेश्वर’’ है। यह लिंग इस बात के लिए विख्यात है कि श्रद्धापूर्वक गाय के दूध से लिंग को स्नान करवाने के बाद पुत्रहीन को एक साल के अवधि के अंदर

पुत्र–रत्न की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही लिंग को अन्य तरह से स्नान कराने पर अलग–अलग फल लाभ होते हैं जैसे गंगा जल से स्नान कराने पर समस्त पाप धुल जाते हैं एवं मिश्री के शरबत से स्नान कराने पर धन लाभ की प्राप्ति होती है।

परशुराम तथा रेणुका देवी के पुराने मंदिर तालाब के किनारे रेणुका झील के पैरों के समीप स्थित हैं। यहाँ रेणुका झील का पानी परशुराम तालाब से आकर मिलता है, जिसे धुनुतरर्थ कहते हैं। बताया जाता है कि इस स्थान का बड़ा धार्मिक महत्तव है। आजकल लोग इसे रेणुका माँ के चरणों का स्थान के नाम से पुकारते हैं। यहाँ पर विशेष कर वही स्त्रियाँ आती हैं जो निःसंतान होती हैं, अतः ज़्यादातर यहाँ पर 'स्त्रियों' की ही भीड़ होती है। पुराने मंदिर के पास ही एक मंदिर रेणुका मठ है जिसका जीर्णोद्धार किया गया है। इसमें रेणुका की मूर्ति रखी हुई है। लोगों का यह मत है कि यह मंदिर गोरखों ने बनवाया था।

इसके बाद रेणुका झील की ओर जंगलों की चुनरी से ढके दो पर्वतों के बीच झील की परिक्रमा मंदिर की ओर से प्रारंभ होती है। जिसके चारों ओर पक्का रास्ता बना हुआ है, और जब पेड़ों के अंदर से सूर्य की किरणें जल पर पड़ती हैं और जल का रंग भिन्न–भिन्न स्वरूप बदलता है तो उसकी सुंदरता देखते ही बनती है। यहीं पर स्नान करने के लिए एक खुला घाट पुरुषों के लिए और दूसरा तीन ओर दीवारों से बंद स्त्रियों के लिए बना है, जो महिलाघाट और पुरुषघाट के नाम से जाने जाते हैं। इस झील में तरह–तरह की सुंदर मछलियाँ हैं जिन्हें श्रद्धालु लोग प्यार से आटे की गोलियाँ और अन्य खाद्य सामग्री खिलाते हैं। इसी परिक्रमा के दौरान रास्ते में विश्राम हेतु कई पड़ाव भी आते हैं तथा एक सुंदर पिकनिक

स्थल भी है जहाँ बैठने की सुविधा के अलावा कई सुंदर कला कृतियाँ भी बनी हुई हैं, जिन्हें शिमला आर्ट कालेज के मूर्तिकार सन्नत कुमार ने बनाया है। इसी परिक्रमा के दौरान आगे चलकर एक विशाल पीपल का वृक्ष आता है जिसके तने पर लोग अपना नाम गोद कर लिख देते हैं जो नामों से अटा पड़ा हुआ है।

नौका से सैर करने वाले यहाँ से वापस मुड़ जाते हैं क्योंकि आगे का रास्ता दलदल एवं घास से भरा है, लेकिन यहाँ के जंगल के खट्टे नीबू को चखने से नहीं चूकते जिसका स्वाद चटपटा होता है। आगे चलने पर माता का सिर स्थल आता है जहाँ पर नरसल की घास अधिक मात्रा में पाई जाती है जिसमें भक्त परांदे बांधते हैं मानों कि वह माता की चोटी को संवार रहे हों। ऊपर जंबू के टीले से नीचे झील की ओर देखने से झील का आकार स्पष्ट स्त्री के आकार की भांति नज़र आता है। परिक्रमा के दौरान दूसरी ओर से परिक्रमा प्रारंभ करने पर पक्षियों का गुजंन मधुर संगीत का आभास भी कराता है एवं रात्रि के दौरान जंगली जानवर प्रायः नज़र आते हैं। कई बार तो मृगों को अपने झुंड़ के साथ झील के आसपास विचरण करते एवं झील को पार करते भी देखा जा सकता है। झील की सुंदरता, शांत स्वच्छ वातावरण, पशु पक्षी के सुंदर गुंजन, कुचालें भरते जीव, सारस, वन मुर्गे आदि जीवन को एक अनोखा संदेश देते हुए आनंद प्रदान करते हैं। यहाँ अगर आप बैठ गए तो उठने का मन नहीं करता। यह झील लगभग 20 हेक्टेअर में फैली है जिसमें से 5 हेक्टेअर का क्षेत्र सूख गया है। इसके अलावा इस झील की गइराई 5 से लेकर 13 मीटर के लगभग है।

झील के दोनों ओर विशिष्ट पर्वत हैं। ददाहू की ओर से दाईं ओर के पर्वत का नाम धार टारन है। दूसरी ओर का पर्वत महेंद्र पर्वत के नाम से प्रसिद्ध है। रेणुका से जम्मु गाँव जाते समय एक टीला मिलता है जिसे तपे का टीला बोलते हैं। लोगों के अनुसार इसे तपे का टीला इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस टीले पर भृगु का आश्रम था। इस पर जमदग्नि ऋषि ने तपस्या की थी। माता के पैरों के पास आकर परिक्रमा पूरी हो जाती है। इस स्थान को "शालीपाल" कहते हैं।

शालीपाल के पास 'चूड शिखर' सिरमौर की सबसे ऊँची चोटी है जहाँ से शिमला आदि को सामने से देखा जा सकता है। इसकी ऊँचाई समुद्रतल से 2553 मीटर है। यहाँ प्रत्येक पर्वत के ऊँचे शिखर पर किसी ना किसी देवी देवताओं का निवास स्थान है। यहाँ के पुराने लोगों की यह सोच थी कि अगर ऊँचे शिखर पर देवी देवताओं का वास रखा जाय तो इससे देवता की नज़र पूरे गाँव पर रहती है और हर विपत्ति से पूरा गाँव बचा रहता है। ग्राम जम्मु जो रेणुका की प्रत्येक घटना से जुड़ा है, एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। इसके एक किलोमीटर की दूरी पर एक तालाब है जिसे 'कर्ण' या 'करना' का

जोहड़ कहा जाता है। तपे के टीले के मध्य वनदेवी की गुफ़ा है जिससे बारह महीने एक छोटी धारा बहती रहती है। यहाँ से रेणुका तथा जम्मु का टीला दिखाई देता है।

जिला सिरमौर के रेणुका मेले की परंपरा सदियों पुरानी है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वादी केवल रेणुकावासी, सिरमौरियों, हिमाचलियों की ही नहीं अपितु समस्त आर्य जाति की पवित्र धरोहर है। यहाँ के मेले को मानने और इसमें शामिल होने के लिए लोगों में असीम लालसा रहती है और यही कारण है कि मेले में आने से पूर्व लोग अपनी तैयारियाँ आरंभ कर देते हैं। मेले के पीछे प्रत्येक माता को अपने पुत्र से मिलने, लड़कियों को देवठन त्योहार मनाने, व्यापारियों को समान बेचने–ख़रीदने, युवक युवतियों को मेले में मिलने, बच्चों को मिठाइयाँ व खिलौने खरीदने, भक्तों की रेणुका यात्रा तथा स्नान करने तथा कृषकों को अपनी पैदावार बेचने के बाद अपने लिए आवश्यक वस्तु ख़रीदने का आकर्षण हर साल बना रहता है।

रेणुका मेले में दशमी के दिन ग्राम जम्मु, जहाँ परशुराम का प्राचीन मंदिर है, में भगवान परशुराम की सवारी बड़ी धूम–धाम से खूब सजा–धजा के निकाली जाती है। इस सवारी में पुजारी के साथ वाद्य यंत्र होते है एवं चाँदी की पालकी में भगवान की मूर्ति होती है जिसे गिरि नदी ले जाया जाता है। इस शोभायात्रा में ढोल, नगाड़े, करनाल, रणसिंगा, दुमानु आदि बाजे बजाते हैं एवं उसके पीछे लोकप्रिय तीर–कमानों का खेल "ठोड़ा", नृत्य दल, स्थानीय नृत्य प्रदर्शन व अन्य सांस्कृतिक झलकियाँ दिखाई देती हैं। इस शोभा यात्रा के दौरान मार्ग में चढ़ावा चढ़ाने वालों की इतनी भीड़ होती है कि

लोग देवता को भेंट हेतु दूर से ही पैसों और कपड़ों का चढ़ावा चढ़ाते हैं। इस दिन झील में नाव चलाने की अनुमति नही है इसलिए नौका विहार के प्रेमी झील की ओर हसरत भरी निगाह डालते हुए दूसरे दिन का इंतज़ार करते हैं। लोग मंदिरों में जाकर माता रेणुका व भगवान परशुराम को माथा टेकते हैं। यह मेला पूर्णमासी तक चलता रहता है। पूर्णमासी के स्नान को बहुत महत्तव दिया जाता है जिस कारण लोग इसी दिन के स्नान के लिए उमड़ पड़ते हैं। इसके अलावा मेले में पहलवानों की कुश्तियाँ, सरकस, झूले, जादूघर, प्रदर्शनी, सिनेमा का भी बोलबाला रहता है। शाम के समय आतिशबाजी छूटती है एवं रात्रि के समय लोक संपर्क विभाग तथा अन्य संस्थाओं, आयोजकों के प्रयास से विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन होता है। तरह–तरह के परिधानों से सुसज्जित लोगों की भीड़ से बाज़ार और दुकानों में रौनक बनी रहती है। हर जगह लोग तरह–तरह की वस्तुएं ख़रीदते, खाते और आनंद लेते नज़र आते हैं।

यहाँ के लिए पांवटा साहिब, दिल्ली, चंडीग़ढ, शिमला, अंबाला, यमुनानगर, आदि से सीधी बसें मेले पर आती हैं। यात्रियों के ठहरने के किसान भवन, वन विभाग एवं सार्वजनिक विभाग के विश्राम गृह हैं। इसके अलावा अलग से आश्रम और विश्राम–गृह साधु–संतों के लिए भी है। इस तीर्थ का प्राकृतिक सौंदर्य, स्वच्छ पर्यटक स्थल, धार्मिक महत्तव, शांत और निच्छल वातावरण बरबस ही हर वर्ष विद्वानों, भक्तों, प्रकृति प्रेमियों, युवक–युवतियों, बच्चों–बू.ढ़ों को अपने आप ही अपनी ओर शक्तिशाली चुंबक की भांति खींच लेता है, जो कि धीरे–धीरे रेणुका मेले के रूप में बदल जाता है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 मंडी शिवरात्रि मेला किस जिला में आयोजित होता है।

क) कांगड़ा

ख) शिमला

ग) कुल्लू

घ) मंड़ी

7.2 मंडी शिवरात्रि मेला में सबसे प्रमुख देवता का क्या नाम है।

क) भरत जी

ख) राधा जी

ग) शिव जी

घ) कृष्ण जी

7.3 शिवरात्रि के कुछ दिन पहले ही लंबी कैद से मुक्त होकर कौन से राजा मंडी वापस लौटे थे।

क) राजा शिवमान सिंह

ख) राजा ईश्वरी सेन

ग) राजा नंद सेन

घ) राजा नाम सेन

7.4 भूतनाथ मंदिर किस स्थान में स्थित है।

क) मंडी शहर के मध्य में

ख) मंडी शहर से 108 कि.मी. दूर

ग) चम्बा

घ) कुल्लू

7.5 राजा सूरज सेन ने एक चांदी की प्रतिमा बनवाई और अपना साम्राज्य उसे को दे दिया इस प्रतिमा का क्या नाम था।

क) शिवराम

ख) श्री माधव

ग) सूर्यनंद

घ) माधोराय

7.6 रेणुका मेला किस स्थान में आयोजित होता है।

क) संगड़ा

ख) नाहन

ग) रेणुका

घ) नंदवन

7.7 रेणुका जी पहुँचने के लिए .... नदी को पार करना पड़ता है।

क) यमुना

ख) गिरिगंगा

ग) व्यास

घ) सतलुज

7.8 रेणुका जी के पुत्र का क्या नाम था।

क) परशुराम

ख) जम्दग्नि

ग) अर्जुन

घ) दामोदर

7.9 भगवान परशुराम की मूर्ति .... से बनी पालकी में होती है

क) याक की ऊन

ख) तुंन की लकड़ी

ग) सोना

घ) चांदी

7.10 रेणुका जी मेला .... दिन तक चलता रहता है।

क) प्रतिपदा

ख) नवमी

ग) पूर्णमासी

घ) इनमें से कोई नहीं

7.4 सारांश

हिमाचल प्रदेश में विभिन्न अवसर पर अनेक मेलों तथा उत्सवों का आयोजन किया जाता है। यह उत्सव हिमाचल प्रदेश सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जाते हैं। इन उत्सवों में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हिमाचल प्रदेश के मेलों में मंडी की शिवरात्रि, रेणुका मेला पूरे विश्व में अपनी अनोखी छाप छोड़ रहा है। इन मेलों में शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत, फिल्म संगीत इत्यादि की प्रस्तुतियां देखने को मिलती हैं। मेले तथा उत्सवों में प्रदेश के इलावा अन्य प्रदेशों तथा विदेशों से भी कलाकारों का संगतिक प्रस्तुतीकरण देखने को मिलता है।

7.5 शब्दावली

- शिवरात्रि: भगवान शिव व माता पार्वती के विवाह का दिन।
- मेला: जब किसी एक स्थान पर बहुत से लोग किसी सामाजिक ,धार्मिक एवं व्यापारिक या अन्य कारणों से एकत्र होते हैं तो उसे मेला कहते हैं।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: घ)

7.2 उत्तर: ग)

7.3 उत्तर: ख)

7.4 उत्तर: क)

7.5 उत्तर: घ)

7.6 उत्तर: ग)

7.7 उत्तर: ख)

7.8 उत्तर: क)

7.9 उत्तर: घ)

7.10 उत्तर: ग)

7.7 संदर्भ

https://www.abhivyakti-hindi.org/parva/alekh/2005/renuka_mela.htm

https://www.firstverdict.com/religious/know-the-history-of-international-mandi-shivratri-when-and-how-this-festival

https://en.wikipedia.org/wiki/Mandi_Shivaratri_Fair

https://hpmandi.nic.in/gallery/shivratri/

https://utsav.gov.in/view-event/international-shivratri-festival-mandi-1

https://utsav.gov.in/view-event/renuka-mata-temple-mela

https://hillpost.in/2006/11/shri-renuka-ji-fair-a-divine-festival-of-devotion/810/

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

7.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले किसी एक मेले पर एक सांस्कृतिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

प्रश्न 2. हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले किसी एक मेले पर एक सांगीतिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

प्रश्न 3. हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले किसी एक मेले पर एक power point presentation प्रस्तुत करें।

इकाई-8
लोक गीत तथा लोक धुन 'शिव कैलाशों के वासी'

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य तथा परिणाम
8.3	लोक गीत
8.3.1	लोक गीत का परिचय
8.3.2	'शिव कैलाशों के वासी' लोक गीत के बोल
8.3.3	'शिव कैलाशों के वासी' लोक गीत की स्वरलिपि
8.3.4	'शिव कैलाशों के वासी' लोक धुन की स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4	सारांश
8.5	शब्दावली
8.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.7	संदर्भ
8.8	अनुशंसित पठन
8.9	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लोक संगीत, भारतीय संस्कृति का एक विशेष रूप है। लोक संगीत के अंतर्गत वादन, गायन व नृत्य तीनों आते हैं। लोक गीत, लोक संगीत का एक प्रमुख भाग है। लोकगीतों में लोक संस्कृति से संबंधित सामग्री मिलती है। इसमें भक्ति रस, श्रृंगार, करुण, वीर रस आदि से संबंधित गीत मिलते हैं। इन गीतों के रचयिता का नाम अज्ञात होता है परंतु यह गीत लोक संस्कृति तथा उस क्षेत्र के संबंध में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदान करते हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा तथा गा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- लोक गीत / लोक धुन के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक गीत / लोक धुन को बजाने तथा गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन/गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन/गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक गीत / लोक धुन को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक गीत / लोक धुन को बजाने/गाने में सक्षम होंगे।
- लोक गीत / लोक धुन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 लोक गीत 'शिव कैलाशों के वासी'

8.3.1 लोक गीत 'शिव कैलाशों के वासी' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश का एक प्रसिद्ध लोकगीत है। यह यह भक्ति रस से प्रधान है। इस गीत में शिव भगवान की स्तुति की गई है। भगवान शिव को धौलीधार पर्वत का राजा तथा कैलाश का वासी बताया गया है तथा प्रार्थना की गई है कि वह हमारे संकटों को दूर करें और हमें सुख समृद्धि प्रदान करें। यह गीत पहाड़ी ताल चाचर में निबद्ध है जो दीपचंदी के लिए सदृश्य है। यह 14 मात्रा की ताल है। इसे मध्य लय में गाया जाता है।

8.3.2 लोंक गीत के बोल

शिव कैलाशों के वासी

स्थाई

शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा
शंकर संकट हरणा।

अन्तरा

तेरे कैलाशों का अंत ना पाया,
अंत बेअंत तेरी माया,
ओ भोले बाबा अंत बेअंत तेरी माया
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा

बेल की पत्ती भांग धतूरा
शिवजी के मान को लुभाए
ओ भोले बाबा शिवजी के मन को लुभाए
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

एक था डेरा तेरा,चांबे रे चौगाना
दूजा लाई दीता भरमौरा

ओ भोले बाबा दूजा लाई दीता भरमौरा
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

दूरा बे दूरां ते जातरू जे आंदे,
करदे जै जै कारा,
ओ भोले बाबा करदे जय जयकारा
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

8.3.3 लोक गीत 'शिव कैलाशों के वासी' की स्वरलिपि

x			**2**				**0**			**3**			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**
स्थाई													
										ग	रे	ग	-
										शि	व	कै	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
ला	ऽ	ऽ	शों	ऽ	ऽ	के	रा	जा	ऽ	धौ	ऽ	ली	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
धा	ऽ	ऽ	रों	ऽ	के	ऽ	रा	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	ऩि	-	-	ऩि	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
सं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ट	शं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	र
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
ह	र	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

x			2				0			3			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**
										ग	रे	ग	-
										शि	व	कै	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
ला	ऽ	ऽ	शों	ऽ	ऽ	के	रा	जा	ऽ	धौ	ऽ	ली	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
धा	ऽ	ऽ	रों	ऽ	के	ऽ	रा	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	ऩि	-	-	ऩि	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
सं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ट	शं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	र
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
ह	र	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

x			2				0			3			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**
अन्तरा													
रे	-	-	म	-	म	-	प	-	-	प	-	प	-
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	कै	ऽ	ला	ऽ	ऽ	शा	ऽ	रा	ऽ
म	-	प	ध	प	ध	प	म	-	-	ग	-	रे	-
अं	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	नी	पा	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ

x			2				0			3			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**
म	म	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
ल	ग	ऽ	न	ऽ	र	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	रे	रे	म	प	सां	-	सां	-
च	र	ऽ	णा	ऽ	ऽ	हो	मे	रे	ऽ	शं	ऽ	भू	ऽ
प	ध	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
ल	ग	ऽ	न	ऽ	र	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
च	र	ऽ	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
										ग	रे	ग	-
										शि	व	कै	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
ला	ऽ	ऽ	शों	ऽ	ऽ	के	रा	जा	ऽ	धौ	ऽ	ली	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
धा	ऽ	ऽ	रों	ऽ	के	ऽ	रा	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	ऩि	-	-	ऩि	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
सं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ट	शं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	र
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
ह	र	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

8.3.4 लोक धुन 'शिव कैलाशों के वासी'

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
स्थाई													
										ग	रे	ग	-
										दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	ऩि	-	-	ऩि	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	रा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
दा	रा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
										ग	रे	ग	-
										दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	ऩि	-	-	ऩि	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	रा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
दा	रा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
अन्तरा													
रे	रे	-	म	-	म	-	प	-	-	प	-	प	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
म	-	प	ध	प	ध	प	म	-	-	ग	-	रे	-
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
म	म	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ

x			2				0			3			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	रे	रे	म	प	सां	-	सां	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ
प	ध	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
										दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	ऩि	-	-	ऩि	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	रा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
दा	रा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 14

ख) 12

ग) 16

घ) 8

8.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?

क) गायन, नृत्य

ख) गायन, वादन, नृत्य

ग) वादन, नृत्य

घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत

8.3 प्रस्तुत लोक गीत किस राज्य का लोक गीत है?

क) हिमाचल प्रदेश

ख) पंजाब

ग) हरियाणा

घ) जम्मू कश्मीर

8.4 सारांश

भगवान शिव के संबंधित यह एक लोकप्रिय तथा मधुर लोकगीत है। जो चाचर ताल, 14 मात्रा की, में गाया जाता है। इसकी लय मध्य है। इस लोकगीत को हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक लोक वाद्यों के साथ गाया जाता है

8.5 शब्दावली

- आंदे - आते हैं

- जातरू - तीर्थयात्री
- हरणा - हरण करने वाले
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: क)

8.2 उत्तर: ख)

8.3 उत्तर: क)

8.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

8.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक लोकगीत की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 2. किसी एक लोक गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 3. किसी एक लोक धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. किसी एक लोकधुन की स्वरलिपि लिखिए।

इकाई-9
लोक गीत-लोक धुन 'शिवा मेरे महादेवा' व 'काहे रा बो'

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा' व 'काहे रा बो'
9.3.1	लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' का परिचय
9.3.2	लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' के बोल
9.3.3	लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' की स्वरलिपि
9.3.4	लोक धुन 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा'
9.3.5	लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' का परिचय
9.3.6	लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' के बोल
9.3.7	लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' की स्वरलिपि
9.3.8	लोक 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' की स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशंसित पठन
9.9	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लोक संगीत साधारण शब्दों में वह संगीत है जो किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखता है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न भाषाएं, बोलियाँ बोली जाती हैं। इन्हीं बोलियों में जो गीत प्रचलित होते हैं उन्हें लोक गीत कहते हैं। लोक संगीत मानव मन की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। लोक रूचि के अनुसार इसमें समय-समय पर सृजन-विघटन की प्रक्रिया चलती रहती है। लोक जीवन में लोक संगीत की अनवरत धारा आदिकाल से ही प्रवाह मान है। मनुष्य अपने आरंभिक समय से ही समुहों में जीवन यापन करता आ रहा है। इस समुह में किसी एक व्यक्ति द्धारा प्राकृतिक दृश्यों, सुन्दर वस्तुओं, और छवियों को गुन-गुना कर लोक संगीत का सृजन होता है अन्य लोगों द्धारा इस लोक संगीत को पुनरावृति की संज्ञा मिलती है फिर ये संगीत सामाजिक रूप से लोक संगीत का रूप प्राप्त करता है। लोक-संगीत समय और स्थान की सीमाओं को लाँघकर अनादि परंपराओ को वर्तमान में जीवित बनाये रखने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। बदलते समय-प्रवाह से लोक-संगीत का स्वरूप अवश्य बदलता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' व 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत/लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा तथा गा सकेंगे।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' तथा 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत / लोक धुन के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' तथा 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।

- 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' तथा 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत / लोक धुन को बजाने तथा गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन/गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी लोक गीत/लोक धुन के वादन/गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' तथा 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत / लोक धुन को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' तथा 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत / लोक धुन को बजाने/गाने में सक्षम होंगे।
- लोक गीत / लोक धुन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 'शिवा मेरे महादेवा' व 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत/लोक धुन

9.3.1 लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इस गीत में शिवजी द्वारा अनेक तत्वों, कमल का फूल, वासुकि नाग, ब्रजशिला, एवं पृथ्वी को उत्पन्न कर सृष्टि की आरम्भिक रचना का वर्णन किया गया है। बैल के सींग पर पृथ्वी की रचना कर नौ-गज लम्बे मनुष्य बनाए, फिर अति छोटे मनुष्य उत्पन्न किए। अंत में साढ़े-तीन हाथ लम्बे मनुष्य उत्पन्न किए। 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' में राग देस का आभास प्रतीत होता है। राग देस खमाज थाट जन्य राग है। इसकी वादी, संवादी रे और प है तथा गायन समय रात्री का दूसरा प्रहर है। इसकी जाति औढ़व-सम्पूर्ण है। इस लोक गीत को कहरवा ताल में गाया तथा बजाया जाता है।

9.3.2 लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' के बोल

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

तैंई नौंई-नौंई रचना कै लाई,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

जिनी सर्व तलोटी पाया,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

जिनी कौंला फुलणु पाया,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

जिनी वासकी नाग पाया,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

तैंई जबर-सलोटी पाया,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

धौला बैल जे पाया,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

बला सिंगा पर धरती पाया,

शिवा महादेवा-महादेवा।

धन-धन खेला तेरी,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

अबै गिठ-मिठलू जे पाएं,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

अवै गिठ-मिठलू जे पाए,

शिवा मेरे महादेवा-महादेवा।

9.3.3 लोक गीत 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा' की स्वरलिपि

ताल: कहरवा **लय: द्रुत**

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
				सा	रेम	म	रे
				शि	बाऽ	मे	रे
रेसा	सा	-	-	सा	-	-	-
मऽ	हा	ऽ	दे	वा	ऽ	ऽ	ऽ
सानि	नि	-	-	नि	-	रे	सा
म	हा	ऽ	दे	वा	ऽ	तै	ई
सा	रेम	म	रे	रे	-	सा	-
कि	याऽ	कि	या	र	च	ना	ऽ
नि	-	-	-				
ला	ऽ	या	ऽ				
				सा	रेम	म	रे
				शि	बाऽ	मे	रे
रेसा	सा	-	-	सा	-	-	-
मऽ	हा	ऽ	दे	वा	ऽ	ऽ	ऽ

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
सानि	नि	-	-	नि	-	रे	सा
म	हा	ऽ	दे	वा	ऽ	तै	ई
सा	रेम	म	रे	रे	-	सा	-
कि	याऽ	कि	या	र	च	ना	ऽ
नि	-	-	-	सा	रेम	म	रे
ला	ऽ	या	ऽ	सि	बाऽ	मे	रे

शेष अंतरे भी इसी धुन में गाए जाएँगें।

9.3.4 लोक धुन 'शिवा मेरे महादेवा-महादेवा'

ताल: कहरवा **लय: द्रुत**

वाद्य: सितार

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
				सा	रेम	म	रे
				दा	दिर	दा	रा
रेसा	सा	-	-	सा	-	-	-
दिर	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
सानि	नि	-	-	नि	-	रे	सा
दिर	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रेम	म	रे	रे	-	सा	-
दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ
नि	-	-	-				
दा	ऽ	ऽ	ऽ				
				सा	रेम	म	रे
				दा	दिर	दा	रा
रेसा	सा	-	-	सा	-	-	-
दिर	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
सानि	नि	-	-	नि	-	रे	सा
दिर	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रेम	म	रे	रे	-	सा	-
दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ
नि	-	-	-				
दा	ऽ	ऽ	ऽ				

शेष अंतरे भी इसी धुन में बजाए जाएँगें।

9.3.5 लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इसमें शिव-स्तुति के लिए सोने-चाँदी का दीपक प्रज्वलित करने का वर्णन है। किन्तु सोने चाँदी के दीपक के न जलने पर मिट्टी के दीपक बनाकर, उनमें सरसों का तेल डालकर तथा रूई प्रयुक्त दीपक प्रज्वलित करने के भाव दर्शाए गए हैं। यह भजन चौदह मात्रा के दीपचन्दी ताल में बद्ध है। यह भजन बृन्दावनी सारंग राग की ओर संकेत करता है। यह राग काफी थाट जन्य है। इस राग का वादी स्वर रे और संवादी स्वर प है व गायन समय दोपहर है।

9.3.6 लोक गीत 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' के बोल

काहे रा बो तेरा दीया लखीया।
काहे री ता दीये जोत हाँ।

वो सुन्नै-चाँदी रा तेरा दीया बो लखिया,
रूपै री पाया दीये जोत हाँ।

ना बो हलदा बो तेरा दीया बो लखीया,
ना जलदी दीये जोत हाँ।

ओ चिकका-मिट्टी रा तेरा दीया-लखीया,
सरयाँ दा तेल पुआया हाँ।

बो सरूआँ दा तेल सामिया बो,
रुआँ री जोत पुआई हाँ।

ओ लटकी जलू ता मेरा दीया बो लखीया,
लटकी जली दीये जोत हाँ।

ओ अज जलयाँ किच्छ कल जलयाँ बो,
जलै परसूकणी राती हाँ।

9.3.7 लोक गीत ‘काहे रा बो तेरा दीया लखीया’ की स्वरलिपि

ताल: दीपचन्दी **लय: मध्य**

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	ऩि	-	-
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	रा	बोऽ	ऽ	ते	ऽ	रा	ऽ
रे	गरे	रे	सा	-	-	-	सा	-	-	ऩि	-	-	-
दी	याऽ	ऽ	बो	ऽ	ल	ऽ	खि	ऽ	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ
ऩि	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	-	सा	-
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	री	बोऽ	ऽ	दी	ऽ	ए	ऽ
रेसा	रे	गरे	सा	-	-	-	सा	-	-	सा	-	-	-
जोऽ	ऽ	ऽऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	ऩि	-	-
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	रा	बोऽ	ऽ	ते	ऽ	रा	ऽ
रे	गरे	रे	सा	-	-	-	सा	-	-	ऩि	-	-	-
दी	याऽ	ऽ	बो	ऽ	ल	ऽ	खि	ऽ	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ऩि	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	-	सा	-
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	री	बोऽ	ऽ	दी	ऽ	ए	ऽ
रेसा	रे	गरे	सा	-	-	-	सा	-	-	सा	-	-	-
जोऽ	ऽ	ऽऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ऩि	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	-	सा	-
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	री	बोऽ	ऽ	दी	ऽ	ए	ऽ
रेसा	रे	गरे	सा	-	-	-	सा	-	-	सा	-	-	-
जोऽ	ऽ	ऽऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अन्तरे इसी धुन में गाए जाएंगे।

9.3.8 लोक धुन 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' की स्वरलिपि

ताल: दीपचन्दी **लय: मध्य**

वाद्य: सितार

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	ऩि	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
रे	गरे	रे	सा	-	-	-	सा	-	-	ऩि	-	-	-
दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
ऩि	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	-	सा	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	ऽ
रेसा	रे	गरे	सा	-	-	-	सा	-	-	सा	-	-	-
दिर	दा	दिर	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	ऩि	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	ऩि	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
रे	गरे	रे	सा	-	-	-	सा	-	-	ऩि	-	-	-
दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
ऩि	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	-	सा	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	ऽ

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
रेसा	रे	गरे	सा	-	-	-	सा	-	-	सा	-	-	-
दिर	दा	दिर	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
रे	-	-	सा	-	-	-	रे	गरे	रे	ऩि	ऩि	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	दिर	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ

शेष अन्तरे इसी धुन में बजाए जाएंगे।

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 14

ख) 12

ग) 6

घ) 10

9.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?

क) गायन, नृत्य

ख) गायन, वादन, नृत्य

ग) वादन, नृत्य

घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत

9.3 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत किस राज्य का लोक गीत है?

क) हरियाणा

ख) पंजाब

ग) हिमाचल प्रदेश

घ) जम्मू कश्मीर

9.4 ‘काहे रा बो तेरा दीया लखीया’ लोक गीत किस देवता से संबंधित है?

क) राम

ख) कृष्ण

ग) सीता

घ) शिव

9.5 ‘शिवा मेरे महादेवा-महादेवा’ लोक गीत किस देवता से संबंधित है?

क) शिव

ख) कृष्ण

ग) सीता

घ) राम

9.6 ‘शिवा मेरे महादेवा-महादेवा’ लोक गीत किस राग पर आधारित प्रतीत होता है।

क) यमन

ख) देस

ग) बहार

घ) काफी

9.4 सारांश

भगवान शिव के संबंधित यह लोकप्रिय तथा मधुर लोकगीत हैं जो कहरवा तथा दीपचंदी ताल, 08 तथा 14 मात्रा, में गाये जाते हैं। इसमें शिव-स्तुति के लिए सोने-चाँदी का दीपक प्रज्वलित करने का वर्णन है। शिवजी द्वारा अनेक तत्वों,

वासुकि नाग, ब्रजशिला, एवं पृथ्वी को उत्पन्न कर सृष्टि की आरम्भिक रचना का वर्णन है। इनकी लय मध्य है। हिमाचल प्रदेश के चंबा के इस लोकगीत को पारंपरिक लोक वाद्यों ढोल, नगाड़ा आदि के साथ गाया बजाया जाता है।

9.5 शब्दावली

- नौंई - नई
- फुलणु - फूल
- जिनी - जिसने
- गिठ-मिठलू - छोटे
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: क)

9.2 उत्तर: ख)

9.3 उत्तर: ग)

9.4 उत्तर: घ)

9.5 उत्तर: क)

9.6 उत्तर: ख)

9.7 संदर्भ

डॉ. विनय कुमार, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

सुनील राणा, गुआड़, गरोला, भरमौर, जिला चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

निर्मला देवी, लंघेई, साहो, चम्बा से से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2009). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

9.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक लोकगीत की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 2. किसी एक लोक गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 3. किसी एक लोक धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. किसी एक लोकधुन की स्वरलिपि लिखिए।

इकाई-10
लोक गीत-लोक धुन 'धुडु नचया' व 'आ सामियाँ'

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य तथा परिणाम
10.3	लोक गीत 'धुडु नचया' व 'आ सामियाँ'
10.3.1	लोक गीत 'धुडु नचया' का परिचय
10.3.2	लोक गीत 'धुडु नचया' के बोल
10.3.3	लोक गीत 'धुडु नचया' की स्वरलिपि
10.3.4	लोक धुन 'धुडु नचया'
10.3.5	लोक गीत 'आ सामियाँ'का परिचय
10.3.6	लोक गीत 'आ सामियाँ'के बोल
10.3.7	लोक गीत 'आ सामियाँ'की स्वरलिपि
10.3.8	लोक गीत 'आ सामियाँ' की स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	सारांश
10.5	शब्दावली
10.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7	संदर्भ
10.8	अनुशंसित पठन
10.9	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लोक संगीत साधारण शब्दों में वह संगीत है जो किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखता है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न भाषाएं, बोलियाँ बोली जाती हैं। इन्हीं बोलियों में जो गीत प्रचलित होते हैं उन्हें लोक गीत कहते हैं। लोक संगीत मानव मन की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। लोक रूचि के अनुसार इसमें समय-समय पर सृजन-विघटन की प्रक्रिया चलती रहती है। लोक जीवन में लोक संगीत की अनवरत धारा आदिकाल से ही प्रवाह मान है। मनुष्य अपने आरंभिक समय से ही समुहों में जीवन यापन करता आ रहा है। इस समुह में किसी एक व्यक्ति द्धारा प्राकृतिक दृश्यों, सुन्दर वस्तुओं, और छवियों को गुन-गुना कर लोक संगीत का सृजन होता है अन्य लोगों द्धारा इस लोक संगीत को पुनरावृति की संज्ञा मिलती है फिर ये संगीत सामाजिक रूप से लोक संगीत का रूप प्राप्त करता है। लोक-संगीत समय और स्थान की सीमाओं को लाँघकर अनादि परंपराओ को वर्तमान में जीवित बनाये रखने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। बदलते समय-प्रवाह से लोक-संगीत का स्वरूप अवश्य बदलता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी 'धुडु नचया' व 'आ सामियाँ'लोक गीत/लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा तथा गा सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- 'धुडु नचया' व 'आ सामियाँ' लोक गीत / लोक धुन के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- 'धुडु नचया' व 'आ सामियाँ' लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- 'धुडु नचया' व 'आ सामियाँ' लोक गीत / लोक धुन को बजाने तथा गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन/गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी लोक गीत/लोक धुन के वादन/गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- 'धुड़ु नचया' व 'आ सामियाँ' लोक गीत / लोक धुन को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- 'धुड़ु नचया' व 'आ सामियाँ' लोक गीत / लोक धुन को बजाने/गाने में सक्षम होंगे।
- लोक गीत / लोक धुन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

10.3 'धुड़ु नचया' लोक गीत/लोक धुन

10.3.1 लोक गीत 'धुड़ु नचया' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इस गीत में भगवान भोले नाथ द्वारा अपनी जटाओं को खोल कर नृत्य किये जाने की बात कही गई है। गंगा और गोरां के बीच हुए संवाद व वार्तालाप का वर्णन किया गया है, कि किस प्रकार दोनों पानी लेने के लिए जाती हैं और गौरा गंगा से प्रश्न करती है, कि तू मेरी क्या लगती है, उत्तर में गंगा गौरां को उसकी सौकंण बताती है। यह लोक भजन राग पहाड़ी के स्वरों में रचित है व चम्बा जनपद का लोकप्रिय भजन है। राग पहाड़ी, बिलावल थाट का राग है। यह औढव-औढव जाति का राग है। इसका वादी स्वर प संवारी स्वर स है। इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। यह ताल दीपचन्दी में निबद्धे है।

10.3.2 लोक गीत 'धुड़ु नचया' के बोल

धुड़ु नचया जटा वो खलारी ओ

हो नच धुड़ुआ बाजे तेरे बाजे हो

धुड़ु नचया जटा वो खलारी ओ-

हो गंगा गोरा पाणिये जो गईयाँ हो

गोरा पूछदी तू लगदी क्या मेरी हो

हो गंगा बोलदी मैं सौंकण तेरी ओ

हो गंगा गौरां सरोसर लड़ी हो-

धुडु नचया जटा हो खलारी ओ-

धुडु नचया जटा वो खलारी ओ

हो टुटे हार चौरासी लड़ी हो-2

हो गंगा लई गया भगीरथ चेला हो-

धुडु रेई गेया केलम केला हो

हो गौरां पेटे पीड़ मचाई हो

धुडु नचया जटा वो खलारी ओ

धुडु नचया जटा वो खलारी ओ

हो धारां-धारां ते बूटी मंगाई हो

इयां शिवजी ए पीड गुवांई हो

हो नच धुडुआ बाजे तेरे बाजे हो

धुडु नचया जटां वो खलारी ओ।

धुडु नचया जटा वो खलारी ओ

10.3.3 लोक गीत 'धुडु नचया' की स्वरलिपि

ताल: दीपचंदी **लय: मध्य**

स्थाई

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ग	गरे	सध	प़	प़	ग	ग	गरे	रे	गध	प	पम	ग	रे
धु	डुऽ	नच	या	ऽ	ज	टा	बोऽ	ख	लारी	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध़	प़	प़	गग	गरे	ग	ध	-	प	पम	ग	रे
न	चऽ	धुडु	आ	ऽ	बाजे	तेंरे	बा	जे	ऽ	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	गप	गरे	-	सा	-	-	-
धु	डुऽ	नच	या	ऽ	ज	टा	बो	खला	रीऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध	प़	प़	ग	ग	गरे	रे	गध	प	पम	ग	रे
धु	डुऽ	नच	या	ऽ	ज	टा	बोऽ	ख	लारी	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध़	प़	प़	गग	गरे	ग	ध	-	प	पम	ग	रे
न	चऽ	धुडु	आ	ऽ	बाजे	तेंरे	बा	जे	ऽ	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	गप	गरे	-	सा	-	-	-
धु	डुऽ	नच	या	ऽ	ज	टा	बो	खला	रीऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ग	गरे	सध़	प़	प़	गग	गरे	रे	गध	प	प	पम	ग	रे
होगं	गाऽ	गौऽ	रा	ऽ	पाणि	एऽ	जो	गई	या	हो	-	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	गरे	रेग	गध	प	पम	ग	रे
होगौ	राऽ	पूछ	दी	ऽ	तू	ल	गदी	क्या	मेरी	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	गरे	रे	गधा	प	पम	ग	रे
होगं	गाऽ	बोल	दी	ऽ	मैं	सौं	कण	ते	रीऽ	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	ग	ग	प	ग	रे	सा	सा
गं	गाऽ	बोल	दी	ऽ	मैं	सौं	ऽ	क	ण	ते	री	हो	ऽ
ग	गरे	सध	प़	प़	ग	ग	गरे	रे	गध	प	पम	ग	रे
धु	डुऽ	नच	या	ऽ	ज	टा	बोऽ	ख	लारी	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध़	प़	प़	गग	गरे	ग	ध	-	प	पम	ग	रे
न	चऽ	धुडु	आ	ऽ	बाजे	तेरे	बा	जे	ऽ	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	गप	गरे	-	सा	-	-	-
धु	डुऽ	नच	या	ऽ	ज	टा	बो	खला	रीऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अंतरे भी इसी धुन में गाए जाएँगें।

10.3.4 लोक धुन 'धुडु नचया'

ताल: दीपचंदी **लय: मध्य**

स्थाई

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ग	गरे	सध	प़	प़	ग	ग	गरे	रे	गध	प	पम	ग	रे
दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा
ग	गरे	सध़	प़	प़	गग	गरे	ग	ध	-	प	पम	ग	रे
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	ऽ	दा	दिर	दा	रा
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	गप	गरे	-	सा	-	-	-
दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दि	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
ग	गरे	सध	प़	प़	ग	ग	गरे	रे	गध	प	पम	ग	रे
दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा
ग	गरे	सध़	प़	प़	गग	गरे	ग	ध	-	प	पम	ग	रे
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	ऽ	दा	दिर	दा	रा
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	गप	गरे	-	सा	-	-	-
दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दि	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ग	गरे	सध़	प़	प़	गग	गरे	रे	गध	प	प	पम	ग	रे
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	गरे	रेग	गध	प	पम	ग	रे
दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दिर	रा	दिर	दा	रा
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	गरे	रे	गध	प	पम	ग	रे
दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	रा	दिर	दा	रा
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	ग	ग	प	ग	रे	सा	सा
दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
ग	गरे	सध	प़	प़	ग	ग	गरे	रे	गध	प	पम	ग	रे
दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा
ग	गरे	सध़	प़	प़	गग	गरे	ग	ध	-	प	पम	ग	रे
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	ऽ	दा	दिर	दा	रा
ग	गरे	सध़	प़	प़	ग	ग	गप	गरे	-	सा	-	-	-
दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दिर	दि	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अंतरे भी इसी धुन में बजाए जाएँगें।

10.3.5 लोक गीत 'आ सामियाँ' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। पारम्परिक यह शैव परम्परा का अति प्राचीन भजन है। यह भजन गद्दी समुदाय द्वारा ''नवाला'' उत्सव में भगवान शिवजी के आवाहन के लिए गाया जाता है। इन पंक्तियों में भगवान शिवजी के प्रति आभार व्यक्त किया गया है और आभार स्वरूप भगवान के आगे प्रार्थना की जाती है कि हे स्वामी हम आपके लिए इस नवाला उत्सव का आयोजन कर रहे हैं कृपा करके आकर स्थान ग्रहण करें, भूखों को अन्न दें और जो लोग अंधे हैं उनको आप आँखों की रोशनी प्रदान करने की कृपा करें। यह भजन राग पहाड़ी में स्वरबद्ध है। यह राग औढव-औढव जाति का राग है। इस भजन को ताल दीपचन्दी में ताल वद्ध किया गया है।

10.3.6 लोक गीत 'आ सामियाँ' के बोल

आ सामियाँ आ बै बो सामियाँ

लै बो सामि अपने ओधारो

भोलेया सामियाँ।

अस्सी वो कोठे तेरा मण्डल सजे

लै बो सामि अपणे ओधारो

भोलेया सामियाँ।

चोले ओ माऐं तेरा मण्डल सजे

लै बो सामि अपणे ओधारो

भोलेया सामियाँ।

अक अरज मेरी होर होणै

भुखयाँ जो भोजन दीएं

भोलेया सामियाँ।

अंक अरज मेरी होर होणै

अंधयां जो लोचण लाएं

भोलेया बो सामियाँ।

10.3.7 लोक गीत 'आ सामियाँ' की स्वरलिपि

ताल: दीपचन्दी **लय: मध्य**

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ग	ग	ग	ग	गरे	प	प	ग	ग	रे	रे	ग	रे	स
आ	ऽ	सा	मि	याऽ	आ	ऽ	बै	बो	सा	मि	याँ	ऽ	आ
सरेग	सा	सा	सा	प	सा	ऽ	साग	ग	ऐरे	सरे	गप	गरे	सा
लैवोऽ	सा	मि	अ	प	णे	ऽ	ओधा	ऽ	रोऽ	भोले	याऽ	सामि	याँ
ग	ग	ग	ग	गरे	प	प	ग	ग	रे	रे	ग	रे	स
आ	ऽ	सा	मि	याऽ	आ	ऽ	बै	बो	सा	मि	याँ	ऽ	आ
सरेग	सा	सा	सा	प	सा	ऽ	साग	ग	ऐरे	सरे	गप	गरे	सा
लैवोऽ	सा	मि	अ	प	णे	ऽ	ओधा	ऽ	रोऽ	भोले	याऽ	सामि	याँ

शेष अन्तरे इसी धुन में गाए जाएंगे।

10.3.8 लोक धुन ‘‘आ सामियाँ’ की स्वरलिपि

ताल: दीपचन्दी **लय: मध्य**

वाद्य: सितार

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ग	ग	ग	ग	गरे	प	प	ग	ग	रे	रे	ग	रे	स
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा
सरेग	सा	सा	सा	प	सा	ऽ	साग	ग	रेरे	सरे	गप	गरे	सा
दारादा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर
ग	ग	ग	ग	गरे	प	प	ग	ग	रे	रे	ग	रे	स
दा	रा	दा	रा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा
सरेग	सा	सा	सा	प	सा	ऽ	साग	ग	रेरे	सरे	गप	गरे	सा
दारादा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर

शेष अन्तरे इसी धुन में बजाए जाएंगे।

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 14

ख) 12

ग) 6

घ) 10

10.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?

क) गायन, नृत्य

ख) गायन, वादन, नृत्य

ग) वादन, नृत्य

घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत

10.3 'आ सामियाँ' लोक गीत किस राज्य का लोक गीत है?

क) हरियाणा

ख) पंजाब

ग) हिमाचल प्रदेश

घ) जम्मू कश्मीर

10.4 'काहे रा बो तेरा दीया लखीया' लोक गीत किस देवता से संबंधित है?

क) राम

ख) कृष्ण

ग) सीता

घ) शिव

10.5 'आ सामियाँ' लोक गीत किस देवता से संबंधित है?

क) शिव

ख) कृष्ण

ग) सीता

घ) राम

10.6 ‘धुडु नचया’ लोक गीत किस राग पर आधारित प्रतीत होता है।

क) यमन

ख) पहाड़ी

ग) बहार

घ) काफी

10.4 सारांश

भगवान शिव के संबंधित लोकप्रिय तथा मधुर लोकगीत जो दीपचंदी ताल, 14 मात्रा, में गाये तथा बजाए जाते हैं, गीतों में भगवान भोले नाथ द्वारा अपनी जटाओं को खोल कर नृत्य किये जाने की बात कही गई है। गंगा और गोरां के बीच हुए संवाद व वार्तालाप का वर्णन किया गया है। इसमें भगवान भोले नाथ द्वारा अपनी जटाओं को खोल कर नृत्य किये जाने की बात कही गई है। गंगा और गोरां के बीच हुए संवाद व वार्तालाप का वर्णन किया गया है। आभार स्वरूप भगवान के आगे प्रार्थना की जाती है कि हे स्वामी हम आपके लिए इस नवाला उत्सव का आयोजन कर रहे हैं कृपा करके आकर स्थान ग्रहण करें, भूखों को अन्न दें। हिमाचल प्रदेश के चंबा के इन लोकगीत को पारंपरिक लोक वाद्यों ढोल, नगाड़ा आदि के साथ गाया बजाया जाता है।

10.5 शब्दावली

- धुडु - शिव भगवान का नाम
- पाणिये - पानी के लिए
- सौंकण - सौतन
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
-

10.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: क)

10.2 उत्तर: ख)

10.3 उत्तर: ग)

10.4 उत्तर: घ)

10.5 उत्तर: क)

10.6 उत्तर: ख)

10.7 संदर्भ

श्री विक्रम सिंह, गसमोट, भटियात, जचम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

डॉ. विनय कुमार, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

श्री सुनील राणा, गुआड़, गरोला, भरमौर, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2009). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक लोकगीत की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 2. किसी एक लोक गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 3. किसी एक लोक धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. किसी एक लोकधुन की स्वरलिपि लिखिए।

इकाई-11
लोक गीत-लोक धुन ‘प्यारी भोटलिए’ व ‘कपडेयां धोंआ’

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	लोक गीत ‘प्यारी भोटलिए’ व ‘कपडेयां धोंआ’
11.3.1	लोक गीत ‘प्यारी भोटलिए’ का परिचय
11.3.2	लोक गीत ‘प्यारी भोटलिए’ के बोल
11.3.3	लोक गीत ‘प्यारी भोटलिए’ की स्वरलिपि
11.3.4	लोक धुन ‘प्यारी भोटलिए’ की स्वरलिपि
11.3.5	लोक गीत कपडेयां धोंआ’ का परिचय
11.3.6	लोक गीत ‘कपडेयां धोंआ’ के बोल
11.3.7	लोक गीत ‘कपडेयां धोंआ’ की स्वरलिपि
11.3.8	लोक धुन ‘कपडेयां धोंआ’ की स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	सारांश
11.5	शब्दावली
11.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.7	संदर्भ
11.8	अनुशंसित पठन
11.9	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लोक संगीत साधारण शब्दों में वह संगीत है जो किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखता है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न भाषाएं, बोलियाँ बोली जाती हैं। इन्हीं बोलियों में जो गीत प्रचलित होते हैं उन्हें लोक गीत कहते हैं। लोक संगीत मानव मन की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। लोक रूचि के अनुसार इसमें समय-समय पर सृजन-विघटन की प्रक्रिया चलती रहती है। लोक जीवन में लोक संगीत की अनवरत धारा आदिकाल से ही प्रवाह मान है। मनुष्य अपने आरंभिक समय से ही समुहों में जीवन यापन करता आ रहा है। इस समुह में किसी एक व्यक्ति द्धारा प्राकृतिक दृश्यों, सुन्दर वस्तुओं, और छवियों को गुन-गुना कर लोक संगीत का सृजन होता है अन्य लोगों द्धारा इस लोक संगीत को पुनरावृति की संज्ञा मिलती है फिर ये संगीत सामाजिक रूप से लोक संगीत का रूप प्राप्त करता है। लोक-संगीत समय और स्थान की सीमाओं को लाँघकर अनादि परंपराओ को वर्तमान में जीवित बनाये रखने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। बदलते समय-प्रवाह से लोक-संगीत का स्वरूप अवश्य बदलता है। हिमाचल प्रदेश का जिला चम्बा देव-भूमि वाला जनपद है। यहां पर स्थानीय कलाकारों के द्वारा विभिन्न प्रकार के पारम्परिक लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। विशेष बात यह है कि इन लोक गीतों में नृत्य और वादन का अंग भी साथ देखा-सुना जा सकता है। चम्बा जनपद की गौरवमयी लोक संस्कृति को ऊँचा उठाने में चम्बयाली कलाकारों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है यही नहीं आज बदलते परिवेश में संगीत जगत में आधुनिक संगीत का प्रवेश बड़ी तेजी से हुआ है, बाबजूद इसके चम्बा का पारम्परिक संगीत ज्यों का त्यों अपनी प्राचीन प्रकाष्ठा के साथ बना हुआ है। आज भी इस क्षेत्र में चम्बयाली लोक संगीत अपनी चर्म सीमा पर विराजित है। इस क्षेत्र में विभिन्न अनुष्ठानों, विवाह, प्रणय (प्रेम) विरह, एतिहासिक वीर गाथाओं से सम्बन्धित, धार्मिक अनुष्ठानों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। यहां तक कि फसल बुआई व कटाई के समय के भी लोक गीत गाये जाते हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत/लोक धुनों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा तथा गा सकेंगे।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत / लोक धुन के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत / लोक धुन को बजाने तथा गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन/गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी लोक गीत/लोक धुन के वादन/गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत / लोक धुन को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत / लोक धुन को बजाने/गाने में सक्षम होंगे।
- लोक गीत / लोक धुन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

11.3 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत/लोक धुन

11.3.1 लोक गीत 'कपडेयां धोंआ' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इस गीत में नायक-नायिका के विरह की गाथा का वर्णन किया गया है। नायिका अपने नायक के कपड़े धोती हुई बटण को देख कर रोती है। नायक कहता है कि तुम बटण की चिन्ता मत करना चम्बे में चाँदी बहुत है। नायक कहता है कि तेरे साथ मिलना है पर तुम्हारी निशानी क्या है। नायिका उत्तर में पीपल का पेड़ निशानी बताती है। इस पर नायिका चिन्ता व्यक्त करती है और कहती है कि रात को

मिलने मत आना दुश्मनों ने बन्दूकें रखी है। नायक कहता है कि चंचलों दुश्मनों का गम मत करना मेरी बाजुओं में बड़ा जोर है। नायक व्यंग्यात्मक ढंग से कहता है कि लोग काली-काली कहते है लेकिन तू मरूये (एक प्रकार का फूल का पेड़) की डाली है। इस गीत के स्वर राग भीम पलासी की ओर संकेत करते हैं। यह राग काफी थाट जन्य राग है। इस गीत में ताल दीपचन्दी (चाचर) का प्रयोग, मध्य लय के साथ प्रयुक्त हुआ है।

11.3.2 लोक गीत 'कपडेयां धोंआ' के बोल

कपडेयां धोंआ छम-छम रोआं कुन्जुआ

बिच बटण निशानी हो मेरिये जिन्दे

बटणा रा गम न तू करयां चंचलों

चम्बे चाँदी बतेरी हो.....

तिजो कने मिलणा जरूरी चंचलो

तेरी क्या वो निशाणी हो.....

चम्बे रे चौगाने मेरा डेरा कुन्जुआ

बुटा पीपल़ निशानी हो

राती-ओ-बराती मत ओंदा कुन्जुआ

बैरि भरियां बन्दूकां हो मेरीये जिन्दे

बैरियां दा गम मत करैं चंचलो

बाईं जोर बतेरा हो मेरिये जिन्दे.....

लोक ता गलादें काली-काली चंचलो

तू ता मरुये दी डाली हो मेरिये जिन्दे.....।

11.3.3 लोक गीत 'कपडेयां धोंआ' की स्वरलिपि

ताल: दीपचंदी **लय: मध्य**

स्थाई

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
क	प	डेऽ	यां	धोआं	छम	ऽऽ	रोआं	कुंऽ	जुऽ	आ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	मेरि	येऽ	जिंऽ	दे
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
क	प	डेऽ	यां	धोआं	छम	ऽऽ	रोआं	कुंऽ	जुऽ	आ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	मेरि	येऽ	जिंऽ	दे
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
नि	नि	नि	नि	ध	सनी	धप	प	म	प	ग	प	म	म
ब	ट	णा	रा	ग	मऽ	नऽ	तू	क	रेयां	चं	च	लो	ऽ
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	मग	मग	पम	म
च	म्बे	चांऽ	दी	ब	थेऽ	राऽ	ऽऽ	हो	ऽ	मेरि	येऽ	जिंऽ	दे
प़	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	ग	ग	ग	सा
च	म्बे	चाँऽ	दी	ब	बेऽ	वाऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
क	प	डेऽ	यां	धोआं	छम	ऽऽ	रोआं	कुंऽ	जुऽ	आ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	मेरि	येऽ	जिंऽ	दे
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अंतरे भी इसी धुन में गाए जाएँगें।

11.3.4 लोक धुन 'कपडेयां धोंआ' की स्वरलिपि

ताल: दीपचंदी **लय: मध्य**

स्थाई

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा

अन्तरा

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
नि	नि	नि	नि	ध	सनी	धप	प	म	प	ग	प	म	म
दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	मग	मग	पम	म
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा
प़	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	ग	ग	ग	सा
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा

शेष अंतरे भी इसी धुन में बजाए जाएँगें।

11.3.5 लोक गीत 'आ सामियाँ' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। प्रस्तुत प्रणय लोक गीत में प्रेमी व प्रेयसी की वार्ता का वर्णन दिया है। नायक भोटली नामक प्रेयसी से कहता है कि तेरे बिना ये (मुलख) दुनियाँ कुछ भी नहीं है। इस पर भोटली अपने रघु नामक नायक से कहती है कि तू परदेश चला जाएगा। फिर रघु नामक नायक से पहाड़ पर बंगला बनाने की बात कही है। उत्तर में रघु बंगले को शीशे लगाने की बात करता है। नायिका कहती है कि मैं नंगे पैर पहाड़ कैसे चढ़ूं। रघु कहता है कि मैं तुझे नई चप्पल ले दूंगा। अंत में नायिका कहती है कि मैंने तेरे (रघु) प्यार में अपने माता-पिता भी छोड़ दिये है। रघु नायक कहता है कि तेरे बिना यह दुनियाँ कुछ भी नहीं है। इस गीत में चौदह मात्रा की दीपचन्दी ताल (चाचर) का प्रयोग हुआ है। इसमें मध्य लय प्रयुक्त हुई है।

11.3.6 लोक गीत 'प्यारी भोटलिए' के बोल

प्यारी भोटलिए तुद बिन मुलख नमाणा हो

रघु गाडा हो चली जाणा दूर परदेशा हो

प्यारी भोटलिए . . . . .

रघु गाडा हो जोता पुर बंगलु पुआणा हो

प्यारी भोटलिए बंगलु जो शीशे लुआणे हो

रघु गाडा हो नंगे पैरे जोत कियां लाणा

प्यारी भोटलिए तिजो नोई चपली लेई देला हो

रघु गाडा हो तेरे पीछे छडे अम्मा बापु हो

प्यारी भोटलिए तुद बिन मुलख नमाणा हो।

11.3.7 लोक गीत 'प्यारी भोटलिए' की स्वरलिपि

ताल: दीपचन्दी **लय: मध्य**

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
												ग	गरे
												प्या	ऽरी
सध़	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	सेध़	सरे	गे	रेग
भोऽ	ट	लि	ये	ऽ	ऽ	ऽऽ	तुद	वि	नऽ	मुल	सू	न	माऽ
रे	स	रे											
बाऽ	हो	ऽ											
												ग	गरे
												प्या	ऽरी
सध़	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	सेध़	सरे	गे	रेग
भोऽ	ट	लि	ये	ऽ	ऽ	ऽऽ	तुद	वि	नऽ	मुल	सू	न	माऽ
रे	स	रे											
बाऽ	हो	ऽ											

अन्तरा

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
प	पम	ग	ग	ग	मे	प	रे	रे	ग	रे	ग	रे	-
र	घुऽ	गा	ऽ	डा	ऽ	हो	चलि	वो	जाऽ	णाऽ	प	र	देऽ
गरे	सा	सा											
साऽ	हो	ऽ											
प	पम	ग	ग	ग	मे	प	रे	रे	ग	रे	ग	रे	-
र	घुऽ	गा	ऽ	डा	ऽ	हो	चलि	वो	जाऽ	णाऽ	प	र	देऽ
गरे	सा	सा											
साऽ	हो	ऽ											
												ग	गरे
												प्या	ऽरी
सध़	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	सेध़	सरे	गे	रेग
भोऽ	ट	लि	ये	ऽ	ऽ	ऽऽ	तुद	वि	नऽ	मुल	सू	न	माऽ
रे	स	रे											
बाऽ	हो	ऽ											

शेष अन्तरे इसी धुन में गाए जाएंगे।

11.3.8 लोक धुन 'प्यारी भोटलिए' की स्वरलिपि

ताल: दीपचन्दी **लय: मध्य**

वाद्य: सितार

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
												ग	गरे
												दा	दिर
सध़	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	साध़	सरे	गे	रेग
दिर	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर
रे	स	रे											
दा	रा	दा											
												ग	गरे
												दा	दिर
सध़	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	सेध़	सरे	गे	रेग
दिर	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर
रे	स	रे											
दा	रा	दा											

अंतरा

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
प	पम	ग	ग	ग	मे	प	रे	रे	ग	रे	ग	रे	-
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
गरे	सा	सा											
दिर	दा	रा											
												ग	गरे
												दा	दिर
सध्र	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	साध्र	सरे	गे	रेग
दिर	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर
रे	स	रे											
दा	रा	दा											

शेष अन्तरे इसी धुन में बजाए जाएंगे।

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 14

ख) 12

ग) 6

घ) 10

11.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?

क) गायन, नृत्य

ख) गायन, वादन, नृत्य

ग) वादन, नृत्य

घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत

11.3 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत किस राज्य का लोक गीत है?

क) हरियाणा

ख) पंजाब

ग) हिमाचल प्रदेश

घ) जम्मू कश्मीर

11.4 'प्यारी भोटलिए' लोक गीत किस देवता से संबंधित है?

क) राम

ख) कृष्ण

ग) सीता

घ) किसी से नहीं

11.5 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत किस रस का गीत है?

क) करूण

ख) शांत

ग) चंचल

घ) वीर

11.6 ‘कपडेयां धोंआ’ लोक गीत किस राग पर आधारित प्रतीत होता है।

क) यमन

ख) भीमपलासी

ग) पहाड़ी

घ) काफी

11.4 सारांश

‘कपडेयां धोंआ’ लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इस गीत में नायक-नायिका के विरह की गाथा का वर्णन किया गया है। इस गीत के स्वर राग भीमपलासी के हैं। इस गीत में ताल दीपचन्दी (चाचर) का प्रयोग, मध्य लय के साथ प्रयुक्त हुआ है। ‘आ सामियाँ’ प्रणय लोक गीत में प्रेमी व प्रेयसी की वार्ता का वर्णन दिया है। नायक भोटली नामक प्रेयसी से कहता है कि तेरे बिना ये (मुलख) दुनियाँ कुछ भी नहीं है। इस पर भोटली अपने रघु नामक नायक से कहती है कि तू परदेश चला जाएगा। इस गीत में चौदह मात्रा की दीपचन्दी ताल (चाचर) का प्रयोग हुआ है। इसमें मध्य लय प्रयुक्त हुई है। आज बदलते परिवेश में संगीत जगत में आधुनिक संगीत का प्रवेश बड़ी तेजी से हुआ है, बाबजूद इसके चम्बा का पारम्परिक संगीत ज्यों का त्यों अपनी प्राचीन प्रकाष्ठा के साथ बना हुआ है। आज भी इस क्षेत्र में चम्बयाली लोक संगीत अपनी चर्म सीमा पर विराजित है। इस क्षेत्र में विभिन्न अनुष्ठानों, विवाह, प्रणय (प्रेम) विरह, एतिहासिक वीर गाथाओं से सम्बन्धित, धार्मिक अनुष्ठानों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। यहां तक कि फसल बुआई व कटाई के समय के भी लोक गीत गाये जाते हैं। इस लोकगीतों को पारंपरिक लोक वाद्यों ढोल, नगाड़ा आदि के साथ गाया बजाया जाता है।

11.5 शब्दावली

- कुन्जुआ - कुंजू (नायक का नाम)
- चंचलो - नायिका का नाम

- बिच - बीच में
- बटण - बटन
- करयां - करना
- कने - कैसे
- चौगाने - चंबा के प्रसिद्ध मैदान का नाम
- भोटली - नायिका का नाम
- मुलख - दुनियाँ
- लय: वादन/गायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

11.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: क)

11.2 उत्तर: ख)

11.3 उत्तर: ग)

11.4 उत्तर: घ)

11.5 उत्तर: क)

11.6 उत्तर: ख)

11.7 संदर्भ

सुभाष सिंह, गागल, भरमौर, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

डॉ. विनय कुमार, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

अजीत भट्ट, धड़ोग, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2009). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक लोकगीत की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 2. किसी एक लोक गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 3. किसी एक लोक धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. किसी एक लोकधुन की स्वरलिपि लिखिए।

इकाई-12
लोक गीत-लोक धुन 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए'

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य तथा परिणाम
12.3	लोक गीत 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए'
12.3.1	लोक गीत 'कौन कहता है' का परिचय
12.3.2	लोक गीत 'कौन कहता है' के बोल
12.3.3	लोक गीत 'कौन कहता है' की स्वरलिपि
12.3.4	लोक धुन 'कौन कहता है' की स्वरलिपि
12.3.5	लोक गीत 'मैया तेरे कुन्डलुए' का परिचय
12.3.6	लोक गीत 'मैया तेरे कुन्डलुए' के बोल
12.3.7	लोक गीत 'मैया तेरे कुन्डलुए' की स्वरलिपि
12.3.8	लोक धुन 'मैया तेरे कुन्डलुए' की स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	सारांश
12.5	शब्दावली
12.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.7	संदर्भ
12.8	अनुशंसित पठन
12.9	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लोक संगीत साधारण शब्दों में वह संगीत है जो किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखता है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न भाषाएं, बोलियाँ बोली जाती हैं। इन्हीं बोलियों में जो गीत प्रचलित होते हैं उन्हें लोक गीत कहते हैं। लोक संगीत मानव मन की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। लोक रूचि के अनुसार इसमें समय-समय पर सृजन-विघटन की प्रक्रिया चलती रहती है। लोक जीवन में लोक संगीत की अनवरत धारा आदिकाल से ही प्रवाह मान है। मनुष्य अपने आरंभिक समय से ही समुहों में जीवन यापन करता आ रहा है। इस समुह में किसी एक व्यक्ति द्धारा प्राकृतिक दृश्यों, सुन्दर वस्तुओं, और छवियों को गुन-गुना कर लोक संगीत का सृजन होता है अन्य लोगों द्धारा इस लोक संगीत को पुनरावृति की संज्ञा मिलती है फिर ये संगीत सामाजिक रूप से लोक संगीत का रूप प्राप्त करता है। लोक-संगीत समय और स्थान की सीमाओं को लाँघकर अनादि परंपराओ को वर्तमान में जीवित बनाये रखने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। बदलते समय-प्रवाह से लोक-संगीत का स्वरूप अवश्य बदलता है। हिमाचल प्रदेश देव-भूमि वाला राज्य है। यहां पर स्थानीय कलाकारों के द्वारा विभिन्न प्रकार के पारम्परिक लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। विशेष बात यह है कि इन लोक गीतों में नृत्य और वादन का अंग भी साथ देखा-सुना जा सकता है। गौरवमयी लोक संस्कृति को ऊँचा उठाने में कलाकारों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है यही नहीं आज बदलते परिवेश में संगीत जगत में आधुनिक संगीत का प्रवेश बड़ी तेजी से हुआ है, बाबजूद इसके पारम्परिक संगीत ज्यों का त्यों अपनी प्राचीन प्रकाष्ठा के साथ बना हुआ है। आज भी इस क्षेत्र में लोक संगीत अपनी चर्म सीमा पर विराजित है। इस क्षेत्र में विभिन्न अनुष्ठानों, विवाह, प्रणय (प्रेम) विरह, एतिहासिक वीर गाथाओं से सम्बन्धित, धार्मिक अनुष्ठानों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए' भजन लोक गीत/लोक धुनों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा तथा गा सकेंगे।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए' धार्मिक लोक गीत / लोक धुन के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए' धार्मिक लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए' धार्मिक लोक गीत / लोक धुन को बजाने तथा गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन/गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी धार्मिक लोक गीत/लोक धुन के वादन/गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए' धार्मिक लोक गीत/लोक धुन को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए' धार्मिक लोक गीत/लोक धुन को बजाने/गाने में सक्षम होंगे।
- लोक गीत / लोक धुन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

12.3 धार्मिक गीत/ धार्मिक गीत की धुन 'कौन कहता है' तथा 'मैया तेरे कुन्डलुए'

आगामी पृष्ठों में कौन कहता है भगवान् आते नहीं तथा मैया तेरे कुन्डलुए- कुन्डलुए बाल धार्मिक लोक गीतों का वर्णन किया गया है।

12.3.1 धार्मिक गीत 'कौन कहता है' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश का एक प्रसिद्ध धार्मिक गीत है। धार्मिक कथाओं में भजनों की एक विशेषता यह रहती है कि जिस भगवान् से संबंधित पुराण का आयोजन होता है उसमें उसी भगवान् के भजनों की महत्ता रहती है। श्रीमद् भागवत् महापुराण में भगवान् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं, कृष्ण सम्बन्धी प्रेम प्रसंग व उपदेशात्मक प्रसंग होते हैं। निम्नलिखित भजन श्रीमद् भागवत् महापुराण में गाया और बजाया जाता है। कथावाचक तथा संगीत कलाकार इस भजन को अकसर भागवत् की कथा में गुनगुनाते हैं।

12.3.2 धार्मिक गीत 'कौन कहता है' के बोल

स्थाई

अच्चुतम केशवं कृष्ण दामोदरम

राम नारायणम जानकी बल्ल्भम।

अन्तरा

कौन कहता है भगवान् आते नहीं,

तुम मीरा के जैसे बुलाते नहीं।।

कौन कहता है भगवान् खाते नहीं,

बेर शबरी के जैसे खिलाते नहीं।।

कौन कहता है भगवान् सोते नहीं,

मां यशोदा के जैसे सुलाते नहीं।।

12.3.3 धार्मिक गीत 'कौन कहता है' की स्वरलिपि

ताल: कहरवा **लय: द्रुत**

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8
						सा	रे
						अच्	चु
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
त	म	के	श	व	म	कृ	ष्ण
रे	-	रे	मग	रे	-	सा	नि़
दा	ऽ	मो	दऽ	रं	ऽ	रा	म
ध़	-	ध	ध	रे	रे	रे	रे
ना	ऽ	रा	य	ण	म	जा	न
ग	रे	सा	नि़	सा	सा	सा	रे
की	ऽ	व	ल्ल	भ	म	अच्	चु
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
त	म	के	श	व	म	कृ	ष्ण
रे	-	रे	मग	रे	-	सा	नि़
दा	ऽ	मो	दऽ	रं	ऽ	रा	म

1	2	3	4	5	6	7	8
ध़	-	ध	ध	रे	रे	रे	रे
ना	ऽ	रा	य	ण	म	जा	न
ग	रे	सा	ऩि	सा	सा		
की	ऽ	व	ल्ल	भ	म		

अन्तरा

1	2	3	4	5	6	7	8
						सा	रे
						कौ	न
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
क	ह	ता	है	भ	ग	वा	न
रे	-	रे	मग	रे	-	सा	रे
आ	ऽ	ते	नऽ	हीं	ऽ	कौ	न
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
क	ह	ता	है	भ	ग	वा	न
रे	-	रे	मग	रे	-	सा	ऩि
आ	ऽ	ते	नऽ	हीं	ऽ	तु	म

1	2	3	4	5	6	7	8
ध़	-	ध	ध	रे	रे	रे	रे
मी	ऽ	रा	के	जै	ऽ	से	बु
ग	रे	सा	ऩि	सा	सा		
ला	ऽ	ते	न	हीं	ऽ		
						सा	रे
						अच्	चु
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
त	म	के	श	व	म	कृ	ष्ण
रे	-	रे	मग	रे	-	सा	ऩि
दा	ऽ	मो	दऽ	रं	ऽ	रा	म
ध़	-	ध	ध	रे	रे	रे	रे
ना	ऽ	रा	य	ण	म	जा	न
ग	रे	सा	ऩि	सा	सा		
की	ऽ	व	ल्ल	भ	म		

शेष अंतरे भी इसी धुन में गाए जाएँगें।

12.3.4 लोक धुन 'कपडेयां धोंआ' की स्वरलिपि

ताल: कहरवा **लय: द्रुत**

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8
						सा	रे
						दा	रा
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
रे	-	रे	मग	रे	-	सा	ऩि
दा	ऽ	दा	दिर	दा	ऽ	दा	रा
ध़	-	ध	ध	रे	रे	रे	रे
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा
ग	रे	सा	ऩि	सा	सा	सा	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
रे	-	रे	मग	रे	-	सा	ऩि
दा	ऽ	दा	दिर	दा	ऽ	दा	रा

1	2	3	4	5	6	7	8
ध़	-	ध	ध	रे	रे	रे	रे
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा
ग	रे	सा	ऩि	सा	सा	सा	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा

अन्तरा

1	2	3	4	5	6	7	8
						सा	रे
						दा	रा
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
रे	-	रे	मग	रे	-	सा	रे
दा	ऽ	दा	दिर	दा	ऽ	दा	रा
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा

1	2	3	4	5	6	7	8
रे	-	रे	मग	रे	-	सा	रे
दा	ऽ	दा	दिर	दा	ऽ	दा	रा
ग	ग	ग	म	ग	रे		
दा	रा	दा	रा	दा	रा		
						सा	रे
						दा	रा
ग	ग	ग	म	ग	रे	सा	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
रे	-	रे	मग	रे	-	सा	ऩि
दा	ऽ	दा	दिर	दा	ऽ	दा	रा
ध़	-	ध	ध	रे	रे	रे	रे
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा		
ग	रे	सा	ऩि	सा	सा		

शेष अंतरे भी इसी धुन में बजाए जाएँगें।

12.3.5 लोक गीत 'मैया तेरे कुन्डलुए' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश का एक प्रसिद्ध धार्मिक गीत है। धार्मिक कथाओं के अन्तर्गत नवरात्रों के पावन अवसर पर कथा का आयोजन किया जाता है। लोगों की धार्मिक मान्यताएं है कि नवरात्रों के हर दिन में शुभ मुहूर्त होता है तथा यह मान्यता शास्त्रोक्त सही भी है। नवरात्रों के अवसरों पर माता के मंदिरों को सजाया जाता है और इस शुभ मुहूर्तों पर देवी भागवत् पुराण का आयोजन होता है। कथाओं में बड़े धूम-धाम के साथ ये आयोजन होता है। कथा प्रसंगों में माता के चरित्र सम्बन्धी तथा माता रानी के श्रृंगार सम्बन्धी चर्चा रहती है। कथावाचक ऐसे भजन का चुनाव करते हैं जो स्थानीय भाषा में तो है ही साथ-साथ उसमें प्रयुक्त शब्द सरल हो। निम्नलिखित भजन कथावाचकों तथा कलाकारों द्वारा गाया व बजाया जाता है और यह भजन सम्पूर्ण हिमाचल में बहुप्रचलित है। छोटे बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक यह भजन प्रचलित है। इस भजन में मैया रानी के श्रृंगार की चर्चा की गई है और बताया गया है कि माता रानी का कौन सा श्रृंगार कैसा प्रतीत होता है। इस गीत में कहरवा ताल का प्रयोग हुआ है। इसमें द्रुत लय प्रयुक्त हुई है।

12.3.6 लोक गीत 'मैया तेरे कुन्डलुए' के बोल

स्थाई

मैया तेरे कुन्डलुए-2 बाल

बिंदिया लाई-लाई सजदी हो।

अन्तरा

1. मैया तेरे माथे दा सिंगार

मुकुटा लाई-लाई सजदी हो।।

2. मैया तेरे हाथों दा सिंगार

चुड़िया लाई-लाई सजदी हो।।

3. मैया तेरे पैरो रा श्रृंगार

पायला लाई-लाई सजदी हो।।

12.3.7 लोक गीत 'मैया तेरे कुन्डलुए' की स्वरलिपि

ताल: कहरवा **लय: द्रुत**

स्थाई

1	2	3	4		5	6	7	8
				|	प	प	ग	ग
				|	मै	या	ते	रे
रे	रे	रे	रे	|	ग	प	ग	रे
कुं	ड	लु	ए	|	कुं	ड	लु	ए
सा	ध़	प़	प़	|	प	प़	ग	ग
बा	ऽ	ऽ	ल	|	बिं	दि	या	ऽ
रे	रे	रे	रे	|	ग	प	ग	रे
ला	ई	ला	ई	|	स	ज	दी	ऽ
सा	-	-	-	|				
हो	ऽ	ऽ	ऽ	|				
				|	प	प	ग	ग
				|	मै	या	ते	रे
रे	रे	रे	रे	|	ग	प	ग	रे
कुं	ड	लु	ए	|	कुं	ड	लु	ए

1	2	3	4	5	6	7	8
सा	ध़	प़	प़	प	प़	ग	ग
बा	ऽ	ऽ	ल	बिं	दि	या	ऽ
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
ला	ई	ला	ई	स	ज	दी	ऽ
सा	-	-	-				
हो	ऽ	ऽ	ऽ				

अन्तरा

1	2	3	4	5	6	7	8
				प	प	प	प
				मै	या	ते	रे
ग	प	प	ध	ध	प	ग	रे
सि	ऽ	रे	ऽ	दा	ऽ	सिं	ऽ
सा	ध़	प़	प़	प	प़	ग	ग
गा	ऽ	ऽ	र	चु	नि	या	ऽ
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
ला	ई	ला	ई	स	ज	दी	ऽ

1	2	3	4	5	6	7	8
सा	-	-	-				
हो	ऽ	ऽ	ऽ				
				प	प	ग	ग
				मै	या	ते	रे
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
कुं	ड	लु	ए	कुं	ड	लु	ए
सा	ध़	प़	प़	प	प़	ग	ग
बा	ऽ	ऽ	ल	बिं	दि	या	ऽ
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
ला	ई	ला	ई	स	ज	दी	ऽ
सा	-	-	-				
हो	ऽ	ऽ	ऽ				

शेष अन्तरे इसी धुन में गाए जाएंगे।

12.3.8 लोक धुन 'मैया तेरे कुन्डलुए' की स्वरलिपि

ताल: कहरवा **लय: द्रुत**

स्थाई

1	2	3	4	5	6	7	8
				प	प	ग	ग
				दा	रा	दा	रा
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
सा	ध़	प़	प़	प	प़	ग	ग
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
सा	-	-	-				
दा	ऽ	ऽ	ऽ				
				प	प	ग	ग
				दा	रा	दा	रा
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा

1	2	3	4	5	6	7	8
सा	ध़	प़	प़	प	प़	ग	ग
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
सा	-	-	-				
दा	ऽ	ऽ	ऽ				

अन्तरा

				प	प	प	प
				दा	रा	दा	रा
ग	प	प	ध	ध	प	ग	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
सा	ध़	प़	प़	प	प़	ग	ग
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा

1	2	3	4	5	6	7	8
सा	-	-	-				
दा	ऽ	ऽ	ऽ				
				प	प	ग	ग
				दा	रा	दा	रा
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
सा	ध़	प़	प़	प	प़	ग	ग
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
रे	रे	रे	रे	ग	प	ग	रे
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
सा	-	-	-				
दा	ऽ	ऽ	ऽ				

शेष अन्तरे इसी धुन में बजाए जाएंगे।

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 8

ख) 12

ग) 6

घ) 10

12.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?

क) गायन, नृत्य

ख) गायन, वादन, नृत्य

ग) वादन, नृत्य

घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत

12.3 'कौन कहता है' गीत प्रकार का गीत है?

क) शास्त्रीय

ख) पॉप

ग) धार्मिक

घ) उप शास्त्रीय

12.4 'मैया तेरे कुन्डलुए' लोक गीत किस देवता से संबंधित है?

क) राम

ख) कृष्ण

ग) सीता

घ) माता

12.5 'कौन कहता है' लोक गीत किस देवता से संबंधित है?

क) कृष्ण

ख) शिव

ग) सीता

घ) राम

12.6 ‘कौन कहता है’ गीत की किस लय में है।

क) मध्य

ख) द्रुत

ग) विलंबित

घ) अति द्रुत

12.4 सारांश

प्रस्तुत गीत हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध धार्मिक गीत हैं। धार्मिक कथाओं में भजनों की एक विशेषता यह रहती है कि जिस भगवान् से संबंधित पुराण का आयोजन होता है उसमें उसी भगवान् के भजनों की महत्ता रहती है। श्रीमद् भागवत् महापुराण में भगवान् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं, कृष्ण सम्बन्धी प्रेम प्रसंग व उपदेशात्मक प्रसंग होते हैं। नवरात्रों के अवसरों पर माता के मंदिरों को सजाया जाता है और इस शुभ मुहूर्तों पर देवी भागवत् पुराण का आयोजन होता है। कथाओं में बड़े धूम-धाम के साथ ये आयोजन होता है। कथा प्रसंगों में माता के चरित्र सम्बन्धी तथा माता रानी के श्रृंगार सम्बन्धी चर्चा रहती है। हिमाचल प्रदेश के इस गीत को पारंपरिक लोक वाद्यों ढोल, नगाड़ा आदि के साथ गाया/बजाया जाता है।

12.5 शब्दावली

- कुन्डलुए - कुन्डल जैसे, घुंघराले
- सजदी - सजी हुई, सुंदर
- पायला - पायल
- दामोदर - कृष्ण भगवान का एक नाम
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

12.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 उत्तर: क)

12.2 उत्तर: ख)

12.3 उत्तर: ग)

12.4 उत्तर: घ)

12.5 उत्तर: क)

12.6 उत्तर: ख)

12.7 संदर्भ

श्री नीलम कुमार, ढांड़ा, शिमला से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2009). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

12.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

12.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक धार्मिक गीत की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 2. किसी एक धार्मिक गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 3. किसी एक धार्मिक गीत पर आधारित धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. किसी एक धार्मिक गीत पर आधारित धुन की स्वरलिपि लिखिए।

13 महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. सितार का वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार चित्र सहित वर्णन करें।

प्रश्न 2. सितार वाद्य को लेकर किस प्रकार बैठा जाता है वर्णन करें।

प्रश्न 3. सितार वाद्य में बाएँ हाथ द्वारा वादन तकनीक के विषय में बताएं।

प्रश्न 4. . तानपूरा वाद्य के अंगों का वर्णन करें। इसके अंगों का विस्तार चित्र सहित वर्णन करें।

प्रश्न 5. तीनताल तथा दादरा ताल को लिखें।

प्रश्न 6. हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले किसी एक मेले पर एक सांगीतिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

प्रश्न 7. हिमाचल प्रदेश में आयोजित होने वाले किसी एक मेले पर एक power point presentation प्रस्तुत करें।

प्रश्न 8. किसी एक लोकगीत को गाकर सुनाइए तथा उसकी की स्वरलिपि को लिखिए।

प्रश्न 9. किसी एक लोक धुन को बजाकर सुनाइए तथा उसकी की स्वरलिपि को लिखिए।

प्रश्न 10 किसी एक धार्मिक लोकगीत को गाकर सुनाइए तथा उसकी की स्वरलिपि को लिखिए।

प्रश्न 11. किसी एक धार्मिक लोक धुन को बजाकर सुनाइए तथा उसकी की स्वरलिपि को लिखिए।